“अवधी के परिप्रेक्ष्य में आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा ‘निशिहर’ के रचना–कर्म का अनुशीलन”

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
लखनऊ के हिन्दी विभाग में
मास्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि
हेतु प्रस्तुत

लघु शोध–प्रबन्ध

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करूणा
ESTABLISHED 1996

शोध–निर्देशिका
डॉ0 नमिता जैसल
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग

शोधार्थी
अभिलाषा
पंजीयन क्रमांक : 1254/19
हिन्दी विभाग

हिन्दी विभाग
भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ–226025
2020

घोषणा–पत्र

मैं, **अभिलाषा** यह घोषणा करती हूँ कि **"अवधी के परिप्रेक्ष्य में आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' के रचना–कर्म का अनुशीलन"** प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध मेरे द्वारा संग्रहित तथ्यों पर आधारित है तथा मास्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत यह लघु शोध–प्रबंध मेरा मौलिक कार्य है। इसे अंशतः या पूर्णतः इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य संस्थान में किसी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है। यह शोध कार्य मैंने **डॉ0 नमिता जैसल,** सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ के निर्देशन व मार्गदर्शन में पूरा किया है।

मैं घोषणा करती हूँ कि इस शोध कार्य को पूरा करने में मैंने विश्वविद्यालय के शोध संबंधित सभी नियमों का पालन किया है। मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि यह शोध कार्य पूर्णतः साहित्यिक चोरी से मुक्त है।

दिनांक : 27/10/2020

अभिलाषा
शोधार्थी

अभिलाषा
पंजीयन क्रमांक : 1254 / 19
हिन्दी विभाग,
भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ

CERTIFICATE

This is to certify that the M.Phil. Dissertation titled **"अवधी के परिप्रेक्ष्य में आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' के रचना–कर्म का अनुशीलन"** submitted by **Ms. Abhilasha** is an original research work and has not been previously submitted in part or full for the award of any other degree or diploma to this or any other university.

The M.Phil. Dissertation submitted to Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow satisfies all the requirements as stipulated in the Master of Philosophy (M.Phil.) Regulations (2016) as amended in 2019 and it is fit for submission and evaluation for the award of the degree of Master of Philosophy of the University.

Date: 27.10.2020

27.10.2020
Supervisor

Head of the Department

आभार

प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में सर्वप्रथम ईश्वर को धन्यवाद। गुरुजनों, परिजनों और मित्रों का सहयोग रहा है, मैं उनके प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करके इस सहयोग में उनके आशीर्वादरूपी महत्ता को सदैव ग्रहण करना चाहती हूँ।

*इस शोधकार्य के लिये प्रेरित व निर्देशित करने वाली परम श्रद्धेय शोध निर्देशिका **डॉ. नमिता जैसल** जी की मैं ऋणी हूँ। इनकी देख–रेख एवं मृदुल व्यवहार के फलस्वरूप मेरी शोध यात्रा बिना किसी बाधा के सतत् चलती रही। इनके द्वारा समय–समय पर मुझे अपने शोध विषयक विचारों को पल्लवित एवं विकसित करने में सहायता मिली है। इस दिशा–निर्देश के लिए मैं उनके प्रति सदैव ऋणी रहुँगी।*

*हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष **डॉ. सर्वेश कुमार सिंह, डॉ. प्रीती राय जी, डॉ. बलजीत श्रीवास्तव जी, डॉ. शिवशंकर यादव जी** ने समय–समय पर मार्गदर्शन किया, साथ ही कार्यालयी–कार्यो में **जीत भईया** के सहयोग की विशेष रूप से आभारी हूँ। मैं बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विष्वविद्यालय व राजकीय पुस्तकालय रायबरेली के अध्यक्षों के प्रति एवं **डॉ. सन्तलाल जी** की बहुत–बहुत आभारी हूँ जिनके द्वारा कोरोना महामारी के समय लघु–शोध सम्बन्धित पुस्तकों–पत्रिकाओं आदि को एकत्रित करने में मुझे विशेष सहायता व मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, जिनके सहयोग के बिना शोधकार्य पूर्ण करने में कठिनाई होती।*

मैं अनुदान आयोग की आभारी हूँ, जिनके द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति के कारण मुझे आर्थिक रूप से मजबूती प्राप्त हुई जिससे मेरा शोधकार्य अनवरत रूप से पूर्ण हो सका।

*मैं अपने पूज्यनीय पिता **श्री गणेश दत्त** एवं स्नेहमयी माता **श्रीमती गीता देवी** एवं छोटे भाई **प्रखर** व **ईशांक**, साथ ही बड़ी बहन **अनामिका** के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने तन, मन, धन से सहयोग एवं प्रेरणा देकर मेरे आत्मविश्वास और मनोबल को बनाये रखा जिससे मैं लघुशोध कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण कर सकी।*

*मैं विशेष रूप से **आशीष अग्निहोत्री, डॉ. कुलदीप द्विवेदी, दयाशंकर भईया, नीरज** की हृदय से आभारी हूँ जिन्होनें समय–समय पर मुझे प्रेरित और प्रोत्साहित करने का कार्य किया।*

*मेरे इस लघु शोधकार्य में सहयोग देने के लिये मित्र **अभिषेक भईया, देवीलाल भईया, गौरव** और शोधार्थी मित्र **रॉक्सी, सोनम, अनीता, हिमांशी, शर्मानन्द** और उन सभी सहृदयी व्यक्ति जो मेरे शोधकार्य में प्रत्यक्ष रूप से सहयोगी रहे हैं। मैं उनके प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करती हूँ।*

अभिलाषा

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अध्याय	विवरण	पेज नं.
	प्रस्तावना	1–4
प्रथम अध्याय	अवधी का सामान्य परिचय एवं विकास यात्रा	5–21
द्वितीय अध्याय	'निशिहर' जी का व्यक्तित्व व कृतित्व व अन्य अवधी रचनाकारों में स्थान	22–34
तृतीय अध्याय	आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' की रचनाओं का परिचयात्मक विवेचन	35–48
चतुर्थ अध्याय	आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' की काव्य–कृतियों का भावपक्ष	49–77
पंचम अध्याय	'निशिहर' जी की रचनाधर्मिता का शिल्प–विधान	78–101
	उपसंहार	102–108
	संदर्भ ग्रंथ सूची	109–111
	साक्षात्कार के अंश	112–120

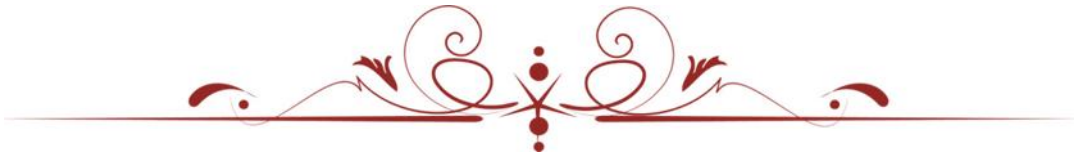

प्रस्तावना

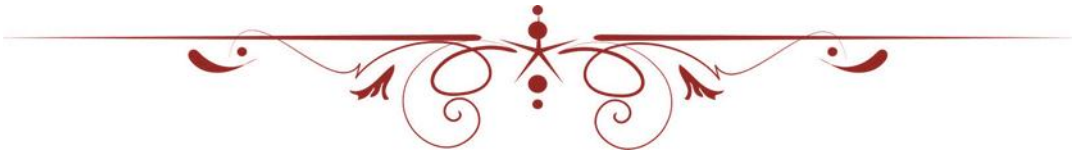

प्रस्तावना

समाज में अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए किसी न किसी भाषा व बोली का प्रयोग किया जाता है। इस भाषा व बोली के द्वारा वह सांस्कृतिक रूप से उर्ध्वगामी भी होता है। भाषा और बोली किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक समृद्धि की परिचायक होती है।

भारतवर्ष में अनेक प्रकार की भाषाएँ और बोलियाँ हैं। जब हम हिन्दी की बात करते हैं तो हिन्दी में अनेक बोलियाँ हैं जिनमें अवधी उत्तर भारत की एक प्रमुख बोली है जो एक बड़े भू–भाग में बोलो जाती है। अवधी भारतवर्ष की अत्यन्त प्राचीन बोली है।

हिन्दी के प्राचीन काव्यों में अवधी बोली का प्राचीन स्वरूप दिखाई पड़ता है। प्राकृत, पैंगलम, कुबलयमाला आदि को पढ़कर स्पष्ट हो जाता है कि आठवीं शताब्दी तक आते–आते यह सामान्य बोलचाल की भाषा बन चुकी थी। 11वों शताब्दी तक अवधी का प्रभाव अनेक कवियों की रचनाओं में दिखाई पड़ने लगा था।

आठवीं शताब्दी से लेकर वर्तमान समय तक अवधी बोलचाल की भाषा के रूप में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने के साथ ही अविरल रूप से हिन्दी साहित्य को समृद्ध कर रही है। मूलभूत रूप से उद्‌भूत अवधी अर्द्धमागधी मैथिली के निकट और प्राकृत से विकसित मानी जाती है। अवधी साहित्य भारत की विरासत है जो विश्व साहित्य के समक्ष खड़ा होता हैं। इसकी सुदीर्घ और गौरवशाली परम्परा में व्यष्टि से लेकर समष्टि तक को आवेशित करने की क्षमता है। अवधी की गरिमा इसकी महत्ता अवध से है। इसकी समृद्धता और इसके विशाल साहित्य सन्दोह में लोकजीवन का जो सुन्दर चित्रण मिलता है, वास्तव में वह अतुलनीय है।

अवध और अवधी का आंतरिक सम्बन्ध सर्वविदित है। उत्तर भारत का परम धार्मिक अंचल प्राचीनकाल से ही अवध क्षेत्र के नाम से जनजीवन और साहित्य में चर्चित रहा है। गंगा, यमुना और सरयू की पवित्र धारा से अभिसिंचित क्षेत्र युग–युग का इतिहास समेटे हुए है।

अवधी साहित्यकारों ने अवधी को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मुल्ला दाउद के चंदायन महाकाव्य से लेकर अवधी की जो धारा चली, उसे जायसी ने पद्‌मावत जैसी रचनाएँ लिखकर अप्रतिम ऊचाईयाँ प्रदान कीं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस जैसा महाकाव्य लिखकर अवधी को विश्वस्तर पर प्रतिष्ठित किया। रामकाव्य के

अतिरिक्त कृष्णकाव्य की रचनाएँ भी अवधी बोली में लिखी गईं। सम्पूर्ण सन्त साहित्य अवधी में लिखा गया है।

साहित्यिक विधाओं का जब प्रवर्तन काल आया तब पद्य साहित्य के साथ–साथ गद्य साहित्य भी अवधी में लिखा गया। समन्वय और सद्भाव को बढ़ाती हुई यह अवधी निरन्तर आगे बढ़ती रही और वर्तमान समय तक आते–आते हिन्दी की समस्त विधाओं में लेखन कार्य प्रारम्भ हुआ। साहित्य के साथ–साथ हिन्दी की अन्य बोलियों की तुलना में अवधी का क्षेत्र सर्वाधिक विकसित है। इसके भाषा–भाषियों की संख्या भी अन्य भाषा–भाषियों की अपेक्षा अधिक है। भोजपुरी से सम्पृक्त होती हुई अवधी भारतीय मूल के प्रवासियों के बीच विशेषतः मारीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, टोबैको आदि देशों में बोली जाती है। अवधी एक ऐसी बोली है जिसके बिना हिन्दी की आत्मा को समझा ही नहीं जा सकता।

आधुनिक समय में अवधी की सुदीर्घ परम्परा को अवधी रचनाकार अबाध रूप से आगे बढ़ा रहे हैं। इन्ही रचनाकारों में एक प्रमुख नाम आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' का है, जिन्होंने अवधी साहित्य को अपनी लेखनी द्वारा आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। 'निशिहर' जी अब तक गद्य एवं पद्य में 26 पुस्तकों का प्रणयन कर चुके हैं, साथ ही अन्य पुस्तकों पर काम चल रहा है। आपने बारह पुस्तकों में हिन्दी भाषा की ठेठ बैसवारी अवधी बोली का प्रयोग किया है। अवधी की आधुनिक रचनाओं में 'निशिहर' जी ने अपनी ऐसी लेखनी चलाई जिससे प्रभावित होकर आपको अनेकों साहित्य–सम्मानों से सम्मानित किया गया, साथ ही दो बार हिन्दी संस्थान द्वारा भी साहित्यिक पुरस्कार प्राप्त हुए। विदेश यात्राएँ भी आपने की। 'निशिहर' जी की रचनाओं का कथ्य व शिल्प दोनों ही विशिष्ट है। लेखन कर्म की कठिन जिम्मेदारी का निर्वाहन करते हुए एक सर्जक के रूप में 'निशिहर' जी ने अवधी साहित्य और विचारधारा के बीच अवस्थित संवेदना को संरक्षित रखते हुए अपने भावों को प्रसूत करते हैं। जब उनका साहित्य जिजीविषा और मुक्ति चेतना से भर उठता है तो अवधी में साहित्य की लोकमंगल की परिप्लावित विचारधारा प्रवाहित होने लगती है। आपकी रचनाओं का मूलभाव ही पूर्ण सहकार और लोकमंगल की कामना करता है, साथ ही एक संवेदनशील रचनाकार होने के नाते वे अपने पूर्ववर्ती कवियों की तरह वर्गीयचेतना और समाज में व्याप्त विद्रूप्ताओं पर करारा प्रहार करते हैं।

जब हमारी संवेदनाएँ दिनोंदिन छीज रही हो, मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा हो और नैतिकता की दीवारें दरक रही हों तब ऐसे समय में आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' अपनी बोली–बानी में इन सबका विरोध करते हैं और आधुनिक युग के तमाम विमर्श इनकी रचनाओं के वर्ण्य–विषय हैं। भाव–पक्ष के साथ ही इनका कलापक्ष अत्यन्त सुदीर्ण है व ठेठ अवधी की लाक्षणिकता और गम्भीर्य भाव–व्यंजना इन्हें अन्य अवधी रचनाकारों से अलग करती है। ठेठ अवधी के शब्दों की सजावट के साथ इनका प्रस्तुतीकरण सब प्रकार से सराहनीय है।

अनेक नवीन उद्‌भावनाओं और सम्भावनाओं को उद्‌भाषित करने के लिए मैने अपने लघुशोध प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय के अतर्गत अवधी का सामान्य परिचय, काल विभाजन और अवधी काव्य प्रवृत्तियों का परिचय दिया है जिसमें हिन्दी की उपभाषा होने के कारण अवधी का साहित्यिक सामाजिक, भाषिक एवं सांस्कृतिक निधि के रूप में विशेष महत्व है। अवधी साहित्य को आरम्भिक काल, मध्यकाल, व आधुनिक काल में विभाजित किया है एवं कालक्रमानुसार अवधी की प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ बदलती रही। इसकी ध्वन्यात्मक और व्याकरणिक विशेषताएँ वैशिष्टय सम्पन्न हैं। वर्तमान समय में अवधी की प्रवृत्तियाँ पूर्णतः बदल गई हैं और हिन्दी कविता की अन्य प्रवृत्तियों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं।

द्वितीय अध्याय में 'निशिहर' जी के व्यक्तित्व, कृतित्व व अवधी रचनाकारों में स्थान शीर्षक के अंतर्गत उनके जन्म के विषय में प्रारम्भिक जीवन व जीवन–संघर्षों, उनकी शिक्षा–दीक्षा, परिवार व पारिवारिक परिस्थितियों के साथ उनकी लेखनी व साहित्य से जड़ाव को बनाये रखने की चर्चा के साथ ही उनके कृतित्व पर भी प्रकाश डाला गया है। विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरस्कारों, सम्मानों की भी विस्तृत जानकारी दी गयी है। पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाओं व यात्राओं की चर्चा के साथ–साथ अवधी साहित्यकारों में 'निशिहर' जो के स्थान का आँकलन किया है।

तृतीय अध्याय में 'निशिहर' जी का परिचयात्मक विवेचन प्रस्तुत किया है। 'निशिहर' जी की हिन्दी भाषा व अवधी बोली में 26 पुस्तकें विभिन्न विधाओं में अब तक प्रकाशित हुई हैं जिनमें प्रथम कृति 'टुकवा' है जो अवधी बोली में लिखी गयी ह। 'बिरवा तरे' निशिहर जी का अवधी गीत संकलन है जो लोकधुन पर आधारित है। 'म्वार नाव आजाद' और 'राना बेनी माधौ' व 'परतन्त्रता नहीं स्वीकार' राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत ग्रन्थ है। 'खुब कमाव खुब

छानौ घ्वाटौ' इनकी मुक्तक रचनाओं का संकलन है जिसमें संस्कार, स्त्री–विमर्श और अहिंसा जैसे विषयों पर लिखा है 'निशिहर' जी ने। अवधी साहित्य में अवधी मुक्तकों की यह पहली पुस्तक है। 'नीकि दिन अइहैं' हाइकु कविताओं का संग्रह है। अवधी साहित्य में इसे अवधी हाइकुओं का प्रथम संग्रह होने का गौरव प्राप्त है। दूसरी ओर 'घुनघुना' जैसी बाल कविता का परिचय देते हुए 'एकउटनि' गज़ल संग्रह पर भी प्रकाश डाला है। 'साथ का पढ़इया' कहानी संग्रह है जिसमें यथार्थवाद के स्वरूप को प्रस्तुत किया है एवं आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' के रचना संसार से परिचित कराने का प्रयास कियाा है।

चतुर्थ अध्याय में 'निशिहर' जी की काव्य–कृतियों के भावपक्ष को प्रस्तुत किया है जिसमें भूख, पीड़ा, संत्रास और विसंगतियों का विरोध जैसे भावों की प्रबलता के साथ उठाया है। ग्राम्य जीवन का अंकन, प्रकृति चित्रण, राष्ट्रप्रेम जैसे विषयों पर भी प्रकाश डाला है व उनके पद्य संग्रहों में सम्मिलित कहानी संग्रहों आदि में स्त्री–विमर्श, अस्पृश्यता, छुआ–छूत, भष्टाचार का विरोध, बेमेल विवाह, लालफीताशाही, संस्कारहीनता, जीवन मूल्य जैसे संवेदनशील मुद्दों पर लिखी 'निशिहर' जी की रचनाओं के भावपक्ष पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

पंचम अध्याय में 'निशिहर' जी की रचनाधर्मिता का शिल्प–विधान शीर्षक में आपकी रचनाओं की भाषाशैली, अलंकार–विधान तथा छन्द–विधान आदि की व्यापक समीक्षा की गई है। इस अध्याय में लाक्षणिक प्रयोगों, लोकोक्तियों, मुहावरों, शब्द योजना आदि की विस्तृत विवेचना की गई है।

संक्षेप में कहना चाहती हूँ कि अवधी के परिप्रेक्ष्य में आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' का रचनाकर्म अवधी को उन्नत बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण और सार्थक कदम है। 'निशिहर' जी ने समाज में फैली अराजकता, अशान्ति और ग्रामीण जनजीवन को अपनी रचनाओं में उकेर कर मानवीय संवेदनाओं का सघन रूप प्रस्तुत किया है। संवेदना और सहानुभूति के स्तर पर वे समाज के सच्चे हितैषी हैं। इसे मैने अपने लघुशोध प्रबन्ध में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

प्रथम अध्याय

अवधी का सामान्य परिचय एवं विकास यात्रा

अवधी हिन्दी की एक उपभाषा अथवा बोली है। जब कोई भाषा वृहद स्तर पर क्षेत्र विशेष में बोली जाती है, तब वह बोली कहलाती है। मेरे अध्ययनानुसार भाषा के सबसे छोटे व सीमित रूप को बोली कहा जाता है। भाषा व बोली शब्द को सामान्यतः लोग एक ही समझते हैं जबकि भाषा का छोटा रूप है बोली। इस प्रकार अवधी हिन्दी भाषा की एक प्रमुख बोली है।

अगर हम बात करें हमारे देश में भाषा और बोली की तो भारत देश में अनेक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि बीते पचास सालों में हमने ढाई सौ के करीब भाषाएँ खो दी है।

भारत में 22 प्रमुख भाषाएँ हैं जो तेरह विभिन्न लिपियों में लिखी गई हैं जिनमें 720 से अधिक बोलियाँ हैं। उनमें से एक अवधी बोली है। अवधी शब्द अवध में ई प्रत्यय लगाने से बना है। अवधाँचल की बोली के रूप में विख्यात अवधी बोली को विशेषतः दो नामों–पूर्वी और कोसली से भी जाना जाता है।

"डॉ. हरदेव बाहरी ने कोसल नाम पर आपत्ति करते हुए लिखा है कि पूर्वी अवधी हिन्दी की महत्वपूर्ण बोली है। पहले अयोध्या प्रदेश 'कोसल' के अर्न्तगत था। वास्तव में कोसल बहुत बड़ा प्रदेश था, जिसकी सीमाओं का ठीक–ठीक पता नहीं चल पाया है। इतना निश्चित है कि कोसल के दो भाग थे। उत्तर कोसल की राजधानी अयोध्या थी। इसलिए अवधी के लिए 'कोसली' नाम देना उपयुक्त नहीं है।"[1]

अवधी की उत्पत्ति के सम्बन्ध में पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध नहीं है, जो कुछ उपलब्ध है उन पर विद्वान एकमत नहीं हैं। "डॉ. अम्बा प्रसाद 'सुमन' ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी और उसकी उप–भाषाओं का स्वरूप' में विचार व्यक्त करते हुए लिखा– कोसल प्रदेश मे मध्य भारतीय आर्य भाषा काल में जो भाषा बोली जाती थी, उसी से अवधी नामक उपभाषा विकसित हुई।"[2] आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अवधी का उद्‌गम नागर अपभ्रंश से माना है–"अपभ्रंश या प्राकृत काल की काव्य भाषा के उदाहरणों में आजकल की भिन्न–भिन्न बोलियों के मुख्य रूपों के बीज या अंकुर दिखा दिये गये हैं। इनमें से ब्रज और अवधी के भेदों पर कुछ विचार करना आवश्यक है क्योंकि हिन्दी काव्य में इन्हीं दोनों का व्यवहार हुआ है।"[3]

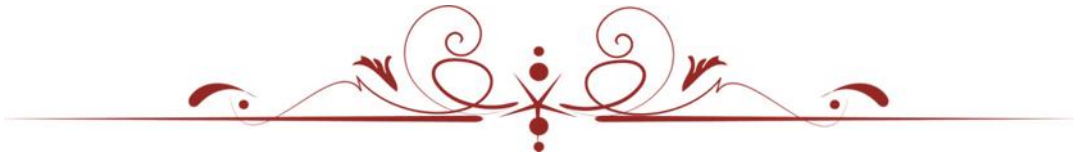

प्रथम अध्याय
अवधी का सामान्य परिचय एवं विकास यात्रा

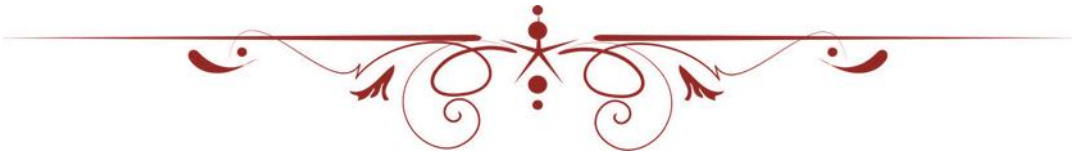

अवध के पश्चिम में जो भाषाएँ एवं बोलियाँ चलन में है, उनको शौरसेनी से उद्‌भूत माना गया है। इसी प्रकार पूर्व में भोजपुरी को मागधी से निष्पन्न माना गया है। इसी आधार पर भौगोलिक दृष्टि से जार्ज ग्रियर्सन ने अवधी बोली की उत्पत्ति अर्द्धमागधी से माना है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि ग्रियर्सन की भाँति ही जगदीश पीयूष ने अपनी पुस्तक में लिखा– "अवधी के पश्चिम में शौरसेनी से उद्‌भूत पश्चिमी हिन्दी है और उसके पूर्व में मागधी की मध्य वर्तिनी भाषा अर्द्धमागधी की संतान है। अर्द्धमागधी पर मागधी का अधिक प्रभाव उसके नाम से ही व्यंजित होता है। उस पर शौरसेनी का भी प्रभाव रहा है किन्तु इतना नहीं कि उसे अर्द्धशौरसेनी की संज्ञा दी जा सकती।" [4]

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अवधी की उत्पत्ति कोसली से माना है। ब्रजभाषा के प्रख्यात कवि श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर' के अनुसार– अवधी शौरसेनी से विकसित हुई है।

विद्वानों के मतानुसार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत भी भाषा व व्याकरण की दृष्टि से ग्राह्य नहीं है। भाषा–विज्ञान की दृष्टि से 'रत्नाकर जी' का मत निराधार है, क्योंकि शौरसेनी से ब्रजभाषा की उत्पत्ति मानी गई है। ब्रज और अवधी दोनों के वाक्य–विन्यास एवं शब्द रचना में बड़ा अन्तर है। ग्रियर्सन और बाबूराम सक्सेना के मत अपेक्षाकृत सुविचारित है। अब अधिकतर विद्वान अर्द्धमागधी से अवधी की उत्पत्ति मानते हैं।

अवधी बोली के क्षेत्र से तात्पर्य है कि अवधी भारत में व भारत के बाहर कहाँ–कहाँ बोली जाती है। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री 'जार्ज ग्रियर्सन' ने अवधी बोली क्षेत्र को दो भागों पश्चिमी हिन्दी व पूर्वी हिन्दी में विभाजित किया है। उन्होंने पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत हिन्दुस्तानी, बाँगरू, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुन्देली को ग्रहण किया तथा पूर्वी हिन्दी के अन्तर्गत अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी आदि बोलियों के अनुसार अवधी को पूर्वी हिन्दी की उपभाषा अथवा बोली माना।

अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में अवधी बोली की भौगोलिक सीमाएँ उत्तर में हिमालय, पूर्व में बिहार, दक्षिण में इलाहाबाद और पश्चिम में कन्नौज तक थी परन्तु वर्तमान समय में अवधी क्षेत्र की भौगोलिक सीमाओं में परिवर्तन देखने को मिलता है जहाँ प्राचीन काल में अवधी बोली का क्षेत्र दिशाओं के द्वारा ज्ञात होता था। आज वहीं उत्तर प्रदेश के जिलों द्वारा इसके क्षेत्र का निर्धारण होता है।

अवधी बोली का अधिकतर क्षेत्र उत्तर प्रदेश के 19 जिलों– सुल्तानपुर, अमेठी, बाराबंकी, प्रतागढ़, प्रयागराज, कौशांबी, फतेहपुर, रायबरेली, उन्नाव, लखनऊ, हरदोई, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, गोंडा, अयोध्या व अम्बेडकर नगर में पूर्णतः बोली जाती है

जबकि सात जिलों– जौनपुर, मिर्जापुर, कानपुर, शाहजहाँपुर, आजमगढ़, सिद्धार्थ नगर, बस्ती और बाँदा के कुछ क्षेत्रों में भी बोली जाती है। साथ ही अवधी बोली हमारे पड़ोसी देश नेपाल, सूरीनाम, मारीशस, फिजी, टुबैकौ, त्रिनिनाद आदि देशों में लाखों की संख्या में लोगों द्वारा बोली जाती है।

"भाषा शास्त्री डॉ. सर 'जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन' के भाषा सर्वेक्षण के अनुसार अवधी बोलने वालों की कुल आबादी 16,15,458 थी जो 1971 की जनगणना में 2,83,99,552 हो गई। मौजूदा समय में अनुमानतः 10 करोड़ से अधिक अवधी बोलने वालों की संख्या है।" [5]

हिन्दी की समस्त बोलियों की तुलना में अवधी का क्षेत्र सर्वाधिक विस्तृत है। अवधी भाषा का प्रसार उत्तर भारत के कोने–काने तक है। नेपाल जैसे छोटे देश ने अवधी को अधिकारिक भाषा का दर्जा प्रदान करके अवधी साहित्यकारों की कलम में जान फूंकने का कार्य किया है। इससे भारत के अवधी भाषी भी काफी उत्साहित हैं। वास्तव में अवध प्रदेश आर्यवर्त का हृदय स्थल है जहाँ भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रादुर्भाव और विकास हुआ है। "अपनी उत्कृष्ट साहित्यिक सम्पदा, धार्मिक श्रेष्ठता तथा भौगोलिक विस्तार के कारण ही वह विभाषा अथवा उपभाषा के पद की अधिकारिणी है।" [6]

अवधी भाषा की रचनात्मक परम्परा बहुत पुरानी है। अनेक विद्वानों ने अवधी का प्रारम्भ काल सातवीं शताब्दी से ही माना है। सातवीं शताब्दी से चली अवधी की यह क्षीण विकास यात्रा आज अपना प्रशस्त रूप धारण कर चुकी है। अनेक उतार–चढ़ाव को पार करती हुई कालान्तर में यह विभिन्न नामों से जानी गई है। "उस भाषा को कोई अपभ्रंश मिश्रित भाषा कहता था, कोई अवहट्ट कहता था। उसमें कई बोलियों का मिश्रण था। किसी–किसी विद्वान ने उसे अवधी की पूर्वजी भाषा की संज्ञा दी है।" [7]

अवधी के विकास क्रम को तीन भागों में विभाजित किया जाता है –

1. प्रारम्भिक युग
2. मध्य युग
3. आधुनिक युग

आठवीं सदी से 1525 ई. तक का काल अवधी का प्रारम्भिक युग माना जाता है। आठवीं सदी से बारहवीं सदी तक इसे विकासशील अवस्था में ही माना गया है। इस काल में अवधी का कोई पूर्ण साहित्यिक विकास न हो सका और जो भी सामग्री उपलब्ध है उसकी प्रवृत्तियाँ न तो साहित्यिक हैं और न ही स्पष्ट। इसलिए इस काल को प्रारम्भिक युग कहना

ही समीचीन होगा। उस समय की उपलब्ध अवधी की महत्वपूर्ण कृतियों में गोरखबानी, परमाल रासो, अमीर खुसरो की रचनाएँ और चन्दायन प्रमुख है। जिसमें अमीर खुसरो की रचनाएँ व चंदायन दोनों ही अवध की प्रौढ रचनाओं में से एक है जो ठेठ अवधी में है। अवधी के प्रारम्भिक कवियों में गुरु गोरखनाथ का नाम भी उल्लेखनीय है। इनका जन्म 11वीं शताब्दी के आस–पास हुआ। इस समय अपभ्रंश से हिन्दी की बोलियों का उदय हो रहा था। "उनकी काव्य–भाषा पर सर्वाधिक प्रभाव अवधो का है, जिसे देखकर यह लगता है कि उन्होंने अवध क्षेत्र में बहुत दिन विचरण किया था।" [8]

यह वह काल था जब हिन्दुओं में वर्ण व्यवस्था और जाति प्रथा थी। गुरु गोरखनाथ ने ज्ञानमार्गी रूप अपनाया और लोगों को नैतिक शिक्षा, करुणा और क्षमा का उपदेश दिया। हिन्दी के प्राचीन कवि सरहप्पा की रचनाओं में भी अवधी के शब्द मिलते हैं। आठवीं सदी के रचनाकार उधोतन सूरी ने 'कुबलयमाला' की रचना की जो अब तक की प्राप्त अवधी से सम्बन्धित ग्रन्थों में सबसे प्राचीन है जिसमें अठारह देशी भाषाओं के साथ अवधी के रूप और सांकेतिक लक्षण उपलब्ध हैं। प्राकृत पैंगलम किसी अज्ञात लेखक की दसवीं शताब्दी की रचना है। "मुख्य रूप से यह अपभ्रंश का छन्द शास्त्रीय ग्रन्थ है परन्तु इसमें अवधी के प्रारम्भिक शब्द रूपों का प्रचलन मिलता है।" [9]

इसी क्रम में रोडा कृत राउलबेल, हेमचन्द्र कृत काव्यानुशासन और पृथ्वीराज रासो में अवधी बोली के शब्द मिलते हैं। डॉ. राम कुमार वर्मा ने अमीर खुसरो को अवधी का प्रथम कवि माना है। इनकी मुकरियों में खड़ी बोली, बृजभाषा और अवधी का अच्छा प्रयोग मिलता है जैसे– "गोरी सोवे सेज पर मुख पर डाले केस चल खुसरो, घर आपने रैन भई चहुँ देश।" प्रारम्भिक युग में गोरखनाथ की रचनाएँ, अन्नयदास की रचना, अमीर खुसरो की मुकरियाँ, रोडा कृत राउलवेल, हेमचन्द्र कृत उक्तिव्यक्ति प्रकरण के पाश्चात्य अवधी के उद्‌भव पर प्रकाश डालने वाली जो सामग्री अब तक उपलब्ध है, उसमें मुल्ला दाउद कृत चंदायन है। डॉ. माता प्रसाद गुप्त ने चन्दायन की भाषा को ठेठ अवधी कहा है और यह बैसवाड़ी अवधी की निकट पहुँचती है। चन्दायन की अवधी का एक उदाहरण द्रष्टव्य है– "देखी लिलार बिमोहे देवा। लोक कुटुंब तजि कीतिहि सेवा। दूजि क चाँ जानु परसगा। कइ खर सोवन कसौटी कसा।" [10]

अवध क्षेत्र में सन्त साहित्य विपुल मात्रा में रचा गया है। मुल्ला दाउद ने चन्दायन महाकाव्य लिखकर सूफी काव्यधारा का प्रवर्तन किया और इसके पश्चात् अवधी काव्य के विकास में कुतुबन का महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। हिन्दी जगत की सबसे पुरानी काव्य

भाषा अवधी है। प्रायः स्थूल रूप से संतों की भाषा को सधुक्कड़ी कहकर अवकाश ले लिया जाता है। सही कारण यह है कि उनकी भाषा का कोई भी रूप सामने नहीं आता है। साधारणतयः सधुक्कड़ी भाषा का तात्पर्य हिन्दी की विभिन्न बोलियों तथा अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावली से युक्त भाषा से लिया जाता है परन्तु विभिन्न भाषाओं के समावेश मात्र से किसी भाषा के मूल ढाँचे में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आता।

भाषा का ढाँचा मुख्यतः क्रियाओं और परसर्गों से पहचाना जाता है। पूर्व मध्यकाल के सन्त कवियों में से अधिकांश पर्यटन किया करते थे। यहो कारण है कि उनकी काव्यभाषा में अनेक प्रदेशों की शब्दावली का प्रयोग है। ये सन्त कवि अधिकतर हिन्दी के पूर्वी प्रदेश के निवासी थे। इससे उनकी भाषा पूर्वी हिन्दी अर्थात अवधी की नींव पर टिकी हुई है। उसका नाम कुछ भी दिया जा सकता है लेकिन मूलतः वह अवधी ही है। मध्ययुग में जायसी, तुलसी जैसे प्रौढ़ साहित्यकारों का आविर्भाव हुआ। पद्मावत, रामचरितमानस सहित सत्राहवीं शताब्दी तक सूफी ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थ अवधी में लिखे गये। भक्त कवियों में अवधी का प्रयोग कबीर से ही प्रारम्भ हो जाता है। कबीर ने स्वयं अपनी भाषा को पूर्वी बोली कहा, उनकी भाषा के सम्बन्ध में उनका यह कथन ही सबसे बड़ा प्रमाण है। कबीर की 'रमैनी' में अवधी का पूर्वी रूप बराबर दिखाई पड़ता है। "भाषा बहुत परिष्कृत और परमार्जित होने पर भी कबीर की उक्तियों में कही गई बातों में विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है। प्रतिभा उनमें बड़ी प्रखर थी, इसमें संदेह नहीं।" [11]

सन्त कवि जनता के साहित्यकार थे। भाषा, भाव, छन्द सभी दृष्टियों से उनका साहित्य जनता का साहित्य था। तत्कालीन युग में अवधी जनता की भाषा थी, इसलिए सन्तों ने अवधी के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यंजना की। भक्तिकाल में सुन्दरदास, हरिदास, मलूकदास, जगजीवनदास, दूलनदास अनेक ऐसे सन्त कवि हुए जिनके काव्य में अवधी भाषा का स्पष्ट और परिमार्जित रूप दृष्टिगोचर होता है। इनमें बहुत से कवि ऐसे हैं जिनकी काव्यभाषा अवधी है अथवा बहुत से कवि ऐसे भी हैं जिनके काव्य में अवधी भाषा के शब्द प्रयुक्त किये गये हैं।

मध्यकाल को अवधी के उन्नयन का लम्बा खण्डकाल माना जाता है। निर्गुण सन्त काव्य परम्परा के 'रैदास की बानियों' में अन्य भाषाओं के शब्दों के साथ–साथ अवधी का प्राचुर्य देखने को मिलता है जसे –

"दूधत बछरे थनाह बिडारेउ। फूल भँवर जल मील बिगारेउ।
गोविन्द पूजा कहॉ लै चढ़ावउँ। अवरुत फूल अनूपम पावउँ।।

मलयागिरितर रहै। भुजंगा। विषुअमृत बसहीं इक संगा।।
तनमन अरपउं, पूजा चढ़ावउं। गुरुपरसादि निरंजन पावउ।।
पूजा अरचा आहि न तोरी। कह रविदास कवनि गति मोरी।।" [12]

इसी क्रम में धर्मदास, ईश्वरदास, कीनारादास, किशोरदास की रचनाओं में भी अवधी का रूप देखने को मिलता है। साहब नवलदास ने जो कि सतनामी सम्प्रदाय के महात्मा जगजीवनदास के शिष्य थे। उन्होंने अवधी में 'सुखसागर' नाम से कृति लिखी। अवधी की निर्गुण सन्त काव्य परम्परा अत्यन्त समृद्ध है। सन्त दरिया साहब जो बिहार के कबीर कहे जाते है ,उनकी काव्य भाषा अवधी ही है। सन्त पल्टू साहब ने भी ठेठ पूर्वी अवधी में पाखण्ड और अन्धविश्वास का खण्डन किया। मलिक मोहम्मद जायसी ने पद्मावत् में ठेठ अवधी का प्रयोग किया है। पद्मावत के अतिरिक्त जायसी की अन्य रचनाओं में भी ठेठ अवधी का प्रयोग मिलता है। "इस क्षेत्र के साहित्यकारों ने रचनात्मक क्षेत्र में सदैव अपनी अग्रणी भूमिका निभायी है। मुल्ला दाउद ने 'चन्दायन' महाकाव्य लिखकर सूफी काव्य धारा का प्रवर्तन किया। उसी तरह जायसी का पद्मावत महाकाव्य इसी क्षेत्र के प्रयोग है।" [13]

इसी प्रकार सूफी काव्यधारा के अन्य कवियों ने भी अपने कथानक भारतीय पौराणिक ग्रन्थों से ग्रहण किये और भाषा के रूप में अवधी को चुना। सभी सूफी कवियों की शैली मसनवी है और उनकी अवधी में कथा कहने की क्षमता ने उनकी लोकप्रियता में चार चाँद लगा दिये। परिणाम यह हुआ कि अवधी की काव्यधारा को प्रशस्त करने में सूफी कवियों की महत्ता सिद्ध हो गई। अवधी का रामकाव्य रामानुजाचार्य (1016–1100ई.) से प्रारम्भ होता है। जिनकी 13वीं पीढ़ी में राघवानंद हुए। राघवानन्द ने दक्षिण भारत से उत्तर भारत में आकर काशी को अपना केन्द्र बनाया और राम नाम का प्रचार–प्रसार किया। इसी क्रम में इनके शिष्य रामानन्द ने भी रामभक्ति का गान किया और रामभक्त 'हनुमान जी की आरती', 'आरती कीजै हनुमान लला की दुष्ट दलन रघुनाथ कला की.....' अवधी भाषा में रचना को। इसके पश्चात् तुलसीदास जी का आगमन पाकर अवधी धन्य हो गई। गोस्वामी तुलसीदास ने अवधी में रामचरितमानस लिखकर इसे अप्रतिम ऊचाँई प्रदान की। "गोस्वामी जी ने रामचरितमानस जैसा महाकाव्य अवधी भाषा में लिखा और इसे विश्वस्तर पर प्रतिष्ठित कर दिया। मानस की परम्परा में यहाँ दर्जनों रामकाव्य रचे गये हैं जो हिन्दी की अमूल्य निधि है।" [14]

रामचरितमानस तुलसीदास की कीर्ति का आधार ग्रन्थ है। यह अवधी का प्रबन्ध काव्य है जिसमें राम के लोकमंगल स्वरूप को तुलसी ने सात काण्डों में प्रस्तुत करके अवधी की

महत्ता और इसकी गरिमा को बनाए रखा। "रामकाव्य अवधी भाषा की विमल विभूति है। तुलसीदास जी द्वारा रचित अवधी भाषा की अन्य रचनाएँ–दोहावली, कवितावली, गीतावली, विनय पत्रिका आदि में तुलसीदास जी द्वारा अवधी भाषा लेने के अनेक कारण हो सकते हैं। एक तो यह कि भगवान राम की जन्मस्थली अयोध्या की भाषा अवधी रही, दूसरी यह कि मध्यकाल में अवधी साहित्यिक रूप धारण कर चुकी थी, अवधी भाषा में चरित्र काव्य रचना की अद्‌भुत क्षमता दिखाई पड़ती है। भगवान राम के हमारे चरित्र–नायक होने के कारण उनके जीवन के उद्‌घाटन हेतु रामभक्त कवियों ने अवधी भाषा का अवलम्बन ग्रहण किया।" [15]

भक्त कवियों में अग्रदास, सरजूराम पण्डित, नाभादास, लालनदास, रघुनाथदास, माधव सिंह, छितिपाल और रीवा नरेश रघुराज सिंह, मथुरा प्रसाद शाहू आदि ने अवधी में ही अपनी काव्य रचना प्रस्तुत की। रामचरितमानस के रचयिता महाकवि तुलसीदास की जयन्ती को अवधी दिवस के रूप में मनाया जाता है। 18 एवं 19वीं शताब्दी में नूर मोहम्मद ने इन्द्रावती कासिम शाह ने हंस जवाहिर, शेख निसार ने युसुफ–जुलेखा, और 20वीं शताब्दी में ख्वाजा अहमद ने नूरजहाँ लिखकर अवधी बोली को साहित्य में जीवित बनाये रखा। अवधी की कष्ण काव्यधारा भी अत्यन्त प्रभावशाली रही। रामकाव्य और कृष्ण काव्यधारा के विषय में एक भ्रान्ति बहुत समय तक प्रचलित रही कि अवधी रामकाव्य की भाषा है और ब्रज भाषा कृष्णकाव्य की भाषा है, परन्तु यह सत्य नहीं है कि अवधी में कृष्णकाव्य रचा ही नहीं गया। वस्तुतः ब्रजभाषा में रामकाव्य भी लिखा गया है और अवधी में कृष्णकाव्य की रचना हुई। यह दूसरी बात है कि मात्रा और उत्कृष्टता में यह कम देखने को मिलते हैं।

मध्यकाल तक अवधी का सृजन केवल पद्य में हुआ। आधुनिक काल में अवधी विकास के शिखरों को छू रही है। गद्य की विभिन्न विधाओं कहानी, नाटक, उपन्यास, रेखाचित्र, यात्रा वृतांत के अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। यह क्रम अनवरत जारी है। साहित्य के विभिन्न विमर्शों जैसे स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, वृद्ध विमर्श आदि का भी समावेश अवधी गद्य में हो रहा है। यह सुनिश्चित है कि आने वाले समय में अवधी का साहित्य हिन्दी भाषा व अन्य भाषाओं के समकक्ष होने की स्थिति में है। आधुनिक रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में समाज–सुधार, सामाजिक विसंगतियों, कुरीतियों, राजनैतिक व्यवस्था आदि पर जमकर आवाज उठाई है। इस श्रृंखला के प्रमुख कवि बलभद्र प्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस', मृगेश, वंशीधर शुक्ल, रमई काका, पण्डित द्वारिका प्रसाद मिश्र, आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर', विश्वनाथ पाठक, त्रिलोचन

शास्त्री, डॉ. श्याम सुन्दर मिश्र 'मधुप', आदि प्रमुख है। इन सभी रचनाकारों के द्वारा आज भी अवधी बोली का अस्तित्व बना हुआ है और निरन्तर अवधी की विकास यात्रा गतिमान है।

भारत की विरासत है यह अवधी साहित्य। अवधी की कृतियाँ न सिर्फ भारत वरन विश्व साहित्य को टक्कर देनें सकने में सक्षम है। यह मात्र बोली ही नहीं सांस्कृतिक परंपरा है जिसमें भारतीय संस्कृति का मूलभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर है। इसकी सुदीर्घ गौरवशाली परंपरा में स्वप्न संकल्प और संस्कृति का अद्‌भुत सम्मिलन दिखाई देता है। नये सामाजिक समीकरणों की पहचान, सामाजिक विसंगतियों पर विमर्श, राजनैतिक समझ, सांस्कृतिक एकता, दलित वंचित वर्ग की अभिव्यक्ति, नारी–अस्मिता, पर्यावरण आदि इनके विषय रहे है। अवधी की कृतियाँ धर्म और संस्कृति के प्रति भी तार्किक हैं उनमें राजनीतिक समझ है। अवधी गद्य साहित्य में आम आदमी का दर्द है। यह दर्द विशेषकर भारत के गाँवों से उठकर शहरों में व्यापकता को प्राप्त करता है।

संक्षेप में अवधी की ध्वनि, पद और वाक्य–रचना संबंधी व्याकरणिक विशेषतायें निम्नलिखित है–भिन्न स्वरों के निकटस्थ स्थित अवधी की उच्चारण पद्धति इसके अनुकूल है परन्तु पश्चिमी हिन्दी में संस्कृत की भाँति सन्धि–प्रवृत्ति का प्राधान्य है। यथा अवधी 'चरई' और 'मउर' का पश्चिमी हिन्दी में क्रमशः 'चरै' एवं 'मौर' हो जायेगा। दो से अधिक अक्षरों के पद के प्रारम्भ में हस्व 'इ', 'उ' के बाद 'अ' की ध्वनि अवधी की प्रकृति के अनुकूल किन्तु पश्चिमी हिन्दी के प्रतिकूल है। यथा अवधी के दुआर, पियार, बिआह आदि शब्द पश्चिमी हिन्दी में क्रमशः द्वार, व्यार, ब्याह होते हैं। अवधी की यह प्रवृत्ति पूर्वी भाषाओं से अधिक साम्य रखती हैं। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र इस पश्चिमी हिन्दी में खिंचाव की तथा अवधी में फैलाव की प्रवृत्ति कहते है।

ह्स्व 'अ' तथा दीर्घ 'आ' के बाद 'इ' अपश्रुति का योग अवधी के अनुकूल है परन्तु पश्चिमी हिन्दी से दूर है। यथा–खड़ी बोली– जाता, ब्रज–जात, अवधी–जाइत। ह्स्व 'ए' और 'ओ' की ध्वनियों का शिष्ट हिन्दी में अभाव है परन्तु अवधी में इनका बाहुल्य है। यथा हिन्दी में बेटा, छोटा, अवधी में– बेटवा, छोटकवा में परिवर्तित हो जाता है। अवधी को 'व' अपश्रुति अधिक प्रिय है जबकि पश्चिमी हिन्दी 'य' से लगाव है। भूतकाल के क्रिया रूप इसके समुचित उदाहरण है। यथा–अवधी में गवा, आवा, लावा, पश्चिमी हिन्दी में– गया, आया में परिवर्तित हो जाता है।

अवधी में 'र' ध्वनि का प्राचुर्य ज्ञात होता है। उसमें प्रायः 'ल' के स्थान पर 'र' के प्रयोग की प्रवृत्ति पायी जाती है। जैसे शब्द नाला–नारा, साला–सारा, काले–कारे, फुटकल–फुटकर में परिवर्तित जाते हैं। अवधी में प्रायः 'न', 'ल' में परिवर्तित हो जाता है। यथा नम्बर–लम्बर, नोट–लोट, नील–लील, सिनेमा–सलेमा अवध अपभ्रंश की तरह 'उकार बहुला' भाषा है। उसकी यह प्रवृत्ति उसके संज्ञा, सवनाम, क्रिया, अपव्यय आदि प्रायः सभी प्रकार के शब्दों में पाई जाती है। यह प्रवृत्ति पश्चिमी हिन्दी से लाखों कोस दूर है। यथा –

संज्ञा– धरमु–करमु रामु, भानु, चोरु

क्रिया– करहु, चीनहहु, आउ–जाउ रहहु या रहउ

अव्यय– आजु, बिनु, दाहिनेहु

सर्वनाम– आपु, काहु,कोउ, जासु, तासु

लघ्वन्त की प्रवृत्ति– अवधी के अन्तर्गत सभी प्रकार के शब्दों में लघ्वन्त की प्रवृत्ति का प्राचुर्य हैं। इसके विपरीत पश्चिमी हिन्दी में दीर्घान्त पदों की प्रवृत्ति का प्राधान्य है यथा–

संज्ञा	अवधी	पश्चिमी हिन्दी
	नाता	नातो
	सार	सारो या साला
सर्वनाम	मोर, तोर, हमार–मोरो तोरो, हमारो,	
विशेषण	छोट, मोट, खोट, कार, उजर–छोटो, मोटो, खोटों, कारो, उजरो	
क्रिया	आवन, करन, उठबु– अवनो, करनो उठिबो	
	भरब, ठाढ़–भरिबो ठाढो	

अवधी पश्चिमी हिन्दी की अपेक्षा पूर्व की बिहारी भाषाओं की भाँति अपने संज्ञा पदों में प्रायः एक 'अति दीर्घ' रूप ग्रहण करती है। इस प्रकार अवधी में कतिपय संज्ञा शब्दों के तीन रूप लघु दीर्घ और अतिदीर्घ तक देखे जाते हैं। यथा–लरिका, लरिकवा, लरिकउना, घोड़ा–घोड़वा, घोड़उन अवधी के विशेषण पदों में स्वार्थी 'क' का योग प्रायः हो जाता है। यथा– थोरक, बहुतक कछुक। अवधी में संस्कृत की 'श', 'ष', 'ऋ', 'ण', 'क्ष', 'ज्ञ' आदि ध्वनियों का अभाव है। इसके स्थान पर क्रमशः उसमें 'स', 'ख', 'रि', 'न', 'च्छ', 'ग्य' आदि से काम चलता है। यथा– शरीर–सरीर, भाषा–भाखा, ऋण–रिन, ऋतु–रितु, बाण–बान, वर्ण–बरन, परिक्षा–परिच्छा, कक्षा–कच्छा ज्ञान–ग्यान। अवधी में कतिपय स्थानों पर 'य' और

'व' क्रमशः 'ज' और 'ब' में परिणत हो जाते है। यथा– यौवन–जौवन, यश–जश, आश्चर्य–अचरज, जवाब–जबाब।

वाक्य रचना के क्षेत्र में अवधीकृत प्रयोग प्रधान भाषा तथा पश्चिमी हिन्दी कर्म प्रयोग–प्रधान भाषा है। यथा– दीन्हा नैन पन्थ पहिचाना अवधी प्रयोग है। इसी का पश्चिमी प्रयोग होगा– दीन्हे नैन पन्थ पहिचानों। अवधी क्रिया के भविष्यकालिक रूपों में वकारान्त प्रवृत्ति का बाहुल्य है जिसका पश्चिमी हिन्दी में अभाव है। क्रियार्थक संज्ञा के रूपों का निर्माण भी अधिकतर 'ब' के योग से होता है। यथा–

भविष्यकालिक– हमहुं कहब अध ठाकुर सोहाती नाहित मौन रहब दिन राती (तुलसी)

क्रियाथक– बिनु सियराम फिरब भल नाहीं। प्रेममगन तेहि उठब न भावा (तुलसी)

किसी भाषा को परखने की सबसे महत्वपूर्ण कसौटी परसर्गो का अध्ययन होता है। अवधी के संबंध में यह उल्लेख अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि पश्चिमी हिन्दी की अपेक्षा उसमें कर्ता कारक के 'ने' परसर्ग का पूर्ण अभाव है। अवधी के शेष प्रमुख परसर्ग इस प्रकार है –

कर्ता

कर्म – कह, कह, के (आधुनिक का, क)

करण – सन, से, सों, (आधुनिक ते से)

संप्रदान – कह, कहं, केहि (आधुनिक का के खातिर)

अपादान – से, ते (हंत प्राचीन)

संबंध – के, केर, कर (आधुनिक–क्यार का की)

अधिकरण – माँ, पर, में (प्राचीन–मांझ मंह)

अवधी के ध्वनि ग्राम :– अर्थभेदक ध्वनितत्व ध्वनिग्राम कहलाते है। अवधी का ध्वनिग्राम समुदाय हिन्दी के ध्वनिग्रामों से बहुत कुछ अभिन्न है। यद्यपि अवधी के कुछ ध्वनिग्रामों से भिन्न है। अवधी भाषा के ध्वनिग्रामों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

व्यजन ध्वनिग्राम –

ओष्ठ्य, दन्तरू, मूर्धन्य, तालव्य, कंठ्य

अल्पप्राण	ब्	त् द्	ट् ड्	च् ज् क् ग्
स्पर्शः महाप्राण	फ् भ्	थ् ध्	ठ् ढ्	छ् झ् ख् घ्
अल्पप्राण	म्	न्		
नासिक्यः–	म्ह्	न्ह्		

महाप्राण				
अल्पप्राण	ल्			
पश्विबकः महाप्राण	ल्ह्			
अल्पप्राण	र्			
लुठिंतः महाप्राण	रह्			
अस्पप्राण	ड्			
उक्षिप्तः– महाप्राण			ढ	
संघर्षी		स-		ह
अर्द्ध–स्वर	व			य

अवधी में कंठ्य और तालव्य नासिक्यों 'ङ' और 'ञ' का विशुद्ध उच्चारण नहीं होता है, प्रत्युत उनके स्थान पर अनुस्वार (0) से काम चलाया जाता है। म्ह 'न्ह', 'ल्ह' तथा 'रह्' आदि को 'ख' और 'घ' की भाँति ही ध्वनि ग्रामिक इकाई मानना चाहिए परन्तु प्रायः उन्हें व्यंजन–संयोग के अर्न्तगत ही स्थान दिया जाता है। देवनागरी की परम्परागत वर्णमाला में उक्षिप्त ध्वनियों 'ड' और 'ढ' को स्थान दिया गया है क्योंकि उनका विकास बहुत कुछ आधुनिक है परन्तु प्रयोग की प्रचुरता के कारण इन ध्वनियों ने अवधी में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है।

स्वर ध्वनिग्राम :– अवधी के स्वर ध्वनि ग्रामों की संख्या हिन्दी से भिन्न नहीं है। हाँ हिन्दी की अपेक्षा अवधी में कुछ अतिरिक्त स्वर ध्वनियाँ अवश्य है परन्तु प्रायः उन्हें मुख्य स्वर ध्वनिग्रामों के अन्तर्गत नहीं रखा जाता है। यथा– ए, ओ– बेटवा लोटवा आदि।

साधारणतया उच्चारण– प्रवृत्ति के अनुसार अवधी के स्वर ध्वनिग्रामों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

मूलस्वर – ह्स्व – अ, इ, उ

दीर्घ –आ, ई, ओ, ए, सौ

संयुक्त स्वर– ऐ (अ+इ) औ (अ+उ)

भाषा ध्वनियों का समवाय होती है। प्रत्येक भाषा अथवा बोली अनेकानेक ध्वनियों की संख्या और स्वरूप लेकर चला करती है। थोड़ी–थोड़ी दूर पर पानी और वानी (बोली) बदलने की बात प्रसिद्ध है। यद्यापि कुछ व्यापक विशेषताएँ उन्हें एक परिवार की संज्ञा में आबद्ध रखती है

तथापि कुछ सूक्ष्म अन्तर उनके अस्तित्व को स्पष्ट करता रहता है। बैसवाड़े के 'को आय' को प्रतापगढ़ वाले 'के अहे' कहते है परन्तु दोनों को अवधी के अर्न्तगत माना गया है। साधारणतयः अवधी के विभिन्न रूप (उपबोलियाँ) इस प्रकार हैं।

पश्चिम अवधी पूर्वी या पूर्वोत्तरी अवधी दक्षिणी या बघेली अवधी

पश्चिमोत्तरी या गाँजरी अवधी बैसवाड़ी अवधी

पश्चिमी अवधी के अन्तर्गत खीरी, सीतापुर, बाराबंकी, लखनऊ, हरदोई (केवल सण्डीला तहसील) रायबरेली, उन्नाव, फतेहपुर तथा कानपुर (अकबरपुर तथा डेरापुर तहसील को छोड़कर) तथा बहराइच जनपद के पश्चिमी–दक्षिणी क्षेत्र (जो लखीमपुर से मिले है) आते है। दक्षिणो अथवा बघेली अवधी के क्षेत्र का उल्लेख ऊपर हो चुका है। इस प्रकार अवधी का शेष क्षेत्र पूर्वी अवधी के अन्तर्गत है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पूर्वी अवधी को विशुद्ध या आदर्श अवधी मानते हैं। पश्चिमी अवधी के दो रूपों में से पश्चिमोत्तरी या गाँजरी अवधी का क्षेत्र अपेक्षाकृत छोटा है। इसके अर्न्तगत खीरी, सीतापुर तथा हरदोई जिले के अवधी भाषी क्षेत्र, सीतापुर जिले से सटे हुए बाराबंकी जिले के उत्तरी–पश्चिमी क्षेत्र (विशेषकर फतेहपुर तहसील तथा खीरी से सटे हुए बहराइच जनपद के क्षेत्र आते हैं। बाराबंकी का अधिकांश भाग (फतेहपुर तथा कानपुर के अवधी भाषी क्षेत्र बैसवाड़ी अवधी का क्षेत्र माना जाता है। इस प्रकार पूर्वी अवधी में बैसवाड़ी अवधी का स्थान महत्वपूर्ण है। बैसवाड़ी अवधी का केन्द्र रायबरेली और उन्नाव का बैसवाड़ा क्षेत्र है जिसके आधार पर इसका नामकरण किया गया है। पश्चिमी तथा पूर्वी अवधो के भेदक लक्षण साधारणतया इस प्रकार है।

संज्ञा सम्बन्धित भेद :–

पूर्वी अवधी के संज्ञा शब्दों में प्रायः 'इस' तथा 'वा' के प्रत्यय का योग हो जाता है जो अवधी के अन्य रूपों में नहीं पाया जाता है। यथा–

पश्चिमी अवधी	पूर्वी अवधी
धरती	धरतिया
पानी	पनिया
कलम	कलमवा
धरमु	धरमवा

सर्वनाम सम्बन्धित भेद :– खड़ी बोली हिन्दी के तीन सर्वनाम "कौन" जो और "वह" पश्चिमी तथा पूर्वी अवधी में स्पष्ट अन्तर से प्रयुक्त होते है–

खड़ी बोली	पश्चिमी अवधी	पूर्वी अवधी
कौन	को	के
जो	जो या जौन	जे
वह	सो	ते

क्रिया संबंधी भेद :– पश्चिमी अवधी में ब्रज के समान साधारण क्रिया में नांत रूपों की प्रचुरता है परन्तु पूर्वी अवधी में क्रिया का रूप अनिवार्य रूप से व़करांत रहता है। यथा–

पश्चिमी अवधी	पूर्वी अवधी
आवन	आउब
जान	जाब
करन	करब

ध्वन्यात्मक अन्तर :– पूर्वी अवधी के 'ए', 'ओ', 'ऐ' तथा 'औ' पश्चिमी अवधी में क्रमशः 'य', 'व' तथा 'या', 'वा' हो जाते है। यथा–

पश्चिमी अवधी	पूर्वी अवधी
एक खेत	याक ख्यात
चोट–ओट	च्वाट–वाट
मेहरारू	म्यहरारू
घोड़वा	घ्वड़वा
मोहरा	म्वहरा

पश्चिमात्तरी तथा बैसवाड़ी अवधी में अन्तर :–

बैसवाड़ी अवधी की साधारण क्रियाओं में प्रायः नांत रूप पाये जाते है, जिनका पश्चिमोत्तर अवधी में प्रायः अभाव है। बैसवाड़ी की नांत क्रियाएँ पश्चिमोत्तर अवधी में प्रायः अभाव है।

बैसवाड़ी की नांत क्रियाएँ पश्चिमोत्तर अवधी में इस प्रकार परिवर्तित हो जाती है।

बैसवाड़ी अवधी	पश्चिमोत्तरी अवधी
मारन	मारी
कहन	कही

फाँकन	फाँकी

पश्मिोत्तरी अवधी की वकारांत क्रियाओं में 'ए' श्रुति के योग से उनका बैसवाड़ी रूप बन जाता है।

यथा–

पश्मिोत्तरी अवधी	बैसवाड़ी अवधी
करिब	करिबे
रहिब	रहिबे
सोइब	सोइबे
चलिब	चलिबे

क्रिया के उपयुक्त रूपों में कारक के चिन्ह लगने पर भी बैसवाड़ी में उनका रूप प्रायः काव्यों में सुरक्षित रहता है परन्तु पश्चिमोत्तरी अवधी में बदल जाता है।

यथा–

बैसवाड़ी अवधी	पश्चिमोत्तरी अवधी
खइबे का	खाइ का
नहइबे का	नहाइ का

अवधी में संबंध का स्त्रीलिंग परसर्ग 'कै' अवधी के पूर्वी क्षेत्र से लेकर बैसवाड़े तक प्रचलित है परन्तु खीरी– सीतापुर के जिलों में इसका प्रयोग नहीं होता है। वहाँ 'कै' के स्थान पर पश्चिमी हिन्दी के सम्बन्ध कारक परसर्ग ही प्रचलित है।

दक्षिणी या बघेली अवधी :–

दक्षिणी या बघेली वस्तुतः पूर्वी और पश्चिमी अवधी का एक समन्वित रूप है परन्तु उस पर पश्चिमी अवधी की बैसवाड़ी का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक है। फतेहपुर तथा बाँदा की भाषा तो लगभग एक ही हैं।

पश्चिमी अवधी की भाँति बघेली में भी 'बा' हो जाते है। यथा–

हिन्दी	बघेली
देन	द्यात/द्यात
घोड़	घ्वाड़

आधुनिक के सभी रूपों में साहित्य रचना विशेषकर काव्य रचना की जा रही है। आधुनिक काल के पश्चिमोत्तरी अवधी के कवियों में बलभद्र प्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस', वंशीधर

शुक्ल, पारस नाथ 'भ्रमर', लक्ष्मण प्रसाद मिश्र, चतुर्भुज शर्मा, बैसवाड़ी अवधी के कवियों में रमई काका, रामस्वरूप मिश्र, कृपाशंकर मिश्र, शिवरत्न शुक्ल तथा पूर्वी अवधी के कवियों में श्याम तिवारी, भगवती प्रसाद 'नन्दन' तथा दक्षिणी अवधी के कवियों में वागीश शास्त्री, रामबेटा पाण्डेय, आदित्य, बैजनाथ प्रसाद 'गुरू', रामप्यारे, तथा कुन्ती देवी आदि के नाम सुप्रसिद्ध है।

परसर्ग रूपों में परिवर्तन :–

प्राचीन अवधी से नवीन अवधी तक आते–आते कुछ परसर्गो के रूपों में परिवर्तन हो गया है। कुछ का बिलकुल लोप हो गया है और कुछ नवीन परसर्गो का उद्‌भव भी हुआ है। उदाहरण के लिये पुरानी अवधी में कर्मकारक के अर्न्तगत 'कह' 'कहँ' केहि आदि रूप पाये जाते है परन्तु आज 'हकार' का परित्याग कर उन्होने क्रमशः 'का' तथा 'के' आदि रूप धारण कर लिये है। यह 'का' भी आजकल कभी–कभी 'क' हो जाता है। करण कारक के प्राचीन परसर्गो 'सम' स 'सो', 'ते' से अब प्रायः 'ते' और 'से' ही चलते है।

सम्प्रदान में कर्म की भांति प्राचीन परसर्गो– 'कह', 'कहँ', 'केहि' के स्थान पर उनके अवार्चीनरूप 'का' को 'केहि' आदि चलते है। साथ ही साथ इसके अन्तर्गत प्राचीन परसर्गो 'लगि'–'लागि', 'हित'–'हेतु' का लोप होता जा रहा है और उनके स्थान पर खातिर–तई, बदि–बरे, (कहिगा पंखि संदेसा–जायसी होई रतन हुवा जिन्ह कहिगा खेंती–जायसी) सन, तै आदि अब अप्रचलित हो गये है और उनके स्थान पर केवल ते, से, सैनी आदि से काम चल रहा है। कमानहि खंचहि–जासयी अब भी कभी–कभी गाँवों में सुनाई पड़ता है। संबंध कारक के परसर्ग नहीं दिखलाई पड़ते है। अधिकरण कारक के अन्तर्गत मँह, माह, मांहि, मझारी, पाही, पेरि आदि परसर्ग आज पुराने पड़ गये है तथा उनके स्थान पर केवल मंह, मांह, के माँ (हकार–लुप्त) तथा 'पर' से ही प्रायः काम चल रहा है।

सर्वनाम :– प्राचीन अवधी में 'ह' के साथ संयुक्त सर्वनामों का व्यवहार प्रायः बहुत हुआ है यथा– हम्ह–हम्ह (आजु आगि हम्ह जुड़–जायसी) संयुक्त सर्वनामों की यह प्रवृत्ति आधुनिक अवधी में लगभग समाप्त है। यथा–हम्ह–हम, तुम्ह–तुत, जिन्हें–जिन में परिवत हो गये है। प्राचीन तुम्हार भी 'तुमार' (पश्चिमी) तथा 'तोहार' (पूर्वी अवधी) में बदल गया है। 'हि' विभक्त का 'ह' घिस जाने से प्राचीन सर्वनाम रूप केहि, जेहि, तेहि आदि क्रमशः 'कोई' जेई तेइ बोले जाने लगे है।

परसर्ग युक्त सर्वनामों के पुराने रूप केहिका, जेहिका, तेहिका आदि क्रमशः किहिका जिहिका तिहिका होकर 'ह' के घिस जाने से इ–ठ की सन्धि हो जाने पर कीका, जीका, जीका तीका, होते जा रहें है।

प्राचीन अवधी का उत्तम पुरूष एक वचन का सर्वनाम हौ– मैं (हौं अस जोगी जन सब कोउ–जायसी) तो समाप्त ही हो गया है लगभग 'मैं' भी समाप्त प्राय है। ठेठ अवधी की बोलचाल से वह उठ–सा गया है। उसके स्थान पर बहुवचन 'हम' का प्रयोग होता है और उसका अर्थ एकवचन का ही लिया जाता है, परिणामस्वरूप उसके बहुवचन बोध के लिए हम के आगे 'पंच' वाग ल्वाग या 'हवार' आदि गणवाची शब्द प्रत्यय के रूप में जोड़ दिए जाते है (हम पंच, हम ल्वाग) इस प्रकार आधुनिक अवधी में उत्तम पुरुष का एकवचन ही समाप्त हो गया है। इसके समाप्त हो जाने से भूतकाल में जो तिड़न्त रूप इसके साथ आता था वह भी समाप्त हो रहा है। वर्तमान अवधी भाषी 'मैं देखेउ' न कह कर 'हम देखे न' कहते है। वाक्य संबंधी यह परिवर्तन अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

क्रिया रूप :– 'न्ह' का महाप्राणत्व लुप्त हो जाने से प्राचीन अवधी के लीन्ह, दीन्ह, कीन्ह आदि क्रियारूप क्रमशः लीन, दीन, कीन आदि हो गये हैं।

पूर्वी अवधी का एकवचन भविष्यत की पुरानी– क्रियाओं होइहिं, आइहिं, जाइलि, इत्यादि का 'ह' घिस जाने से और अवशिष्ट रूप 'इ' के पूर्व 'इ' के जुड़ जाने से ईकारान्त रूप हो गया है। यथा– होई, आई, जाई तथा करी, खाई निष्कर्षतः अवध और अवधी दोनों का पारस्परिक संबंध है और यह संबंध अत्यन्त प्राचीन भी है। अवधी अवध तथा उसके आस–पास के क्षेत्रों में एक बोली के रूप में नही एक भाषा के रूप में व्यवहृत होती है। अवधी की प्रवृत्तियाँ एंव विशेषताऐं व्याकरण सम्मत है। भक्तिकाल अवधी का स्वर्णकाल माना जाता है। वर्तमान समय में अवधी अपनी उन्नत अवस्था में है और गद्य तथा पद्य दोनों विधाओं में अवधी में साहित्य सृजन प्रचुर मात्रा में हो रही हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. पीयूष जगदीश, अवधी साहित्य सर्वेक्षण और समीक्षा, संस्करण–2014, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–8
2. HTTPS // Sahityavimarsh . com
3. पीयूष जगदीश, अवधी ग्रन्थावली (खण्ड–एक), वाणी प्रकाशन, संस्करण–2008 / 2010, पृष्ठ संख्या–38

4. पीयूष जगदीश, अवधी साहित्य सर्वेक्षण और समीक्षा, प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2014, पृष्ठ संख्या–3
5. hi. M. Wikipedia .crg
6. पीयूष जगदीश, अवधी ग्रन्थावली (खण्ड एक), वाणी प्रकाशन, संस्करण–2010, पृष्ठ संख्या–15
7. 'मधुप' मिश्र सुन्दर श्याम, अवधी साहित्य का इतिहास, संस्करण– 2012, पृष्ठ संख्या–1
8. 'मधुप' मिश्र, सुन्दर श्याम, अवधी साहित्य का इतिहास, संस्करण–2012, पष्ठ संख्या–14
9. 'मधुप' मिश्र सुन्दर श्याम, अवधी साहित्य का इतिहास, संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–37
10. दाउद मुल्ला, चन्दायन, विश्वविद्यालय प्रकाशन–वाराणसी, पृष्ठ संख्या–64
11. शुक्ल रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, ग्रीलीफ पब्लिकेशन वाराणसी, संस्करण–2015–16, पृष्ठ संख्या–68
12. 'मधुप' मिश्र सुन्दर श्याम, अवधी साहित्य का इतिहास, संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–1
13. दीक्षित सूर्य प्रसाद, अवध संस्कृति विश्वकोश (खण्ड दो), वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण–2016, पृष्ठ संख्या–9
14. दीक्षित सूर्य प्रसाद, अवध संस्कृति विश्वकोश (खण्ड दो) वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण–2016, पृष्ठ संख्या–9
15. ज्ञानवती, अवधी की आधुनिक प्रबन्ध धारा, देशभारती प्रकाशन, संस्करण–2019, पृष्ठ संख्या–30

द्वितीय अध्याय

'निशिहर' जी का व्यक्तित्व व कृतित्व व अन्य अवधी रचनाकारों में स्थान

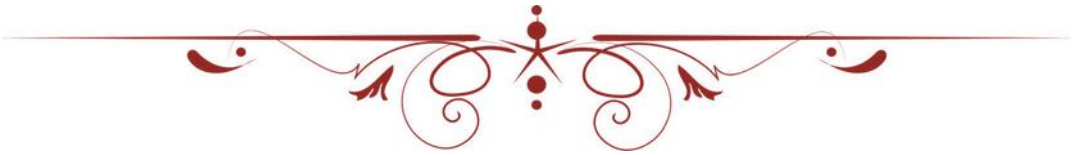

द्वितीय अध्याय

'निशिहर' जी का व्यक्तित्व व कृतित्व व अन्य अवधी रचनाकारों में स्थान

साहित्यकार और साहित्य दोनों एक ही नवनिर्माण प्रक्रिया के दो पहलू हैं। इस दृष्टि से साहित्यकार के कृतित्व के अध्ययन के लिए उनके व्यक्तित्व का अध्ययन अत्यंत अपेक्षित एवं महत्वपूर्ण होता है। प्रत्येक रचनाकार क व्यक्तित्व के निर्माण में उसके परिवेश का प्रभाव प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से अवश्य रहता है।

अवध के जिन आधुनिक लेखकों और कवियों ने अवधी के उन्नयन में अपना योगदान दिया है उनमें 'निशिहर' जी का नाम अत्यन्त आदरणीय है। आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' अवधी के आधुनिक साहित्यकार हैं जिन्होंने अवधी की वंशवेली को फैलाते हुए विभिन्न विधाओं जैसे कहानी, कविता, नाटक आदि में अपनी रचनाओं को प्रस्तुत किया है। प्रकारान्तर से यह कहा जा सकता है कि अवधी साहित्य को व्यापक और प्रभावी बनाने के लिए आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' द्वारा किये गये कार्य सब भाँति प्रशंसनीय हैं। आज भी 'निशिहर' जी सक्रियता के साथ अवधी को भारत ही नहीं, विश्वव्यापी बनाने के लिए निरन्तर प्रयासरत हैं।

अवधी के सुप्रसिद्ध रचनाकार आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' का जन्म अवधी के हृदयस्थल बसवारे में हुआ है। यह सर्वविदित है कि बैसवारा भू–भाग अपनी साँस्कृतिक सभ्यता और शौर्य के लिए विख्यात रहा है।

बैसवारा भू–भाग के अन्तर्गत रायबरेली और उन्नाव दोनों क्षेत्र आते हैं जो लगभग 80 किलो मीटर के क्षेत्र मे फैला हैं। 'बैसवारे का अतीत पौराणिक है आर इसका आध्यात्मिक उत्थान गौरवपूर्ण हैं। साहित्य, संस्कृति और कला के क्षेत्र में यहाँ की धरती रत्नगर्भा रही है।"

इसी गौरवशाली बैसवारे के भूखण्ड पर आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' का जन्म 12 सितम्बर, 1954 तद्‌नुसार भाद्रपद पूर्णिमा रविवार संवत–2011 की उपर्युक्त तिथि को आपके ननिहाल ग्राम–मानपुर, ब्लाक–खीरों, जिला–रायबरेली (उत्तर प्रदेश) में हुआ।

'निशिहर' जी के नाना महावीर शर्मा एक किसान होने के साथ–साथ अपने पैतृक व्यवसाय के कुशल कारीगर भी थें। वण व्यवस्था के अनुसार 'निशिहर' जी विश्वकर्मा वंशज

अर्थात बढ़ई हैं। इनका पैतृक मूल निवास बसन्तखेड़ा बजौरा रामपुर डाकघर बिहार, विकास खण्ड सुमेरपुर, जनपद उन्नाव में स्थित है।

'निशिहर' जी के पिता का नाम श्री सन्त प्रसाद शर्मा और माता का नाम श्रीमती चन्द्रकला शर्मा है। सौभाग्य से 'निशिहर' जी की माता अभी जीवित हैं जिनसे शोधार्थिनी स्वयं दो बार मिल चुकी है और जिनकी आयु लगभग 95 वर्ष है।

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' का जन्म नाना के घर अवश्य हुआ परन्तु कुछ समय पश्चात् 'निशिहर' जी की माता जी बसन्तखेड़ा, मजरे–बजौरा रामपुर अपने घर आयी और बसन्तखेड़ा गाँव के ग्रामीण परिवेश में ही 'निशिहर' जी का लालन–पालन हुआ। 'निशिहर' जी के पिता खेती–किसानी और कुछ शिल्प कार्य करके पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए जीवनयापन कर रहें थे। इधर 'निशिहर' जी' की प्रारम्भिक शिक्षा–दीक्षा का समय भी नजदीक आ रहा था। वे विद्यालय में प्रवेश योग्य हो रहें थे। आर्थिक तंगी तो थी ही परन्तु 'निशिहर' जी के पिता के भीतर पुत्र को पढ़ाने की ललक भी थी। भले ही वे स्वंय निरक्षर थे परन्तु पुत्र की शिक्षा–दीक्षा में कोई कमी नहीं रखना चाहते थे। इसके चलते कठिन प्रयास द्वारा 'निशिहर' जी के पिता ने सर्वप्रथम इनकी प्राथमिक शिक्षा के लिए इनका दाखिला प्राथमिक विद्यालय बजौरा, उन्नाव में करवाया।

'निशिहर' जी प्रारम्भ से ही पढ़ने–लिखने में अच्छे थे। कहावत कही गयी है कि पूत के पाँव पालने में ही नजर आने लगते हैं। यह कहावत इन पर सटीक बैठती हैं। प्रतिभा प्रभाव–अभाव की मोहताज नहीं होती। इन बातों को 'निशिहर' जी ने साबित कर दिया। प्राथमिक शिक्षा के दौरान ही 'निशिहर' जी के भीतर काव्य के बीज अंकुरित होने लगे थे। अंत्याक्षरी आदि प्रतियोगिताओं में सदैव प्रथम स्थान पाते जिससे अध्यापक इनसे बहुत प्रभावित व खुश रहते थे। इसके पश्चात कक्षा आठ तक की शिक्षा 'निशिहर' जी ने सुमेरपुर जूनियर हाईस्कूल से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' ने जवाहर विद्यालय इण्टर कालेज सेमरी, रायबरेली जो अब राजकीय इण्टर कालेज के नाम से जाना जाता हैं, से हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट की परीक्षाओं को अच्छे अंको से उत्तीर्ण किया। उस समय कालेज से निकलने वाली पत्रिकाओं में इनकी अवधी की कविताएँ, छोटी कहानियाँ,

नाटक व कीर्तन छपा करते थे। "हमहूँ अपनी बोली अवधी मा काम कीन है कविता, गीत, नाटक, किहानी लिखा है।"

'निशिहर' जी ने राजकीय दीक्षा विद्यालय खजुहा फतेहपुर' से बी.टी.सी. उत्तीर्ण कर अपनी प्रथम नियुक्ति सिंहपुर ब्लाक जनपद अमेठी में प्राथमिक अध्यापक के रूप में प्राप्त की। सरकारी स्थानान्तरण की प्रक्रिया के अनुरूप 'निशिहर' जी' ने अमाँवा, राही ब्लाक में प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण कार्य किया और एक लोकप्रिय अध्यापक के रूप में ख्याति प्राप्त की। 'निशिहर' जी की सेवाओं को देखते हुए आपको जूनियर हाईस्कूल में प्रधानाध्यापक पद पर नियुक्ति किया गया। 31 मार्च 2016 को पूर्व माध्यमिक विद्यालय पूरे कुम्हारन ब्लाक राही जिला रायबरेली से 'निशिहर जी' ने अवकाश प्राप्त किया। आपने अध्यापन कार्य के दौरान ही शिक्षा विभाग से अनुमति लेकर अपनी शैक्षिक योग्यता में वृद्धि करते हुए छत्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय, कानपुर से स्नातक व परास्नातक की शिक्षा प्राप्त की व 'सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय' से व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में आचार्य' की उपाधि प्राप्त की।

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' का विवाह संस्कार मात्र 17 वर्ष की आयु में फुलवामऊ, फतेहपुर की 'भानुमति शर्मा जी' से सम्पन्न हुआ जिनसे 'निशिहर' जी की चार सन्तानें हैं। जिनमें तीन पुत्र व एक पुत्री हैं। 'निशिहर' जी ने बखूबी अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए आपने बच्चों को अच्छा परिवेश दिया। संस्कारों से परिपूर्ण कर उन्हे उच्च शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाया, साथ ही समय पर विवाह आदि संस्कारो को सम्पन्न कर अपने जीवन को परिवार की ओर से सार्थक किया। 'निशिहर' जी का भरापूरा परिवार है जिसमें सभी संयुक्त रूप से रहते है।

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' का परिवार व स्वयं 'निशिहर' जी सात्विक प्रवृत्ति के हैं। ईश्वर पर आपकी अटूट आस्था है और आप बहुत ही सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं।

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' को अपनी क्षेत्रीय भाषा अवधी से प्रगाढ़ प्रेम है। आपने साहित्य में जो कुछ भी लिखा, वह सब अपने आसपास, परिवार–समाज सें प्रेरित हो साहित्यिक विधाओं के माध्यम से हमारे समक्ष प्रस्तुत किया। हाँलाकि 'निशिहर' जी का प्रारम्भिक जीवन संघर्षपूर्ण रहा। जिस घर में घोर अशिक्षा रही हो उस घर से निकलकर अपने माता–पिता की कृपा से उच्च शिक्षा प्राप्त कर आगे बढ़ना और अपनी बोली–बानी अवधी भाषा

की सेवा करना बड़ा कार्य था। जीवन के उतार चढ़ाव के मध्य समय–समय पर 'निशिहर' जी को आर्थिक तंगी का भी सामना करना पड़ा। कारण यह कि पूरे परिवार का भार मात्र उनके ही कंधों पर था। उस समय आज की अपेक्षा अध्यापकों का वेतन बहुत कम था। परिवार बड़ा था और उसी वेतन में पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति करनी थी, साथ ही साहित्यिक सेवा भी। इस प्रकार 'निशिहर' जी के लिए अपनी लेखनी को बनाये रखना कठिन कार्य था परन्तु 'निशिहर' जी अपने सन्तोषी स्वभाव के कारण जो भी उनके पास था उसी में प्रसन्न रहते और विपरीत परिस्थितियों से तालमेल बैठाते हुए जीवन में आगे बढ़ते रहें।

'निशिहर' जी की साहित्यिक लेखनी को निरन्तरता देने के लिए सदैव उनके माता–पिता, परिवार, पत्नी, मित्र, साथियों ने उन्हे हमेशा प्रोत्साहित किया। उनका हौसला बढ़ाया, साथ ही उनका सहयोग भी किया। 'निशिहर' जी ने जनपद, प्रदेश, देश ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपने कृतित्व की छाप छोड़ी है। आप अवधी में केवल लिखते ही नहीं है बल्कि राष्ट्रीय मंचो पर अपने काव्यपाठ से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर खूब वाहवाही समेटी क्योंकि आपके काव्यपाठ करने का ढंग अनूठा है।

जहाँ तक व्यक्तिगत रूप से मैने 'निशिहर' जी के विषय में जो जानकारी प्राप्त की हैं, उसमें आपकी कुछ कविताएँ व कहानियाँ आकाशवाणी व दूरदर्शन पर भी प्रसारित हुई हैं। आप अवधी के चलते–फिरते शब्दकोश है।

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' बैसवारे की परम्परा अनुसार धोती, कुर्ता सदरी व पैरों में नागरे की पनही धारण करते हैं। प्रायः आपकी पोशाक धवल रंग की ही होती है। मस्तक पर लाल रंग का चन्दन आपके व्यक्तित्व पर अजब निखार लाता है, साथ ही 'निशिहर' जी पान खाने के बड़े शौकीन हैं। आप वार्तालाप करते समय ज्यादातर बैसवारी अवधी का प्रयोग करते है और दूसरों को अवधी बोलने के लिए प्रेरित करते है। यह अनुभव मुझे 'निशिहर' जी से वार्तालाप के दौरान हुआ। आपके वार्तालाप की शैली अत्यन्त मनोविनोदी हैं। आप बहुत ही सहज और सरल व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हैं। वर्तमान समय में आप के पास भौतिक सुख–सुविधाओं से परिपूर्ण जीवन है परन्तु आप इनका दरुपयोग नहीं करते हैं। आज भी उम्र के इस पड़ाव में आप अपने कार्य साईकिल से निपटा लेते हैं। आवश्कता पड़ने पर ही सुविधाओं का लाभ लेते है।

'निशिहर' जी पर्यावरण के प्रति भी सजग हैं। इन्होंने अपनी पुस्तक "बिरवा तरे" अवधी गीत संग्रह के तीसरे खण्ड में 'चलाइत सैकिल' में साइकिल की महत्ता को बतलाया है।

'निशिहर' जी कभी परिस्थितियों के दास नहीं रहें। बसन्त खेड़ा जैसे गाँव जहाँ न बिजली है, न पानी है, न शिक्षा है, आधुनिकता से कोसों दूर, उन परिस्थितियों से जूझकर कई–कई मील पढने के लिए पैदल जाना वापस आकर पिता के कार्यों में हाथ बँटाना फिर समय निकाल कर पढ़ाई करना कठिन तो था परन्तु असम्भव नहीं उन्होंने यह कर दिखाया और आप विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल कर आत्मनिर्भर बने। ये सब उनके व्यक्तित्व को और निखारता है। शरीर भल पतला–दुबला है पर आँखो में आज भी कुछ न कुछ करते रहने की चमक बरकार है और आप लगातार साहित्य–सृजन में प्रयासरत हैं जिससे समाज को कुछ न कुछ मिलता रहें।

'निशिहर' जी का साहित्य से जुड़ाव बालपन से ही रहा हैं उनके साथ घटित घटनाएँ उन्हें साहित्य–सृजन के लिए प्रेरित करती रही हैं। आपने अपने आसपास घर–परिवार, समाज, देश में जो देखा, अनुभव किया उसे साहित्य में चित्रित किया। निशिहर जी ने जीवन में विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों का सामना किया। जीवन संघर्षों से भरा रहा इसके बावजूद उन्होंने साहित्य सृजन में अपनो विलक्षण बुद्धि का परिचय दिया आपकी असाधारण प्रतिभा का परिचय आपके कृतित्व में देखने को मिलता है। आप विभिन्न संस्थाओं से जुडे है और साहित्यिक कार्यक्रमों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेते हैं, साथ ही साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित भी कराते हैं।"

निशिहर जी की प्रकाशित मौलिक पुस्तकें :–

- टुकवा (अवधी काव्य)
- बिरवा तरे (अवधी गीत)
- म्वार नाव आजाद (अवधी खंडकाव्य)
- राना बेनी माधौ (अवधी खंडकाव्य)
- पहिले खुद का सुधारौ (अवधी एकांकी संग्रह)
- महतारी के मंसा (अवधी कहनियाँ)

- खुब कमाव खुब छानौ घ्वाटौ (अवधी मुक्तक)
- नीकि दिन अइहैं (अवधी हाइकु–उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत)
- घुनघुना (अवधी बालगीत)
- साथ का पढ़इया (अवधी कथा संग्रह–उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत)
- प्याट के भीतर पेंडु (अवधी बरवै संग्रह)
- एकउटनि (अवधी गजल संग्रह)
- पद्यहार (काव्य संकलन)
- परतंत्रता नहीं स्वीकार (खण्डकाव्य)
- निर्माण देव विश्वकर्मा बावनी (काव्य)
- वास्तुदेव विश्वकर्मा शतक (काव्य)
- पढ़ेंगे हम भी (बालकाव्य)
- हाइकु छन्दार्क (हाइकु गीत, गजल)
- हार न माने (हाइकु संग्रह)
- संघर्षों का खेल (दोहा संग्रह)
- बच्चे गायें (बालगीत)
- घंटी टुनटुनाओं (शिशु गीत संग्रह)
- समय के शब्द (लघुकथा संग्रह)
- पंक में पंकज (गीत संग्रह)

समवेत संकलनों में सहभागिता :–

- चिंदी–चिंदी जिन्दगी (पटना, बिहार)
- रायबरेली की हाइकु–साधना
- नखत–3 (बाराबंकी उ.प्र.)
- हाइकु हंस (रायबरेली, उप्र.)

- कुछ ऐसा हो (पटना–बिहार)
- सच बोलते शब्द (पटना, बिहार)
- अवधी–सप्तर्षि (सुलतानपुर, उ.प्र.)
- शहीद शौर्य वंदन (रायबरेली, उ.प्र.)
- जनिका लघुकथा संग्रह (मुम्बई, महाराष्ट्र)
- शतरूपा (बड़ोदरा, गुजरात)
- राधा माधव भाव सागर (बरेली, उ.प्र.)
- प्रेम के झरोखे से (बरेली, उ.प्र.)
- अपनी कविता–सबकी व्यथा (बेलग्राम, कर्नाटक)
- रायबरेली–21 वीं सदी
- उन्नाव समग
- साहित्यांगन (ग्वालियर, मध्य प्रदेश)
- ये दोहे गूंजते से (महाराष्ट्र)

निम्नलिखित संस्थानों द्वारा प्राप्त पुरस्कार/सम्मान :–

- उत्तर प्रदेश संस्थान द्वारा मलिक मोहम्मद जायसी पुरस्कार 2013
- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा "मलिक मोहम्मद जायसी पुरस्कार–2015
- भूटान में परिकल्पना साहित्य सम्मान–2014
- विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ भागलपुर (बिहार) द्वारा उज्जैन (मध्य प्रदेश) में विद्यावाचस्पति (मानद डाक्टरेट) सम्मानोपाधि–2014
- साहित्यांचल संस्थान भीलवाड़ा (राजस्थान) द्वारा "जीवनलाल नरेड़ी स्मृति सम्मान"–2015
- सामयिकी संस्थान भीलवाड़ा (राजस्थान) "सामयिकी सम्मान"–2015
- नेपाल में अवधी सांस्कृतिक प्रतिष्ठान द्वारा "साहित्य सेवा सम्मान"–2016

- पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी शिलांग (मेघालय) द्वारा "महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान–2016
- ज्ञानोदय साहित्य संस्था बेलगाँव (मेघालय) द्वारा "ज्ञानोदय साहित्य सेवा सम्मान–2016
- माँ वीणापाणि साहित्य परिषद मलकेगाँव रायबरेली (उत्तर प्रदेश) द्वारा "वीर डाले सम्मान"–2016
- विद्या प्रकाश स्मारक सेवा संस्थान बाराबंकी (उत्तर प्रदेश) द्वारा "साहित्य शिरोमणि सम्मान"–2015
- अवधी अकादमी गौरीगंज–अमेठी (उत्तर प्रदेश) द्वारा जुमइ खाँ आजाद सम्मान– 2015
- दिल्ली में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी राष्ट्रीय स्मारक समिति रायबरेली (उ.प्र.) एवं राइटर्स एण्ड जर्नलिस्ट एसोसियेसन दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से "रमई काका स्मृति पुरस्कार"–2017
- के0बी0 हिन्दी साहित्य समिति बिसौली, जिला बदायूँ (उ.प्र.) द्वारा अवधी वारिधि सम्मान"–2017
- महामाया प्रकाशन रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा "साहित्य महामहोयाध्याय सम्मानोपाधि"–2017
- वंशीधर शुक्ल स्मारक समिति मन्योरा जिला लखीमपुर (उ.प्र.) द्वारा "अवधी परिधि सम्मान"–2017
- नौनिहाल सेवा संस्थान रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा "बैसवारा श्री सम्मान"–2012
- जनमंच बछरावाँ, रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा "जनभारती सम्मान"–2012
- सरिता लोक सेवा संस्थान सुल्तानपुर (उ.प्र.) द्वारा "जनभारती सम्मान"–2012
- शिक्षा साहित्यकला विकास समिति श्रावस्ती (उ.प्र.) द्वारा "सरस्वती साधक सम्मान"–2010
- अंजली महिला सेवा संस्थान बलरामपुर (उ.प्र.) द्वारा "सरस्वती साधक सम्मान "–2010
- अवध भारती संस्थान नरौली, हैदरगढ़ जिला बाराबंकी (उ.प्र.) द्वारा "काव्य श्री सम्मान"–2009

- अखिल भारतिय साहित्य साधना समिति अमाँवा रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा "काव्य श्री सम्मान"–2009
- आधुनिक रसखान अब्दुल रशीद खाँ स्मृति संस्थान रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा "साहित्य भारती सम्मान"–2009
- रविन्द्रनाथ टैगोर साहित्य मंच रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा सम्मान–2009
- अमर शहीद लालचन्द्र स्वर्णकार शोध संस्थान रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा सामाजिक सम्मान–2005
- अवध भारती समिति नरौली, हैदरगढ़ बाराबंकी (उ.प्र.) द्वारा अवधी श्री सम्मान–2008
- सरस्वती प्रतिष्ठान रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा "सरस्वती सम्मान"–2006

प्रशास्ति पत्र–सम्मान

- अखिलेश स्वास्थ्य एवं साहित्य सेवाश्रम रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा सम्मान–2003
- श्री नर्मदेश्वर मंदिर–आश्रम सेवा संस्थान जंगली खेड़ा, लखनऊ (उ.प्र.) द्वारा सम्मान–2006
- आनंद नगर उत्थान समिति रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा सम्मान–2006
- साहित्यकार कल्याण परिषद रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा सम्मान 2007
- प्रभुटाउन यूथ क्लब रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा सम्मान–2010
- पच्चीसवीं वाहिनी पी.ए.सो. रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा सम्मान–2011
- संजीवनी एजूकेशन एण्ड वेलफेयर सोसामटी रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा सम्मान–2011
- जिला सैनिक बोर्ड एवं पुनर्वास रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा सम्मान–2012
- अन्तर्राष्ट्रीय संस्था "स्टार एजूकेशन" द्वारा सम्मान–2015
- शहीद स्मृति मेला समिति मुशीगंज, रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा सम्मान–2015
- श्री विश्वकर्मा पाँचाल महासभा (उ.प्र.) द्वारा सम्मान–2015
- रायबरेली महोत्सव समिति (उ.प्र.) द्वारा सम्मान–2015

- भारत नेपाल अवधी परिषद (अन्तर्राष्ट्रीय संस्था) द्वारा चित्रकूट के जगतगुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय में सम्मान–2016
- बाल साहित्य संस्थान अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) में सम्मान–2016
- यूथ एक्टिीविटी फोरम रायबरेली (उ.प्र.) द्वार सम्मान–2018
- उद्योग व्यापार मंडल डीह, रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा सम्मान–2018
- जिला सैनिक बोर्ड एवं पुनर्वास–अमेठी (उ.प्र.) द्वारा सम्मान–2018
- भारतीय ब्राह्मण सेवा संस्थान रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा सम्मान–2018
- अहिसास–नासिक महाराष्ट्र द्वारा साहित्य श्री सम्मान–2019

निम्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएँ

- अवध ज्योति (त्रैमासिक)–हैदरगरढ़ , बाराबंकी (उ.प्र.) से प्रकाशित।
- राष्ट्र समर्पण (मासिक)–नीमच (मध्य प्रदेश) से प्रकाशित।
- साहित्य समीर दस्तक (मासिक)–भोपाल (मध्य प्रदेश) से प्रकाशित।
- अभिनव बालमान (त्रैमासिक)–अलीगढ़ (उ.प्र.) से प्रकाशित।
- बाल प्रहरी (त्रैमासिक)–अल्मोड़ा (उ.प्र.) से प्रकाशित।
- अदबी माला (मासिक)–मुक्तसर (पंजाब) से प्रकाशित।
- प्राची–प्रतिभा (मासिक)–लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित।
- चेतना स्त्रोत (त्रैमासिक)–लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित।
- नए क्षितिज (त्रैमासिक)–बदायुँ (उ.प्र.) से प्रकाशित।
- शब्द सामयिकी (त्रैमासिक)–भीलवाड़ा (राजस्थान) से प्रकाशित।
- साहित्यांचल (द्विमासिक)–भीलवाड़ा (राजस्थान) से प्रकाशित।
- ज्ञान–विज्ञान बुलेटिन (मासिक)–अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।
- अदबी उड़ान (त्रैमासिक)–उदयपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।
- दिव्यता (मासिक)–लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित।

- जोंधइया (त्रैमासिक)–लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित।
- विश्वकर्मा संघ (त्रैमासिक)–फरीदाबाद (हरियाणा) से प्रकाशित।
- साहित्य साधना (त्रैमासिक)–हरदोई (उ.प्र.) से प्रकाशित।
- नयी लेखनी (अब अनियतकालीन)–बरेली (उ.प्र.) से प्रकाशित।
- गीत गुंजन (त्रैमासिक)–कानपुर (उ.प्र.) से प्रकाशित।
- अमृतायन (त्रैमासिक)–लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित।
- महाप्राण (वार्षिकी)–डलमऊ, रायबरेली (उ.प्र.) से प्रकाशित।
- दमयंती (त्रैमासिक)–रायबरेली (उ.प्र.) से प्रकाशित।
- बैसवारा टाइम्स (पाक्षिक)–रायबरेली (उ.प्र.) से प्रकाशित।

: विशेष :

- भूटान एव नेपाल की साहित्यिक यात्राएँ।
- बाल साहित्य संस्थान अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) के राष्ट्रीय बाल साहित्य सम्मेलन में 10 जून 2016 को 'बच्चे और बाल साहित्य' पर वक्तव्य एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन की अध्यक्षता।
- भारत–नेपाल अवधी परिषद द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यिक परिचर्चा के अन्तर्गत जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट में अवधी लोकगीतों में नारी विषय पर पाँच अक्टूबर 2016 को वक्तव्य।
- पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी शिलांग (मेघालय) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय हिंदी विकास सम्मेलन की काव्यपाठ प्रतियोगिता में 28 मई 2016 को मेडल प्राप्त।
- उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा दो बार मलिक मोहम्मद जायसी पुरस्कार प्राप्त।
- नेपाल–भूटान में सम्मान प्राप्त।
- देश के विभिन्न प्रदेशों से प्राप्त 58 सम्मान।
- सोलह समवेत संकलनो में सहभागिता।

इस प्रकार आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' ने अपना जीवन संघर्षो के साथ प्रारम्भ किया। पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा क्षेत्रीय परिवेश ने इन्हें आत्मबल प्रदान किया। अपनी बोली–बानी अवधी के प्रति इनके लगाव ने इन्हें ऊचाइयाँ प्रदान की। पुरस्कारों तथा सम्मानों ने इन्हें लक्ष्य की ओर बढ़ने में उत्प्रेरक के रूप में मदद की। परिणामस्वरूप अवधी के आधुनिक उन्नायकों में इनकी प्रमुख रूप से गणना की जाती है।

अवधी रचनाकारो में 'निशिहर' जी का स्थान :–

'निशिहर' जी आधुनिक काल के सशक्त अवधी साहित्यकारों में से एक हैं। आपने अवधी जगत को अपनी अनेक रचनाओं से अभिसिंचित किया। 'निशिहर' जी ने गद्य एवं पद्य दोनों में लिखा है जो समाज को जागरूक करने का कार्य करते हैं। आपका यह योगदान उल्लेखनीय हैं।

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' जी के अतिरिक्त अवधी के अन्य साहित्यकार भी अवधी साहित्य के विकास में प्रयासरत हैं जिनमें प्रमुख रूप से डॉ. राम बहादुर मिश्र, डॉ. ज्ञानवती दीक्षित, जगदीश पीयूष, आद्या प्रसाद सिंह 'प्रदीप', डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित, आद्या प्रसाद मिश्र 'उन्मत', इन्द्र बहादुर सिंह 'इन्द्रेश', डॉ. अशोक अज्ञानी, डॉ. विनय दास, ओम प्रकाश जयंत, डॉ. रश्मि शुक्ला 'शील', चन्द्र प्रकाश पाण्डेय, डॉ. प्रताप नारायण अवस्थी, दिनेश उन्नावी, डॉ. भारतेन्दु मिश्र, सत्यधर शुक्ल, सुशील सिद्धार्थ, डॉ. गौरीशंकर पाण्डेय 'अरविन्द', विद्याबिन्दु सिंह, फारुख सरल, अजय प्रधान, कोमल शास्त्री, जुमई खाँ आजाद, डॉ. सुरेश प्रकाश शुक्ल, कृष्णमणि चतुर्वेदी 'मैत्रेय', रामकेवल वर्मा 'लहरी' आदि।

डॉ. श्याम सुन्दर मिश्र ने अवधी साहित्य का इतिहास लिखकर अवधी साहित्य को ऊँचाई प्रदान की तो दूसरी ओर डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने अवधी में बड़ी संख्या में शोधकार्य कराकर अवधी साहित्य के मार्ग को प्रशस्त किया।

इन सभी अवधी साहित्यकारों के मध्य आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' के अवधी साहित्य को किसी भी दृष्टि से कमतर नहीं कहा जा सकता। गुणवत्ता और परिमाण दोनों ही दृष्टियों से इनका साहित्य मौलिक और लोकोपयोगी है। आपने कविता के अतिरिक्त कहानियाँ, नाटक, गजल, एकांकी, बरवै संग्रह, हाइकु, बालगीत आदि लिखकर अवधी साहित्य में वृद्धि की। आपका साहित्य भावपक्ष और कलापक्ष दोनों ही दृष्टियों से उच्चकोटि का है। अवधी

साहित्य के प्रति इनके समर्पण को देखकर उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य संस्थान ने इन्हें दो बार पुरस्कृत किया है जो इनके साहित्य की उपादेयता को प्रमाणित करता है।

निष्कर्षतः आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' अवधी के अन्य साहित्यकारों की भाँति अपनी रचनाओं के माध्यम से अवधी साहित्य का शिखर पर पहुँचाने का कार्य कर रहें हैं।

तृतीय अध्याय
आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' की रचनाओं का परिचयात्मक विवेचन

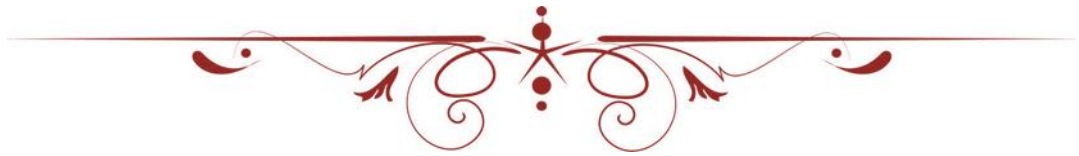

तृतीय अध्याय

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' की रचनाओं का परिचयात्मक विवेचन

अवधी एक प्रभावशाली बोली है और अवधी साहित्य सामान्य जनजीवन से जुड़ने के कारण अत्यंत लोकप्रिय है। अवधी की लोकप्रियता को देखते हुए अवधी बोली को संविधान की आठवी अनुसूची में भाषा के रूप में सम्मिलित करने की मांग उठाई जा रही है।

अवधी हिन्दी की उपभाषा अथवा पूर्वी हिन्दी की एक बोली के रूप में जानी जाती है। भले ही अवधी भाषा का साहित्य में प्रारम्भ कविता स हुआ हो लेकिन वतमान में अवधी भाषा में अनेक कहानियाँ, नाटक, एकांकी, संस्मरण यात्रा वृतान्त, बालगीत, लोकगीत आदि उपलब्ध है। इससे यह माना जा सकता है कि अवधी का विकास देश में प्रगतिवादी भावना के साथ हुआ है। डॉ. ज्ञानवती के अनुसार–

"तीसरी प्रणाली सामाजिक प्रगतिवादियों की है। इनके द्वारा एक नए प्रकार की व्यंग्यात्मक रचना का आरंम्भ हो रहा है जो हिन्दी के साथ स्थानोय बोलियों का पुट मिलाकर नया प्रभाव उत्पन्न करती है जहाँ कहीं इन रचनाओं में मतविशेष के प्रचार का पक्ष प्रबल नहीं हो पाया है वहाँ इनमें एक अच्छी सजीवता दिखाई देती है।" [1]

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' हिन्दी खड़ी बोली तथा अवधी भाषा के साहित्यकार है। 'निशिहर' जी ने अपनी अवधी रचनाओं का प्रणयन ठेठ बैसवारी अवधी में किया। अब तक 'निशिहर' जी की छब्बीस पुस्तके विभिन्न विधाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं, साथ ही आपकी सोलह समवेत संकलनों में सहभागिता रही। तेइस राष्ट्रीय स्तर की पत्र–पत्रिकाओं में 'निशिहर' जी की रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' ने सर्वप्रथम अवधी पद्य कृतियों में 'टुकवा' नामक अवधी काव्य लिखा। इसके पश्च्यात् पद्य कृतियों में से एक 'बिरवा तरे' 'निशिहर' जी का अवधी गीत संग्रह है। 'बिरवा तरे' निशिहर जी की प्रतिनिधि रचना है जो पाँच खण्डो में विभक्त है जिसमें 119 अवधी गीत संकलित है।

प्रस्तुत पुस्तक में अवधी लोकधुन की स्पष्ट झलक है। ग्रामीण संस्कृति का स्वर 'बिरवा तरे' में प्रमुखता के साथ उभरा है। लोकजीवन के हर्ष–विषाद, सुख–दुख, राग–द्वेष, सामाजिक समरसता, वाह्य आडम्बर, रूढ़िवादिता, अन्धविश्वास, कुरीतिया, राष्ट्रीय चेतना, नारी जागरण, परिवार नियोजन, प्रदूषण, राजनैतिक विसंगतियाँ, भ्रष्टाचार आदि का लेखा–जोखा उनको इस रचना में देखा जा सकता है। 'निशिहर' जी ने सामान्य जनजीवन का बड़ा ही सहज चित्रण

अपने गीतों के माध्यम से किया है। 'निशिहर' जी ने दूसरे खंड़ में जापानी छंद हाइकु का अभिनव प्रयोग कर गेय गीतो की सर्जना की है। सामाजिक विसंगतियों और विडम्बनाओं पर उन्होने बड़ी बारीकी से कलम चलायी है, साथ ही समाज में व्याप्त ज्वलंत मद्दों को दर्शाया। प्रदूषण और जनसंख्या वृद्धि दोनो ही ऐसी राष्ट्रीय समस्या है, जो हम सबके समक्ष एक चुनौती के रूप में खड़ी है। ग्लोबल वार्मिंग की चिन्ता वैज्ञानिकों को सता रही है। 'निशिहर' जी इन समस्याओं पर चिंतन करते हुए अपने अवधी गीत 'परदूसनु विपदा बढ़ावत' में लिखते है–

"परदूसन, विपदा बढ़ावत जइसे बैरी।
रातिउ दिन लगदा लगावत जइसे बैरी।।" [2]

'निशिहर' जी ने भ्रष्टाचार को उजागर करते हुए कहा कि भ्रष्टाचार चरम पर है। दलाली, घूसखोरी ने आदमी को स्वार्थ के कीचड़ में ढकेल दिया है। 'निशिहर' जी ने 'बिरवा तरे' के गीत 'चलति है घुइस जहाँ' में लिखते है–

"सहिउ काम
होई पावत नाँही
चलति है घुइस जहाँ।
ऊपर तरे बेइमानी का
बउड़रु आवत है
दीन हीन की ऑखिन मा
बहु गरदा झवॉकत है
तिलमिलात
कुहु सूझत नाहीं
ढॅनगत जहॉ तहॉ।।" [3]

वस्तुतः 'निशिहर' जी अवधी संस्कृति में रचे बसे सजग रचनाकार है। देशज शब्दों की बानगी इनकी रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता है। बैसवारी अवधी भाषा के अनायास दर्शन इनकी रचनाओं में हो जाते है।

'म्वार नाव आजाद' आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' का अवधी खण्ड काव्य है। अवध क्षेत्र के शूरवीर क्रान्तिकारियों ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका

निभायी थी। अवध का बैसवारा क्षेत्र क्रान्तिकारियो का गढ़ था। इसी उर्वर भूमि ने महान क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद को पैदा किया। चन्द्रशेखर आजाद वस्तुतः क्रान्तिनायक थे। घार अभावों के बीच उन्होने बड़ी कुशलता के साथ क्रान्तिकारियों का नेंतृत्व किया। उनकी रणनीति और सूझबूझ ने फिरंगियों को बेबस कर दिया था। आजाद का बलिदान आजादी का हेतु बना। ऐसा महान भारतीय सपूत एक महानायक के रूप में जाना जाता है। आजाद के चरित्र पर अनेकशः काव्य कृतियाँ लिखी गयी है। उसी श्रृखला में बैसवारा क्षेत्र के वरिष्ठ अवधी कवि आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' की कृति 'म्वार नाव आजाद' एक अनूठी अवधी कृति है।

'म्वार नाव आजाद' छः सर्गो मे विभक्त कृति है जिसका कथानक आजाद के जन्म से लेकर उनके बलिदान तक की गाथा को बड़े ही सहज प्रभावी एक प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करता है। इस कृति के अधिकांश सर्गो में ओज छंद आल्हा का प्रयोग किया गया है, और इसे गायको के लिए भी गेय बना दिया गया है।

"सीताराम सुवन भा ठाढ़ा।
भरा देशभगति रस गाढ़ा।।
हिरदय बाज जोस का डंका।
चला बाघु अस बीर असंका।।" [4]

'निशिहर' जी ने अल्फ्रड पार्क इलाहाबाद में हुई घटना की चर्चा इस कृति में की है जिसमें आजाद ने अभिमन्यु की तरह अंग्रजो का मुकाबला किया और अन्तिम गाली दाग कर देश के लिए उत्सर्ग हो गयें।

इसी क्रम में आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' ने एक और अवधी खण्ड काव्य 'राना बेनी माधौ' की रचना की जो अवध केसरी नर पुंगव सत्तावनी क्रांति के अमर नायक राना बेनी माधव के वीरत्व पर आधारित है। बैसवारे की माटी और परिपाटी से प्रभावित होकर ठेठ बैसवारी अवधी भाषा में 'निशिहर' जी ने इस नर–नाहर पर अपनी लेखनी चलाई है।

'राना बेनी माधौ' खण्ड काव्य का कथानक प्राचीन तो नही किन्तु ऐतिहासिक अवश्य है। इसका कथानक संगठित एवं क्रमिक हाने के साथ ही घटना विशेष पर प्रकाश डालता है। यह प्रसिद्ध है कि शंकरपुर के राना साहब के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना फिरंगियो से टक्कर लेना थी। किसी कवि ने राना बिरझाना संग लीने तोपखाना कहकर इसकी पुष्टि की

है। लगभग दो वर्ष के युद्ध संबंधी इस घटनाक्रम को लेकर अब तक अनेक काव्य कृतियो का प्रणयन हो चुका है लेकिन लोकभाषा (ठेठ बैसवाड़ी अवधी) में राना बेनीमाधव पर यह प्रथम खण्ड काब्य है जिसमें नवीन उद्‌भावनायें भी दर्शायी गयी है।

कवि ने अत्यंत कुशतला के साथ सम्पूर्ण घटना को आठ सर्गो में विभक्त कर अपनी प्रबन्ध शक्ति का परिचय दिया ह। प्रारम्भ के छन्दो में ही राना साहब का जो चित्र खीचा गया है, वह जीवन्त है–

"अवध क मरदाना राना बेनी माधव बक्स
क्र्र अंगरेजन के जुलुम निहारिकै।
घेरि–घेरि मारि–मारि देस ते निकारै बरे
लावै क आजादी फौज अपनी सुधारिकै।
निसिहर अंग–अंग जंग कै उमंग भारि
चढिकै तुरंग, भाला–तरवारि धारिकै।
स्वाभिमान–सान का निसान बलवान बड़ा
क्द समरांगन मा बीरू लल्हकारिकै।" [5]

'निशिहर' जी रस सिद्ध कवि है। जिस रस में लिखते है उसे सजीव कर देते है। 'राना बेनी माधौ' खण्ड काव्य का अंगी रस वीर है अतः वीर रस का सम्पूर्ण खण्ड काव्य में परिपाक हुआ है।,

कवि का यह मानना है कि इस क्रांन्ति में राना बेनी माधव का साथ सामान्य जनमानस ने भी दिया। इससे राना बेनी माधव को अंग्रेजो के विरुद्ध पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई। मनहेरू के स्वर्णकार–वंश–भूषण लालचन्द्र, हीरा पासी, खद्‌दर–भद्‌दर यादव, शिवदीन, रघुनाथ आदि ने राना बेनी माधव का भरपूर सहयोग किया। हीरा पासी जैसे अनपढ़ ने भी उस समय राना बेनी माधव के मनोभावों को समझा और राष्ट्रीय यज्ञ में अपनी सहभागिता दी। प्रत्येक धर्म और जाति के लोगो ने मिलकर इस संघर्षपूर्ण क्रांन्ति में राना बेनी माधव का सहयाग किया।

'निशिहर' जी आचार्य कवि है फिर भी उन्हें अपनी बोली बानी से बड़ा लगाव है। 'निशिहर' जी का यह खण्डकाव्य इस बात का साक्षी है। बैसवाड़ी अवधी में खण्डकाव्य की रचना कर कवि ने अपनी माटी और बाली के प्रति आभार व्यक्त किया है।

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' ने अवधी भाषा में अवधी मुक्तक 'खुब कमाव खुब छानौ घ्वाटौ' नामक मुक्तक संकलन की रचना की। मुक्तक काव्य या कविता का वह प्रकार है जिसमे प्रबन्धकीयता न हो। इसमें एक छन्द में कही गयी बात का दूसरे छन्द में कही गयी बात से कोई सम्बन्ध होना आवश्यक नही। कबीर एवं रहीम के दोहे; मीराबाई के पद्य आदि सब मुक्तक रचनाएँ है। अग्निपुराण में मुक्तक को परिभाषित करते हुए कहा गया कि–

'मुक्तक श्लोक एवैक श्रमत्कारक्षमः सताम अर्थात् चमत्कार की क्षमता रखने वाले एक ही श्लोक को मुक्तक कहते है। 'निशिहर' जी की कृति 'खुब कमाव खुब छानौ घ्वाटौ' में 308 मुक्तक है और अवधी में लिखे गये मुक्तक में प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण में तुकान्त होता है। चतुर्थ चरण तक पहुँचते–पहुँचते मुक्तक अपने चरम पर पहुँच जाता है और चौथे चरण में प्रतिफलित हो जाता है–

"कबहुँ आलसु चिरइया करती नहिन।
जल्द सोउबु व जागबु बिसरती नहिन।
खाती पीती मगन गउती गउनई
दुख क अनुभौ छिनौ भरि क करती नहिन।।"[6]

प्रस्तुत पुस्तक की विषय–वस्तु भी संस्कार, शिक्षा, प्रकृति, पर्यावरण, प्रदूषण, सामाजिक सद्भाव, लोकतंत्र, जीवो पर दया, स्त्री–विमर्श आदि पर आधारित है। आज जब सन्तानें वृद्धावस्था में अपने माता–पिता को उपेक्षित कर रही है तब 'निशिहर' जी बोल पड़ते हैं–

"सब जने मात– सेवा करैं।
मूडु वहिके चरन मा धरैं।
देति आसीस संतान का
कबौ विपदा न ऊपर परै।।"[7]

अवधी पद्य कृतियो के क्रम में आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' ने 'नीक दिन अइहै' नामक अवधी हाइकु लिखा जो उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत है। यह अवधी भाषा में लिखी गई प्रथम हाइकु कविता है। हाइकु मूलरूप से जापानी कविता है, हिन्दी हाइकु तीन पंक्तियों में लिखी जाती है। पहली पंक्ति में 5 अक्षर, दूसरी मे 7 अक्षर और तीसरी पंक्ति 5 अक्षर। इस प्रकार कुल 17 अक्षर की कविता होती है। 'निशिहर' जी ने भी हिन्दी हाइकु की

तर्ज पर अवधी हाइकु की रचना को। अवधी हाइकु कविता में भी तीन चरन सत्रह अक्षर होते हैं।

'निशिहर' जी के कविता 'नीकि दिन अइहै' में लगभग 528 हाइकु है। हाइकु 3–7–5 वर्णों का छोटा सा छन्द है जो त्रिपदोय के नाम से भी जाना जाता है। कुछ विद्वान मानते है कि यह जापानी छन्द है परन्तु शम्भू शरण द्विवेदी के अनुसार यह भारतीय छन्द है।

"मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि हाइकु मूलतः जापानी छन्द है अथवा हाइकु विश्व का सबसे लघु छन्द है। कुछ सुधीजनो ने तो अनजाने में यह भी कह दिया कि त्रिपदी छन्द अन्यत्र नही है जबकि वेदों की रचना में त्रिपदी छन्द का प्रयोग प्रचुरता से किया गा है।" [8]

प्रस्तुत संग्रह का कथ्य भी पूर्व की पुस्तको की तरह समाज–सुधार पर आधारित है। स्वयं 'निशिहर' जी सप्त पदी हाइकु छन्द के बारे में लिखते है –

"जबै चहेन/भारत करि बासी/लिखवइया।
जापानी छंदु/हाइकु चला आवा/अपनावा गा।
सत्रा बरन/यहिमा है लागति/तीनि चरण।" [9]

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' बाल सहित्य लिखने में भी सिद्धहस्त है। बाल साहित्य के अन्तर्गत वह शिक्षाप्रद साहित्य आता है, जिसका लेखन बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर किया गया हो। बाल साहित्य में रोचक शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ, बाल गीत व कविताएँ प्रमुख है। हिन्दी साहित्य में बाल साहित्य की परम्परा बहुत समृद्ध है। पंचतंत्र की कथा बाल साहित्य का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। पंचतंत्र की कहानियों में पशु–पक्षियो को माध्यम बनाकर बच्चों को बड़ी शिक्षाप्रद प्ररणा दी गई है।

हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार मैथिलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, हरिवंश राय बच्चन, मोहन राकेश जैसे साहित्यकार भी बच्चो के प्रेम से अछूत न रहे और बच्चो को प्रेरित करने के लिए बाल कविताएँ लिखी। बच्चन जी की बाल कविता 'चिड़िया का घर' की कुछ पंक्तियाँ–

"चिड़िया ओ चिड़िया
कहां है तेरा घर ?
उड़ उड़ आती है
जहां से फर–फर।" [10]

हिन्दी साहित्यकारों की भाँति 'निशिहर' जी ने भी बैसवाड़ी अवधी में अवधी बालगीत पुस्तक 'घुनघुना' नामक पुस्तक जो कि अवधी बाल कविताओं का संग्रह है। 'निशिहर' जी अपनी यह पुस्तक बच्चों को समर्पित करते हुए लिखते है–

"जगै बढ़ै फूलै फरि पाकै
सब मा प्रतिभा–बिया अबिकसित।
जिनते है समाज का आसा
उन बच्चन क घुनघुना अरपित।"

पुस्तक में बच्चों को प्रिय लगने वाली तथा उन्हें प्ररणा प्रदान करने वाली तथा छोटे–छाटे शीर्षक पर लिखी गई कविताएँ प्रभावशाली है जैसे–चीटी, गदहा, ऊँट काका, कबड्डी, खेली, बँदरिया–बंदरवा, कूकुरु–बिलारी, चाँद मा घूमै क जइवै आदि कविताएँ बच्चों के जीवन से सम्बन्धित कुछ न कुछ सन्देश देती है जैसे 'निशिहर' जी ने 'बनी' कविता में शिक्षा के महत्व को इस प्रकार बताया–

"काम सिखी गुनवान बनी।
यहि जग मा पहिचान बनी।।
नीक बेकार का हम जानी
कहै न कोऊ अग्यानी
पढ़ि लिखि कै बिदवान बनी।।" [11]

बच्चों का मन कोरा कागज होता है। बचपन में ही इनके हृदयरूपी कागज पर जो अंकित कर दिया जाता है वह जीवन भर अंकित रहता है। इसीलिए 'निशिहर' जी ने कुछ संस्कारपरक रचनाएँ भी लिखी है। वे लड़कियों की शिक्षा के पक्षधर है उनकी एक कविता 'पढ़ति बिटिया' दृष्टव्य है–

"पढ़े नहिन बप्पा महतारी
मुला पढ़ति बिटिया सिउ प्यारी
राजु सबेरे जल्दी जागति।
खोलि किताबै मन ते बाँचति।।" [12]

'प्याट के भीतर पेंडु' आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' का अवधी बरवै संग्रह है। बरवै अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इसके प्रथम एवं तृतीय चरण में 12–12 मात्राएँ द्वितोय एवं चतुर्थ चरण मे 7–7 मात्राएँ होती है। सम चरणों के अन्त में 'जगण' होता है।

गोस्वामी तुलसीदास की प्रसिद्ध रचनाओं में से एक 'बरवै रामायण' बरवै छन्दों में ही रची गई है जिसमें भगवान श्रीराम की कथा है।

"चम्पक हरवा अंग मिलि, अधिक, सुहाय।
जानि परै सिय हियरे, जब कुंभिलाय।।" [13]

छन्द कविता का व्याकरण हैं। काव्य में छन्दों का महत्व हर रूप में सुरक्षित है। प्राचीनकाल में तो छन्दो की इतनी महत्ता थी, कि विद्वान कहा करते थे–

"अपि मांष मषं कुर्यात, छन्दोभंग न कारयेत्।"

अर्थात 'माष' के स्थान पर मष भले ही प्रयुक्त हो, किन्तु कवि को छन्द भंग नही करना चाहिए।" [14]

'प्याट के भीतर पेंडु' पुस्तक के सभी बरवै सामाजिक विसंगतियों, विद्रूपताओं, राजनैतिक अव्यवस्था आदि पर आधारित है। वर्तमान बेरोजगारी पर प्रहार करते हुए निशिहर जी लिखते है –

"घूमति ढूंढॅति रोजुइ सबै जुवानि।
कामु न हाथ क पावति मति चकरानि।।" [15]

कुछ विद्वानों ने नई कविता में छन्दो को औचित्यहीन माना। उनका यह कहना है कि छन्दो में भावो को बांधने से कविता का वास्तविक सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। ऐसे विचार वाले विद्वानों के लिए यह पुस्तक चुनौती के रूप में है।

'प्याट क भीतर पेंडु' पुस्तक 'निशिहर' जी ने अपनी पूज्या माता (चन्द्रकला जी) को समर्पित की है –

"जिनते जनमु मिला वी करूनाधम।
जननी चन्द्रकला का बिनत प्रनाम।।"

'एकउटनि' आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' का अवधी गजल संग्रह है। वास्तव में गजल फारसी, अरबी और उर्दू से होते हुए हिन्दी में आयी।

प्रारम्भिक दौर में हिन्दी गजलें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बदरी नारायण, प्रमधन और श्रीधर पाठक ने लिखी बाद में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' एवं जयशंकर प्रसाद जी ने। हिन्दी में गजल के प्रतिष्ठित हो जाने पर अनेक मूर्धन्य कवियो ने गजले लिखकर इसकी श्री वृद्धि में चार चाँद लगाये। इसके साथ ही हिन्दी की बोलियो में भी गजले लिखने का चलन बढ़ा। प्रारम्भिक दिनो में 'निशिहर' जी ने भी लगभग सड़सठ अवधी गजले लिखी जिसे एक संग्रह का रूप देकर 'एकउटनि' नाम से प्रकाशित किया और 'एकउटनि' अवधी गजल संग्रह में प्रारम्भिक विधि में गजले, हाइकु गजले, दोहा गजले जो छोटी और बड़ी दोनो प्रकार की है। 'निशिहर' जी ने नीति सम्बन्धो गजल इस प्रकार लिखी –

"कोऊ सीख बुरी सिखलायें, ना मानै।।
चाहै जेतना हंसि फुसलायें, ना मानै।।
कामु भला करि सुरू करै तनम न धन ते।
जब तक पूरा न होइ जाये ना मानै।।"[16]

'निशिहर' जी ने अवधी पद्य के साथ अवधी गद्य में भी लिखा। जिसमें 'निशिहर' जी की तीन कृतियाँ है। प्रथम 'पहिले खुद का सुधारौ' (अवधी एकांकी संग्रह), 'महतारी के मंसा' (अवधी कहानियाँ) और 'साथ का पढ़इया' (अवधी कथा संग्रह)।

कहानी कहने और सुनने की परम्परा बहुत पुरानी है। पुराने जमाने में मनोरंजन के साधन बहुत कम थे। लोग रात के पहले पहर में कहानी कहते और सुनते थे जिससे लोगो का मनोरंजन हेाता और कुछ सीखते भी। आज के समय में बहुत सी कहानियाँ लिखी जा रही जिनमें यथार्थवाद झलकता है।

'निशिहर' जी का कहानी संग्रह 'साथ का पढइया' अपने आप में अनूठा है जो आधुनिक विसंगतियों, परिवारिक कलह, आरक्षण आदि को लेकर लिखा गया है। यह कहानी संगह बैसवारी अवधी के प्रसिद्ध रचनाकार चन्द्रभूषण त्रिवेदी 'रमई काका' को समर्पित है। इस कहानी संग्रह में पन्द्रह कहानियाँ संकलित है जिसमें 'साथ का पढ़इया' विशिष्ट कहानी है जिसमे मित्रता को आधार बनाया गया है। इसी तरह 'दइ दिन कै अपसरी' कहानी में वर्तमान चुनाव व्यवस्था में फैली अव्यवस्था से परेशान प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक अपनी व्यथा को व्यक्त करते हुए कहता है –

'वी हाथे म पिस्तौल लइकै हलावै लागि। वहिका देखि कै हमारि पिंडुरी काँपिगै। बोलु छिदिगा। जंडैल के चमचा अपन कामु करै म जुटिगे। मनमानी वाट डारेन/हम तरे क मुँह केहे रहेन। मँह ते थूकु न निकरा/चलै की बेरिया जंडैलु धमकावत कहिसि, सारे! यहि बिसै म जो अपइं डैरी म कुछो लिखे तो तोरे गांवै आ कै गोली मारि दयाब।"[17]

इस तहर प्राथमिक शिक्षक की चुनाव के दौरान मिली दो दिन की अपसरी इस प्रकर की होती है जिसे अवधी भाषा में 'निशिहर' जी ने बड़े ही सुन्दर ढग से प्रस्तुत किया है।

जैसे पराये घर कै लड़की, मान मरजादा, जस बापु तस बिटियां आदि संग्रह की अन्य कहानियाँ भी पाठक के मन में छाप छोड़ती है। वास्तव में जिसका सामना लोगो को करना पड़ता है।

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' ने अवधी भाषा के साथ–साथ खड़ी बोली में भी बहुत कुछ लिखा है खड़ी बोली में भी 'निशिहर' जी की गद्य और पद्य में कृतियाँ है।

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' ने सर्वप्रथम खड़ी बोली पद्य में पद्यहार (काव्य संग्रह) लिखा। 'निशिहर' जी की कृति 'परतंत्रता नही स्वीकार' एक ऐतिहासिक खण्ड काव्य है जो राव राम बक्स सिंह के आत्मोत्सर्ग पर आधारित है। चेतावनी, रक्तिम अगवानी, युद्ध, अज्ञातवास और बलिदान नामक पाँच सर्गो में विभक्त यह खण्ड काव्य उदात्त शैली, अलंकारिक एवं सरल भाषा में लिखा गया है। यह खण्ड काव्य जहाँ प्रमुख रूप से स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी महान एवं अद्भुत व्यक्तित्व राव राम बक्स सिंह के त्याग और वीरता का बखान करता है, वही पर बैसवारे और आसपास के क्षेत्रों में चले इस संग्राम की समग्र झाकी प्रस्तुत कर देता है। चेतावनी सर्ग में कवि ने नाविक के देशप्रेम और बलिदान का चित्रण सुन्दर छन्दो में प्रस्तुत किया ह।

"सिन्धु शुचि देश भक्ति का
दिल में उसके भरा था।
प्यारी भारत माता का
लाडला रत्न खरा था।।

बैसवारे का नाविक
वीर बलिदान हो गया।
उसका निज देश भक्ति का

श्रेष्ठ इतिहास बन गया।।"[18]

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' ने जिस प्रकार अवधी भाषा में 'घुनघुना' नामक बालगीत का सजन किया उसी प्रकार संग्रह 'खेलते हंसते बच्चे' और 'बच्चे गायें' प्रकाशित हो चुके है। बालगीत 'बच्चें गायें' में निशिहर जी ने 32 बाल कविताओं का सृजन किया। सभी कविताएँ बच्चों के मन को लुभाने वाली और उन्हें गुदगुदाने वाली है। अपनी कविताओं के सृजन में 'निशिहर' जी ने इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि बच्चे कविताओं के माध्यम से अपने आसपास के वातावरण, पशु–पक्षी, पेंड–पौधों, फलो आदि के विषय में भी जाने। साथ ही इसका भी ध्यान रखा कि सरल भाषा में लिखी गई कविताएँ बच्चे आसानी से कंठस्थ कर सके। 'निशिहर' जी की बादल कविता के कुछ अंश –

"काले भूरे, भेष बनाये।
ऊपर नभ में बादल आयें।
धम धम धम धम लगे गरजने।
जीव जन्तु सब लगे निखरने।।"[19]

'निशिहर' जी ने बालगीतो के साथ–साथ बाल काव्य पर भी अपनी कलम चलाई जिसमें वे सफल रहें। निशिहर जी स्वयं प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे। इन्होंने अपने शिक्षक पद पर रहते हुए ही बालकाव्य 'पढेंगे हम भी' का प्रणयन रुचिपूर्ण शिक्षा कार्यक्रम को गीत प्रदान करने के लिए किया। इनके गीत बच्चों में मानवीय मूल्यों की स्थापना, देशभक्ति व नैतिकता की भावना की अभिवृद्धि करेंगे। साथ ही ज्ञान सम्बर्धन भी करायेंगे। इस पुस्तक में 29 कविताएँ जो सरल भाषा व लयबद्धता के साथ 'निशिहर' जी ने लिखी –

"युगों युगों तक कहने की कहानी हो गये।।
मेरे भारत में बड़े बड़े दानी हो गयें।।
रति देव दिन तमाम भूखे रहते रहे
अपना भोजन भूखों को देते रहें
करूणा सागर के वह अथाह पानी हो गयें
मेरे भारत में बड़े–बडे दानी हो गयें।।"[20]

'निशिहर' जी की इस प्रकार की लेखनी विद्यार्थियों के सस्वर वाचन में सहायक है। 'निशिहर' जी ने अपनी कविताओं में सदाचार, साक्षरता की महत्ता, लैंगिक समानता, दान, स्वास्थ्य आदि का बड़ें ही सुन्दर ढ़ग से प्रस्तुत किया।

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' ने बालगीत के साथ–साथ शिशुगीत पर भी अपनी लेखनी चलाई। 'घंटी टुनटुनाओं' और 'लाल लाल पतंग' शिशुगीत संग्रह का सृजन किया। 'निशिहर' जी ने लाल लाल पतंग कक्षा एक, दो, तीन, के विद्यार्थियों के लिए लिखा जिसमें 32 शिशु गीत है।

'पंक में पंकज' (गीत संग्रह) 'निशिहर' जी का खडो बोली का संग्रह है। इस गीत संग्रह में 62 गीत संग्रहित है। 'निशिहर' जी का गाव से हमेशा लगाव बना रहा। वे वहाँ के खेत–खलिहान व गाँव की सोंधी मिट्टी के मोह से स्वयं को कभी अलग नही कर पाये। वह उनके गीतों में झलकता है। 'निशिहर' जी अपने गीतो के माध्यम से विसंगतियों पर भी निशाना साधते है। समाज में फैली विद्रूपताओं, भ्रष्टाचारी, झूठ, बेइमानी आदि पर कविताएँ लिखते है। झूठ की नींव पर कविता से–

"झूठ की नींव पर
कीर्ति– मंदिर सुढ़ृढ़
एक भी आदमी का
नहीं बन सका।।" [21]

'निशिहर' जी ने काव्य संग्रह पद्यहार व भगवान विश्वकर्मा पर दो काव्य 'वास्तु देव विश्वकर्मा शतक', 'निर्माण देव विश्वकर्मा बावनी', 'हाइकू छन्दार्क', दोहा संग्रह 'संघर्षो का खेल' तथा 'समय के शब्द' नामक लघुकथा संग्रह लिखा जिसमें 80 लघु कथाएँ संग्रहोत है।

निष्कर्षतः आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' का रचना संसार विस्तृत एवं बहुआयामी है। साथ ही विषय वैविध्य को समेटे हुए है। 'निशिहर' जी का काव्य एवं शिल्प दोनो ही समृद्ध है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. ज्ञानवती, अवधी की आधुनिक प्रबंध काव्य धारा, देश भारती प्रकाशन दिल्ली, संस्करण –2019, पृष्ठ संख्या–14

2. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2005, पृष्ठ संख्या –54
3. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण 2005, पृष्ठ संख्या–27
4. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, म्वार नाव आजाद, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2006, पृष्ठ संख्या–3
5. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, राना बेनी माधौ, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2008, पृष्ठ संख्या–12
6. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, खुब कमाव खुब छानौ घ्वाटौ, अवध भारती संस्थान प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–11
7. द्विवेदी शरण शम्भू, त्रिशूल काव्य, बन्धु प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–1995, पृष्ठ संख्या–प्राक्कथन
8. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, नीकि दिन अइहै, अवध भारती संस्थान प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–3
9. hindi.webdunia.com
10. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, घुनघुना, अवध भारती संस्थान प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2013, पृष्ठ संख्या–28
11. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, घुनघुना, अवध भारती संस्थान प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2013, पृष्ठ संख्या–50
12. m.bharatdiscovery.com
13. शर्मा प्रकाश ओम, काव्य रसायन, हिन्दी पुस्तक भण्डार दिल्ली, संस्करण–1962, पृष्ठ संख्या–114
14. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, प्याट के भीतर पेंडु, अवध भारती प्रकाशन, संस्करण –2017, पृष्ठ संख्या–7
15. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, एकउटनि, अवध भारती प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण– 2018, पृष्ठ संख्या–28
16. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, साथ का पढ़इया, अवध भारती प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2014, पृष्ठ संख्या–16

17. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, परतन्त्रता नही स्वोकार, संस्करण–2004, पृष्ठ संख्या–4
18. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बच्चे गायें, अवध भारती प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2014, पृष्ठ संख्या–13
19. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, पढ़ेगे हम भी, संस्करण 2000, पृष्ठ संख्या–17
20. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, पंक में पंकज, महामाया प्रकाशन तेलियाकोट रायबरेली, संस्करण–2019, पृष्ठ संख्या–15

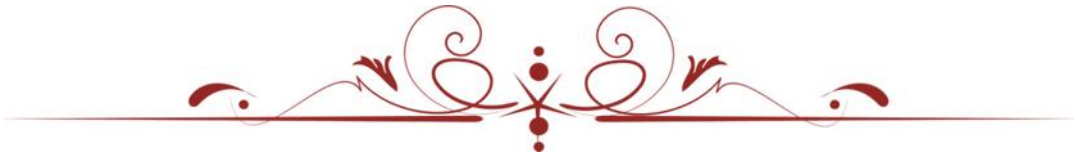

अध्याय चतुर्थ
आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' की काव्य–कृतियों का भावपक्ष

अध्याय–4

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' की काव्य–कृतियों का भावपक्ष

आधुनिक काल और उन्नीसवीं सदी भारत के लिए परिवर्तन की सदी मानी जाती है। यह दौर विभिन्न परिवर्तनो के साथ–साथ सांस्कृतिक मान्यताओं का दौर था। देश की भाषा और साहित्य में परिवर्तन होने लगे। अंग्रेजी शासन की स्थापना से खड़ी बोली हिन्दी का प्रभाव बढ़ा और हिन्दी की बोलियों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। प्राचीन अवधी और आधुनिक अवधी का भाषा–भेद दिखाई पड़ने लगा। परसर्ग, सर्वनाम क्रिया रूप, क्रिया–विशेषण, संज्ञा आदि में परिवर्तन होने लगे। इसी तरह अवधी के कथ्य में भी परिवर्तन होने लगा।

जो अवधी आदिकाल और भक्तिकाल में लोकाख्यानो और रामकथा पर आधारित थी। वही अवधी आधुनिक काल में अपने विषय–वस्तु को बदल चुकी है।

आधुनिक काल की अवधी जनसामान्य की अवधी बनी। जनसामान्य की अवधी बनने के नाते यह धार्मिकता के पुट को छोड़कर सामाजिक विसंगतियों, विद्रूपताओं, प्राकृतिक चित्रण, राष्ट्रप्रेम, दलित विर्मश, जनवादी चेतना, सामन्तवाद का विरोध, पाखण्ड, अन्याय का विरोध व लोकमंगल का भाव लेकर अपने साहित्य का निर्माण करने लगी।

बीसवी सदो म तो अवधी आकाशवाणी तक पहुँच गई। कहीं–कहीं पर तो नई कविता के शिल्प विधान के साथ–साथ यर्थाथवादी भावना के दर्शन मिलने लगे। वर्तमान समय के भयावह स्वरूप का चित्रण हास्य व्यंग के माध्यम से किया जाने लगा और अवधी ने लोकगीत शैली अपना लिया।

वंशीधर शुक्ल "रमई काका" तथा 'मृगेश जी' ने अवधी की लोकगोत शैली में अनेक रचनाएँ लिखी। यह दौर प्रगतिवाद व प्रयोगवाद का था। साहित्य के क्षेत्र में गाँधी का जादू सिर पर चढ़कर बाल रहा था। किसान आन्दोलन चरम सीमा पर थे, आर्थिक स्वतन्त्रता प्रत्येक क्षेत्र म परिवर्तन की पुकार कर रही थी। मानवतावाद व साम्यवाद का प्रचार, शोषण का विरोध, सामयिक समस्याओं के प्रति जागरुकता, प्रगतिवादी काव्य से धीरे–धीरे प्रयोगवाद में आयी।

अवधी के अनेक कवियों वंशीधर शुक्ल, बलभद्र प्रसाद मिश्र 'पढ़ीस' जैसे कवियों ने अपनी लेखनी की धार गरीबी, भुखमरी, श्रमिकों और किसानो की समस्याओं की ओर मोड़ दी।

श्यामसुन्दर 'मधुप' व डॉ. सिद्धार्थ ने प्रगतिवादी अवधी रचनाकार होने के नाते जनवाद में अपनी पूरी आस्था व्यक्त की और राजनतिक विसंगतियों की जो धज्जियाँ उड़ाई वे स्तुत्य है –

"जमाना जालिम है
कउनौ अजगर लीलि रहा है
हरियाली खुसहाली
गंगा बनिगै जइसे
मैला ढ्वावै वाली नाली
अमरीकी बादर ते छूटै
तेजाबी बौछार
जमाना जालिम है।" [1]

अवधी का समकालीन काव्य भी आधुनिक समस्याओं से ओत–प्रोत है जो मंचिय काव्य के रूप में भी सामने आया।

समकालीन कवियो में उमादत्त सारस्वत, पारसनाथ मिश्र 'भ्रमर', हरिश्चन्द्र पाण्डेय, गुरू प्रसाद 'किसान', कौशलेन्द्र पाण्डेय, साधु शरण वर्मा, डॉ. परमानन्द जड़िया, डॉ. विद्याबिन्द, डॉ. रामबहादुर मिश्र, कमलेश मौर्य, अशोक पाण्डेय 'गुलशन' जैसे रचनाकार अवधी की दिशा व दशा का निर्धारण कर रहें है।

इसके साथ ही समकालीन अवधी कवियों की इस परम्परा में आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' अपनी साहित्यिक सजना को निरन्तर आगे बढ़ा रहे है। अवधी गद्य और पद्य दोनो ही विधाओं में लिखी गई 'निशिहर' जी की रचनाएँ आँचलिकता के पुट से आत–प्रोत होते हुए राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय सन्दर्भो को रेखाकित करती है। 'निशिहर' जी की काव्य कृतियों का भावपक्ष अत्यन्त प्रबल है जो आपको सामाजिक सराकारो से सम्प्रति करता है।

अवधी साहित्य की यह विशेषता रहीं है कि वह अपने उद्भव काल से ही ग्राम्य जीवन को अपने में समेटता हुआ आगे बढ़ रहा है। सूफियों के महाकाव्य इसका उदाहरण है। प्रमुख

कारण यह है कि अवधी लोक भाषा है और जो भाषा लोक को पकड़ लेती है वह अमर हो जाती है। जब कोई साहित्यकार अंचल विशेष की भाषा का आधार लेकर लोक संस्कृति का वर्णन करता है तो वह लोक–साहित्य कहा जाता है। अवधी भाषा में आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' जी के साथ–साथ शताधिक साहित्यकार है जो लोकजीवन, लोक परिवेश व लोक संस्कृति आदि का चित्रण कर रहें है।

'निशिहर' जी बैसवारे जैसे ग्रामीण परिवेश में जन्मे आर ग्रामीण परिवेश में ही 'निशिहर' जी का लालन–पालन हुआ और वही उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण हुई जिससे 'निशिहर' जी को ग्रामीण जीवन से बहुत लगाव है।

'निशिहर' जी भले ही जीविका के लिए शहर आ बसे परन्तु आज भी उनके मन को गाँव लुभाते है क्योंकि गाँव प्रदूषण से दूर स्वच्छ है, गाँवो का प्राकृतिक सौन्दर्य जैसे– बाग–बगीचे, नदी, तालाब, खेत–खलिहान व वहाँ की सुगंधित ताजी हवा अनायास ही उन्हें अपनी ओर खींचती ह तथा सभी ग्रामवासियों का मिलजुल कर एक परिवार की भाँति रहना तथा एक–दूसरे का यथासंम्भव सहयोग करने हेतु सदैव तत्पर रहना ये सारी विशेषताएं 'निशिहर' जी को बहुत भाती है।

गाँव का जीवन कृत्रिमता से दूर सादा और सरल है। गाँव का जीवन शांत आर शुद्ध माना जाता है क्योंकि गाँव में लोग प्रकृति के अधिक निकट होते है। साहित्य में अनेंको साहित्यकारों ने ग्राम्य जीवन को आधार बनाकर अनेक साहित्यिक कृतियाँ लिखी क्योंकि भारत की 70% जनता आज भी गाँव में निवास करती है। हिन्दी के महान साहित्यकार मैथलीशरण गुप्त ने गाँव की प्रशसा करते हुए अपनी कविता ग्राम्य जीवन में लिखा –

"अहा गाम्य जीवन भी क्या है,
क्यों न इसे सबका मन चाहे,
थोड़े में निर्वाह यहाँ है,
ऐसी सुविधा और कहाँ है?
यहाँ शहर की बात नहीं है,
अपनी–अपनी घात नहीं है,
आडम्बर का नाम नहीं है।" [2]

सुमित्रानन्दन पन्त ने गाँव के प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण अपनी कविता 'ग्राम श्री' में इस प्रकार किया –

"फैली खेतो में दूर तलक
मखमल की कोमल हरियाली
लिपटी जिसमें रवि की किरणें
चाँदी की सी उजली जाली।
तिनकों के हरें–हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक
श्यामल भू तल पर झुका हुआ
नभ का चिर निर्मल नील फलक।" [3]

'निशिहर' जी कहते है जहाँ ग्रामीण जीवन में प्रकृति का सौन्दर्य और सरलता विद्यमान है, वही बहुत सी चुनौतियाँ भी है जो ग्राम जीवन को कठिन बनाती है। वे कई प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से वंचित रह जाते है जो जीवन को आरामदायक बनाती है। इसका बड़ा ही सुन्दर वर्णन 'निशिहर' जी ने 'कहलाते है हम मजूर' गीत मे किया –

"परिवार साथ में
रह रहें गाँव में
कहलाते है हम मजूर
ऐशो आराम से दूर। [4]

भारतीय ग्राम्य जीवन की जब भी बात होती है तो तपती हुई धूप में खेती करते हुए किसान का चित्र सबसे पहले हमारी आँखों के सामने होता है, किसान हमारे जीवन की सबसे बड़ी मूलभूत आवश्यकता को पूरा करने के लिए कड़ी धूप में मेहनत कर अनाज उपजाते है। इस पर 'निशिहर' जी किसान की महत्ता को उच्च स्थान प्रदान करते हुए लिखते है –

"खूनु पसीना करिकै दयात अनाज।
पूजै जोगि जगत मा कृषक–समाज।।"[5]

किसान हमें अप्रत्यक्ष रूप से जीवन देते है। हमें किसानों का उतना ही सम्मान करना चाहिए जितना हम देश की रक्षा करने वाली जवानों का करते है। भारतीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने भारत–पाक युद्ध के दौरान 'जय जवान जय किसान' का नारा देकर यह स्पष्ट कर दिया कि जवान और किसान हमारे देश की ताकत है। भारत देश किसानों का देश

है। 'निशिहर' जी ने भी अपने बालगीत 'कृषक' के माध्यम से किसानों का आभार प्रकट किया –

"कृषक किसानी करता है।
पेट सभी का भरता है।।
अपना स्वेद सदैव बहाता।
तरकारी अनाज उपजाता।।
शीत धूप से तनिक न डरता।
कभी भी नहीं आलस करता है।।
जीता है साधारण जीवन।" [6]

ग्राम्य जीवन के अंकन में किसान को सभी साहित्यकारों ने केन्द्रबिन्दु मे रखा है और उन्हें अन्नदाता की संज्ञा दी है। किसान जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन उसकी उतनी ही उपेक्षा हो रही है। 'प्रेमचन्द्र के युग' में भी किसान आत्महत्या करता था और आज भो आत्महत्या कर रहा है। पहले सेठ साहूकार से कर्ज लेता था, आज बैंको से कर्ज ले रहा है। गरीबी न न तब पीछा छोड़ा था और न अब, हाँ यह बात अलग है कि आकड़ेबाजी और कागजी कार्यवाही में किसान जरूर समृद्ध हुआ है, इसीलिए 'अदम गोंडवी' को लिखना पड़ा–

"तुम्हारी फाइलो में गाँव का मौसम गुलाबी है
मगर ये आकड़े झूठे है ये दावा किताबी
उधर जमूहरियत का ढोल पीटे जा रहें हो।
इधर परदे के पीछे बरबरियत है नवाबी है।" [7]

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' का जुड़ाव प्रारम्भ से ही गाँव से रहा। उन्होने किसानों के जीवन को बहुत करीब से देखा। उनकी गरीबी, भूख, दिन–रात की मेहनत के बावजूद उन्हे वह मान नहीं मिला। किसानों की उसी पीड़ा को 'निशिहर' जी ने अवधी गीत 'किसान हम (बिरहा) में व्यक्त किया –

"खटा करित हय सहि सहि
जाड़ा गरमी बरखा तन मा।
खुद खाइत दूसरे का खवाइत
जतने मनइ भुइँ मा।
'निसिहर' अइसि परानी/किसान हम
परे रहित हय एकु किनारे
कोउ कहत ना मितवा।

कबहुँ हमका मानु मिलत ना
लोग कहति हरजोतवा।।" [8]

ग्राम्य जीवन के अंकन में निशिहर जी ने कलम तोड़ दी है गाँव के जीवन का इन्होने सूक्ष्मता के साथ निरोक्षण किया है। 'निशिहर' जी यह बताना नहीं भूलते कि आज भी लाल–फोताशाही गाव को अपने कब्जे मे लिये है। गाँव का आदमी आज भी घूसखारी आदि से बहुत परेशान है। गाँव में डॉक्टरों की कमी है, झोलाछाप डाक्टरों से इलाज कराते है।

'अन्ततः नीम हकीम खतरे जान' की कहावत चरितार्थ हो जाती है और लोग मर जाते है। यह गाँवों की विडम्बना है कि अच्छे डॉक्टर और अस्पतालों का अभाव है इसीलिए झोलाछाप डॉक्टर गाँववालो को ठगते है। अपनी 'बड़बोलना' कहानी में 'निशिहर' जी इसी बात पर प्रकाश डालते है –

"सुभास सरमा– डाकडरी क कउन कोर्स कर्यो रहै?
डाकडरु – कुछो न ब्वाला तो ज्वार ते हड़केन,
सुभास सरमा– ब्वालत काहे नहिन?
डाकडरु– डाकडरु फिरिउ न ब्वाला।
दरोगा जी – फिरि सवालू केहेन, "डटरी करै क लैसन है?
डाकडरु – नाहीं।
दरोगा जी – तो यहु झ्वारा छाप डाकडरु है। ठगत खात है ज्यादा पढ़ौ लिखा न
होई। यहिका जीप म बइठाव।" सिपाहिन ते कहेन" [9]

इस प्रकार 'निशिहर' जी ने गाँवों में फैली स्वास्थ्य–व्यवस्था पर अपनी कहानी के माध्यम से प्रकाश डाला। आज भी गाँवों में बहुत सी ऐसी अव्यवस्थाएँ है कि उन पर जितनी बात करें कम है। आधुनिक समय में सम्बन्धों के टूटने की बात आम हो गई है चाहें शहर हो या गाँव। बच्चों द्वारा अपने माता–पिता कि उपेक्षा करना। उन्हें जब उनकी सबसे ज्यादा आवश्यकता होती है तब व उनका सहारा बनने की जगह उनसे अलग हो जाते, उन्हे वृद्धाश्रम तक पहुँचा दे रहें, तो कहों अपने ही माता–पिता से बटवारा कर रहे है। 'निशिहर' जी की दृष्टि में टूटते सम्बन्ध समाज को पतन की ओर ले जा रहें। भारतोय संस्कृति म माता–पिता को देवतुल्य माना गया है परन्तु आधुनिकता की चकाचौध ने माता–पिता को बच्चों से दूर कर दिया है। इस पीड़ा को 'निशिहर जी' ने एक अवधी मुक्तक मे प्रकट किया –

"पाँच पूतन क पालिसि–पढ़ाइसि।

दूधु घिउ खीर हेलुवा खवाइसि
दालि–रोटी मिलति अब न ढँग ते
बूढ़ स्वाँचत, न असि दिन बिताइसि।" [10]

आधुनिक समाज में लोग शिक्षित होने के बावजूद भेदभाव, ऊँच–नीच, जाति–पाँति जैसी समस्याओं से ग्रसित है। भेदभाव किसी धर्म, जाति मूलवंश के प्रति किया गया नकारात्मक व्यवहार है। भारत की राष्ट्रीयता को खंडित करने में जाति–पाँति का सबसे अहम स्थान है। आज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में बँटा समाज अपने–अपने स्वार्थों की लड़ाई मात्र लड़ रहा है।

समाज से भेदभाव की भावना को समाप्त करने के लिए साहित्यकारों ने भी अपनी कृतियों के माध्यम से भरपूर प्रयास किया परन्तु भेदभाव की जड़े इतनी गहरी है कि उन्हें उखाड़ फेकना सम्भव नहीं हो पाया। इस विडम्बना को 'निशिहर' जी अपनी कृति में व्यक्त करते हुए लिखते है –

"बरस सैकरन पहिले जउँ धुधुवानि
ऊँच–नीच कै अबहुँ न आगि बुतानि"

आधुनिक समाज की गम्भीर समस्या है भेदवभाव। 'निशिहर' जी ने इस समस्या के निवारण में बालगीतों को माध्यम बनाया। 'निशिहर' जी का मानना है कि 'बच्चें देश का भविष्य है'। यदि बचपन से ही उनके मन में भेदभाव के बीज को पनपने ही न दिया जाए तो शायद भविष्य में भेदभाव की भावना का अन्त हो जाए। इस प्रकार 'निशिहर' जी ने अपने बालगीत 'हर मनुज समान' में यह सन्देश दिया –

"अपना मन मोड़िया।
भेदभाव छोड़िये।।
रूप–रंग धर्म का।
ऊँच–नीच वर्ण का।।
मनु की सन्तान है।
हर मनुज समान है।।" [12]

प्रकृति प्रारम्भ से ही मनुष्य की सहचर रही है, मनुष्य का अस्तित्व प्रकृति के बिना असम्भव है। मानव और प्रकृति का सम्बन्ध सनातनधर्मी है, प्राकृतिक उपकरणों के बिना भारतीय संस्कृति की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भारतीय मनीषियों ने प्रकृति के समस्त स्वरूप नदी, पहाड़–झरने तथा प्रस्तर खण्डो में भी देवत्व के दर्शन किये है। प्राकृतिक चैतन्य साक्षात सृष्टि है इसीलिए मनुष्य प्रकृति को नमन करता है–

"प्रकृति में इतना सुख चैन इसलिए है कि हर कोई दान करने का आनन्द लूट रहा है। सूरज, चाँद–तारे रोशनी लुटा रहे है। आकाश शब्दों को स्वर दे रहा है। बादल जल बरसा रहें है। वृक्ष हवा दे रहें है। नदियाँ जलधारा बाँटती हुई बह रही है। वनस्पतियाँ, पेड़–पौधे, हरियाली और फल–फूल से प्रकृति का आँचल भर रहें है।" [12]

मनुष्य ने प्रकृति से जब–जब खिलवाड़ किया है, संकट उस पर अवश्य आया है। प्रकृति का सामित्य मनुष्य को वास्तविक सुख की अनुभूति कराता है मानव सहित समस्त जीव पर्यावरण की उपज है। स्वच्छ पर्यावरण में ही स्वस्थ जीवन समाहित है।

"भौतिकता की अन्धी दौड़ में आधुनिक मानव ने जाने–अनजाने पर्यावरण का गम्भीर हानि पहुँचाई है। ओजोन क्षरण, विश्व तापन, अम्ल वर्षा व बढ़ती प्राकृतिक आपदाएँ इसके दुष्परिणाम है। पर्यावरण प्रदूषण व पारिस्थितिक असन्तुलन अब मात्र स्थानीय या राष्ट्रीय समस्या नहीं हैं। अपितु समस्त भू–मण्डल इसकी चपेट में है।" [13]

मानव की प्रगति प्रकृति पर निर्भर है। मानव जीवन की आधारभूत आवश्यकताएँ प्राकृतिक संसाधनों पर ही निर्भर है। 'निशिहर' जी ने प्रकृति को अपने अवधी काव्य में महत्वपूर्ण स्थान दिया और अवधी गीत 'बिरवा तरे' में प्रकृति के महत्व को दर्शाया –

"पक्के दोस्त मनई के बिरवा।
हितुवा पसु चिरइन के बिरवा।।
धरनि कोखि ते उपजति बिरवा।
हरियरि–हरियरि बिलसति बिरवा।।
खट्टे मीठि देति फल बिरवा।
देति दवाइ काठु सब बिरवा।।" [14]

'निशिहर' जी ने बच्चों की कविता 'लाल लाल पतंग' में अपना प्रकृति प्रेम प्रदर्शित किया है। उनका मत है कि छोटे बच्चों में बचपन से ही प्रकृति के प्रति लगाव का भाव जाग्रत करना चाहिए। हमारे परिवेश में नीम एक ऐसा वृक्ष है जिसे औषधोय वृक्ष की मान्यता प्राप्त है। जिसे प्राचोन ग्रन्थों में भी कहा गया है 'सर्वा रोगा हरि निम्बा' नीम की जड़ से लेकर पत्तो तक औषधिक है साथ ही नीम की छाया गर्मी में सुखदायी होती है। नीम की महत्ता पर 'निशिहर' जी ने शिशुगीत 'नीम तले' लिखा –

"ठडी छाया भली मिले।
आओ खेलें नीम तले।।
गर्मी अन्धम मचाए है।
जी सभी अकुलाए है।।
कड़ी धूप ज्यादा न खले।
आओं खेले नीम तले।।" [15]

'निशिहर' जी ने अवधी हाइकू 'नीकि दिन अइहै' में अपने प्रकृति–प्रेम को उजागर करते हुए लिखा –

"नदिया चली/कतौ न सहितानो/ईस ते मिली।" [16]

अवधी साहित्य में प्रकृति चित्रण बहुतायत से मिलता है, चाहे वह अवधी गद्य हो या पद्य हो। कही आलम्बन के रूप में, कहीं उद्दीपन के रूप में, प्रकृति चित्रण अवधी काव्य का एक स्तम्भ बन गया है। अवधी कवियो में ऊसर–बंजर, खेत खलिहानों से लेकर फुस–फयाल के छप्परो, मकरा, सावां, सियार, लोखरी, बिचखापड़ा तक को ग्राम प्रकृति के अन्तगत समेट दिया है।

'निशिहर' जी प्रकृति के अन्ठे प्रेम से बच नहीं सके क्योंकि वे ग्रामोण प्रकृति में जन्में जिससे गहराई से प्रकति का निरोक्षण–परोक्षण कर अपने कविकर्म का परिचय दिया। ऐसे कार्य गाँव में बसे और रमें हुए कवि ही कर सकते है। शहरों में एयरकंडीशन में लिखने वाले कवि जिन्हें पसीने की गन्ध भी नहीं मालूम उनके लिए प्रकृति तो जैसे 'गूलर का फूल है'। आपने जाड़ा, गर्मी, बरसात सबका वर्णन करके अपनी ग्राम्य अनुभूति दी है –

"घामु सीत मा जब भुइं आवत।

सारे प्रानिन का खुब भावत।
लेति सवै जब, जाड़ा भागत
खूब अपने का नींबर पावत।" [14]

प्रकृति का मानवीकरण करने की परम्परा संस्कृत सहित्य में भी है और हिन्दी साहित्य में भी है। 'निशिहर' जी ने अपनी रचनाओं में प्रकृति का सुन्दर ढंग से मानवीकरण किया है –

"बउरवा जब खूब द्याँह चलावति।
बिरिछन का हरि पात डोलावति।
खुट खुट खुट खुट होति केमारा
मानौ वह दरवाजु खोलावति।" [18]

'निशिहर' जी ने पेंड़–पौधो के साथ जानवरों को भी प्रकृति का अंग माना है। इनकी कविता में कूकुर, बिल्लार सहित अनेक जंगली जानवरों का वर्णन है –

"कुकरवा पक्के चउकीदार
रखावति मालिक क्यार दआर
बाहेरी जब कोउ आ जात
बहुत भूंकति है वहि का निहार" [19]

उद्दीपक के रूप में भी 'निशिहर' जी ने प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया है। वर्षा ऋतु में रिमझिम बरसते बादल किसके मन को रोमांचित नहीं करते –

"रिमझिम रिमझिम बदरा उमड़ि जब।
भिजावति भुंइ का अंचरा घुमड़ि जब।
बहुत देखाति मगन तबै पिरथी
लखत बनत है नखरा करति जब।" [20]

प्रकृति में विद्यमान समस्त जैविक तथा अजैविक घटक मिलकर पर्यावरण की रचना करते है अर्थात जल, वायु, भूमि, सूर्य का प्रकाश, वनस्पति, जन्तु, मानव इत्यादि पर्यावरण के घटक या तत्व है।

ब्रह्माण्ड में सम्भवतः पृथ्वी ही एक मात्र ऐसा खगोलीय पिण्ड है जहाँ जीवन के अनुकूल प्राकृतिक दशाएँ पाई जाती है, इसी कारण यहाँ जीवों का विकास सम्भव हो सका है। स्थल, जल एवं वायुमण्डल तीनों मे ंही जीवों का अस्तित्व पाया जाता है। पृथ्वी पर सजीवों (वनस्पति

एवं प्राणी) क निवास क्षेत्र को जीव मण्डल कहते हैं। प्राकृतिक व्यवस्था के अन्तर्गत पर्यावरण के समस्त भौतिक व जैविक घटक प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में परस्पर समृद्ध है। जल, वायु, मृदा, सूर्य, प्रकाश आदि भौतिक घटक जीवों की उत्पत्ति व विकास के लिए अनुकूल दशाएं प्रदान करते है। पृथ्वी पर जीवन की निरन्तरता बनो रहने के लिए जीवन के इन आधार–तत्वों का एक निश्चित अनुपात तथा सन्तुलन में बने रहना आवश्यक है। इनमें आंशिक परिवर्तन होने पर एक सीमा तक जीव अनुकूलन कर लेते हैं किन्तु वृहद स्तर पर हाने वाला परिवर्तन जीवों के अस्तित्व को खतरे में डाल सकता है अर्थात भविष्य निहित है। इस दृष्टि से धरती पर पौधे लगाना अति आवश्यक है –

"से पाले पैसरमी पुरिखन के।
दस बिरवा रहे हमै मउहन के।
मोटि–मोटि सब खुब ऊंचि–ऊंचि वी
उन तरे ख्याल ख्याला बचपन के।
दुइ ठइं बचे अउ गिरिगे झुरागे
होई गैन हमहूं साल पछपन के।" [21]

इस प्रकार अन्य अवधी कवियों की भांति आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' ने भी प्रकृति का चित्रण किया है। वह अवधी कविता के लिए अद्वितीय है। उनके मौलिक तेवर हर जगह है और प्रकृति चित्रण सराहनीय है।

राष्ट्रप्रेम लोगो के उस समूह की आस्था का नाम है जिसके अनुसार वे खुद को साझा इतिहास परम्परा या संस्कृति के आधार पर स्वयं को एकजुट मानते है। भौगोलिक सीमाओं का बन्धन ही राष्ट्र की परिकल्पना विश्व की प्राचोनतम परिकल्पनाओं में से एक है और इसका साकार रूप भी देखने को मिलता है। संस्कृत भाषा के एक श्लोक में कहा गया है कि – गंगोत्री से जल भरकर रामेश्वरम् पर अभिषक करना एवं चारों धामों की यात्रा करने का संस्कार असेतु हिमालय देश को एक सूत में बांधने की परिकल्पना है। यह कहना बिल्कुल गलत है कि स्वाधीनता के पश्चात अथवा अंगेजो की देन से भारत एक राष्ट्र के रूप में स्थापित हुआ। देश बनता है उसकी संस्कृति से उसकी परम्पराओं से और वहाँ के निवासियों के मन मे देश के प्रति असंदिग्ध निष्ठा से।

भारतवर्ष अत्यन्त प्राचोन और सनातधर्मी देश है, प्राचोन संस्कृत साहित्य में इसे 'अजनाब देश के नाम से भी जाना जाता था। आर्यवर्त, जम्बूदीप इसके अन्य नाम है। भारतवर्ष में वर्ष शब्द महाद्वीप के अर्थ में आता है। भारत में रहने वाले सभी भारतीय है। वास्तव में राष्ट्रप्रेम की परिभाषा बहुत व्यापक है, आजादी के बाद राष्ट्रप्रेम में भी बदलाव आया हिन्दू और मुसलमान दोनो ने मिलकर आजादी की लड़ाई में अपना योगदान दिया। 'निशिहर' जी भी राष्ट्रप्रेम की भावना से प्रभावित हुए। उसका असर उनको रचनाओं में स्पष्ट झलकता है। राष्ट्रप्रेम की भावना से प्रेरित होकर 'निशिहर' जी ने तीन खण्डकाव्य 'म्वार नाव आजाद', 'राना बेनी माधौ', 'परतन्त्रता नहीं स्वीकार' विशेष रूप से राष्ट्रप्रेम पर ही आधारित है।

साधारणतयः 'निशिहर' जी का काव्य मात्रभूमि का महत्व, राष्ट्रीय नायको का चरित्रगान, गौरवगान, नये भारत के विकास और अतीत की चर्चा, सर्वधर्म सम्भाव आदि को लेकर लिखे गये है।

जिस प्रकार 'कवि भूषण' न शिवाजी महाराज के यशगान को अपनी कविता का वर्ण्य–विषय बना अपनी वाणी को पवित्र किया। उसी प्रकार आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' ने बैसवारे के तीन अमर स्वतन्त्रता नायकों चन्द्र शेखर आजाद, राव राम बक्स सिंह व राना बेनी माधव पर अवधी में खण्डकाव्य लिखकर अपनी वाणी को पवित्र किया है। कवि भूषण की उद्दात विचारधारा से अनुप्राणित होकर कवि के हृदय में राष्ट्रप्रेम का ऐसा ज्वार आया कि भाव शब्द के रूप में बह उठे कवि को प्रेरित करने वाला यह खण्डकाव्य भारतीय समाज के लिए राष्ट्रभाव के प्रति उत्प्रेरक का कार्य करता है। जगजाहिर है कि राना बेनी माधव सत्तावनी क्रांति के अमर नायक है। अपने काव्य नायक 'राना बेनी माधौ' के माध्यम से वह आज की युवा पीढ़ी को संन्देश देना चाहते है कि हिन्दुस्तान को आजादी खून देकर मिली है। इसकी रक्षा करना हम सबका कर्तव्य है –

"अपनि भारत मैया का सनमान, घटै ना पावै।
करि दिये समरपन सबकुछ तिनकौ न कसरि रहि जावै।
उतसाह बढ़ायेन सबका बहुतै राना मरदाना
आपनि बचाव आजादी धरि लियौ बीर का बाना।। [22]

यद्यपि खण्डकाव्यों में प्रकृति चित्रण को महत्ता नहीं मिलती है लेकिन कवि ने स्थान–स्थान पर प्रकृति चित्रण भी किया है। इस चित्रण से कथा में टूटन भी नहीं होती। कवि का यह चित्रण स्वाभाविक है और बैसवारे की लोक–संस्कृति के अनुरूप बन पड़ा है –

"गावै मा जुटी चिरइया चीं चीं चूं चूं करिकै।
भोजन ढुंढती कुछ उड़ि–उड़ि कुछ भुइँ मा उलरि उलरि क।।
फूलन के पौंधन मा हरि खुस कली कली मुसकाई।
छवि अपनी देखावै का वी मानौ लेती अगराई।।"

सत्तावनी क्रांन्ति का सबसे बड़ा दोष यह रहा है कि अनेक राजा–महराजाओं ने अंग्रेजों का सहयोग किया अन्यथा क्रांति का परिणाम कुछ और ही देखने को मिलता। कवि का यह कर्तव्य है कि वह ऐसे लोगो से जनमानस को सावधान करें।

'निशिहर' जी ने भी इसकी भत्सना की है और ऐसे मनुष्यों से सचेत रहने को कहा है –

"मिले अरिन ते वई, उतरिगा जिनका पानी।
अपन देहेन सहजोग, देखायन निज नादानी।।
भेदिहा बने नरेस, करति कायर गद्दारी।
आजादी कै नेहि, रोजु भसकावति सारी।।" [23]

राष्ट्र देश की आधुनिक और व्यापक संज्ञा है। राष्ट्रप्रेम वह देशभक्ति भावना है जा स्वदेशवासियों को अपने देश की आन–बान–शान की रक्षा के लिए उत्साहित करती है। अतः देशसेवा का भाव व्यक्तिगत न होकर समष्टिगत होता है। सच्चा देश सेवक व्यक्ति, केवल विशेष के लिए नही बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए जीता है।

'निशिहर' जी ने सत्तावनी क्रांति के एक और अमर नायक 'राव राम बक्स सिंह' को अपने अवधी खण्डकाव्य 'परतन्त्रता नहीं स्वीकार' में स्थान देकर अपने राष्ट्रप्रेम का परिचय दिया है। मंगल पाण्डेय, बाबू कुँवर सिंह, रानी लक्ष्मीबाई, रानी अवन्तिबाई, रानी चेनम्मा, तात्या टोपे, दरियाव सिंह, नाना साहब, बहादुरशाह जफर जसे देशसेवक देश के लिए अपना सर्वस्व दाँव पर लगा दिया। उसी प्रकार अवध की बेगम हजरत महल, मौलवी अहमद उल्ला शाह,

देवी बक्स सिंह, चहलारी नरेश बलभद्र सिंह, राना बेनी माधव सिंह, वीरा पासी के अतिरिक्त डौन्डिया खेड़ा के राव राव राम बक्स सिंह ने अंग्रेजो को नाको चने चबवा दिये।

क्षेत्र मे आज भी दो फाग गीत 'बक्सर मा भगदर भए भारी' और 'अवध मा राना भयो मरदाना' बहुत प्रसिद्ध है। सत्तावनी क्रांति के धर्मयुद्ध में 'राम राव बक्स सिंह' भी मातृभूमि को पराधीनता की बेड़िया से मुक्त कराने में जुट गये। वीरता से अंग्रेजों का मुकाबला किया। कवि 'निशिहर' ने वीर बांकुरे 'राव राम बक्स सिंह' का चित्रण इन शब्दों में किया –

"कोई निशाना लिये शत्रु पर तोव संभाले
देश भक्त आजादी की रक्षा करने वाले।
विकट वीर दरियाव– राव साहब मर्दाना
सजे सामरिक वेश नहीं कुछ जाये बखाना।।" [24]

राव साहब व उनके सिपाहियों ने अंग्रेजो के साथ भयंकर युद्ध किया था। बैसवारे के वीरों का कमाल देखिये कि वे किस तरह से अंग्रेज शत्रुओं को युद्धभूमि में गिरा रहें थे। युद्ध का सजीव वर्णन 'निशिहर' जी खण्डकाव्य में इस तरह करते है –

"चमक कड़क कर गाज जैसे गिरती है तरू पर
करके उसकों छिन्न गिरा देती है भू–पर।
वैसे करके मन्यु बैसवारे के नाहर
काट–काट कर गिरा रहे रिपु–दल धरती पर।।" [19]

सत्तावनी क्रांति के बाद भी मातृभूमि की बलदेवी पर प्राण न्योछावर करने की परम्परा जारी रही। चन्द्रशेखर आजाद ने सशक्त क्रांति का मार्ग अपनाते हुए देश के तत्कालीन क्रांतिकारियों राम प्रसाद विस्मिल, अस्फाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लहड़ी, भगत सिंह, रोशन सिंह, सचेन्द्रनाथ, राजगुरु और बटकेश्वर दत्त के साथ मिलकर स्वतन्त्रता के लिए अनवरत संघर्ष किया अपना घर–परिवार छोड़कर देश के प्रति इन सभी द्वारा किया गया त्याग और बलिदान वन्दनीय है।

'निशिहर' जी की कृति 'म्वार नाव आजाद' में इस बलिदान की गाथा है –

"क्रातिकारी भारत सपूत
साहस के मैदान मा बहादुरी के बाजि पर

चढ़े बइठि सान मा अंगरेजन ते अभिरे
जानु गादो मा धरे मुड मा कफन बाँधे
हुनहुनानि।" [25]

'निशिहर' जी का राष्ट्रप्रेम मानवीय मूल्यों पर आधारित है। वे राष्ट्र की बलवेदी पर शहीद होने वाले सैनिकों को सार्थक समझते है। देश की आन–बान–शान राष्ट्रोय ध्वज तिरंगे के प्रति भी इनका प्रेम सराहनोय है अपनी रचनाओं में तिरंगे के प्रति सम्मान व मर मिटने की प्रेरणा देते है –

धुज तिरंगा
सान है पहिचान भारत देस कै।
जुद्रधु आजादी क अतिसै
जब बिकट था होइ रहा
जुलुम अंगरेजन का दावा
जबै नाही गा सहा
बना यहिका
सबै अभिरे, करै नासि कलेस कै।" [26]

'निशिहर' जो का मानना है कि कोई भी राष्ट्र तभी उन्नति कर सकता है जब उस देश के सभी नागरिक अपने–अपने कर्तव्यों का निर्वाह ठीक प्रकार से करें। व्यक्ति देश की सबसे छोटी इकाई होती है जब इस छोटी इकाई का आधार मजबूत होगा तो राष्ट्र अपने आप समृद्ध होगा।

समाजिक विसंगतियाँ हमारे राष्ट्र में विडम्बनापूर्ण परिस्थिति को जन्म देती है। विसंगतियाँ समाज में व्याप्त व्यक्तिसंगत नियमों, आदर्शो एवं नैतिकता का अभाव दिखाती है। विसंगति एक ऐसी सामाजिक स्थिति है जिसमें नियम या तो कमजोर हो जाते है या जिनमें आपस में टकराहट होने लगती है या फिर वह समाप्त हो जाते है।

जातिवाद, धर्मांधता और रंगभेद जैसी तमाम सामाजिक विसंगतियों के विरुद्ध लिखने का साहस साहित्यकार सदियो से करते रहे ह। दलित शोषित वर्ग के अधिकारों के लिए

साहित्यकारों ने साहित्य सतत रचा है और उनके सृजन में समाज में बलवती होतो वैमनस्यता को क्षीण भी किया है।

'निशिहर' जी का सम्पूर्ण जीवन सामाजिक विसंगतियों के बीच ही बीता, इसलिए वे अपने साहित्य में सामाजिक विसंगतियों को उकेरना नही भूलते है।

माइकाइवर एवं पेज के अनुसार 'समाज सामाजिक संबन्धों का जाल है।' समाज में तरह–तरह के लोग रहते हैं। यदि समाज में सामंजस्य नही है तो वह समाज विकृत हो जाता है। समस्त मानवीय समूहो में समाज सर्वाधिक महत्वपूर्ण समूह है, यह एक छोटा सा लोचपूर्ण मानवोय सम्बन्ध है।

'निशिहर' जी की कृतियाँ सम्पूर्ण समाज के लिए आदश बनकर समाज मे चेतना पैदा करती है। समाज का ताना–बाना जीवन के सम्बन्धा में समरसता एवं एकरसता का भाव जाग्रत करता है

'निशिहर' जी ने 'तखत' कविता में यही दिखाने का प्रयास किया है कि किस प्रकार समाज में समता और सद्भाव पैदा किया जा सकता है –

"समानता सद्भाव जगाता
तखत भला है खटिया से।
संवेदना उगे–हरियाए
बढ़ कर फूले खूब फले
सिरहाना पैताना वाली
जीर्ण व्यवस्था सड़े गले।
अंग सभी काया समाज के
बचें विभेदी कटिया से।
बैठ बराबर कर विमर्श
एकता–शक्ति की वृद्धि करे।" [27]

कृषि हमारे देश की प्रगति का सर्वोच्च साधन है, तो किसान देश की रीढ़ है परन्तु यह हमारे देश की विडम्बना है कि किसान कल भी विसगतियो के दंश को झेल रहा था और आज भी उससे उबर नहीं पाया। किसान की दीन–हीन दशा व उसके रुदन को देख

'निशिहर' जी की कलम चल पड़ती है और किसान की अभिव्यक्ति को व्यक्त करते हुए लिखते हैं –

"दालि–रोटी व धोती मिलती है नहिन
घर म संतान ढंग ते पलति ह नहिन।
काम अटका करती रोजु चिंता बढ़ति
बिन कमाई गिरित्ती चलति है नहिन" [28]

ध्यान देने योग्य बात यह है कि आत्मनिर्भरता राष्ट्र की सुरक्षा से जुड़ी हुई है, इसलिए किसानों की विसंगतियों पर ध्यान देना आवश्यक है।

"विषम घड़ी मे देश का जीवन आधार रही कृषि को स्थायी मजबूती देने की दरकार है, इसमें सरकारी निवेश में वृद्धि हुई। तमाम विसंगतियों को दूर कर कृषकों का उनके उत्पादों का समुचित मूल्य मिलना नितान्त आवश्यक है।" [29]

हमारी सनातनी संस्कृति में जीवन की उत्पत्ति जल से मानी गई है। हमारे जीवन में जल का सर्वाधिक महत्व है। रहीम ने – 'रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।' कहकर जल संरक्षण पर जोर दिया। कोई भी धार्मिक कृत्य जल के बिना पूर्ण नहीं होता, इसलिए जल संरक्षण कल्याण हेतु एवं बरसात की एक–एक बूंद को सरक्षित रखना हम सबका कर्तव्य है।

'निशिहर' जी ने भी अपनी कई कविताओं में आर्थिक विकास के लिए 'जल है तो कल है' के सिद्धान्त पर अपनी बात कही –

"रहि न पाई, धरनि मा परानी, पानी के बिना।
सहि न जाई, पियास–परेसानी, पानी के बिना।
बारि कबहूँ, बेर्थ मा बहाव ना, बड़े काम का।
बूँदु–बूँदु का, लाभु जो भुलाव ना, ऊँचे दाम का।" [30]

दहेज प्रणाली समाज मे प्रचालित बुराइयों में से एक है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि लड़कियों का बोझ के रूप में देखा जाता है।

दहेज प्रथा जो लड़कियों को आर्थिक रूप से मदद करने के लिए एक सभ्य प्रक्रिया के रूप में शुरू की गई क्योंकि वे नए सिरे से अपना जीवन शुरू करती है। धीरे–धीरे समाज की सबसे बुरी प्रथा बन गई है। जैसे ही लड़कियाँ बीस वर्ष की उम्र पार कर लेती है, उनके

माता–पिता की प्राथमिकता यही रहती है कि वे उनकी शादी कर दें। ऐसे मामला में भारी दहेज देना उन लोगो के लिए वरदान जैसी होती है जो अपनी बेटियों के लिए दूल्हा खरीदने में सक्षम है।

अवधी के प्रसिद्ध कवि 'निरझर प्रताप गढ़ी' ने दहेज प्रथा पर और बहु उत्पीड़न पर करारा प्रहार करते हुए लिखा–

"लिखै अंगुरी से खुनवा निकार चिठियाँ।
माई सहिया का तरसे व्वहार बिटियाँ।।"

भारतीय समाज मे दहेज प्रथा एक कोढ़ है। दहेज ना दे पाने की स्थिति में न जाने कितनी लड़कियों की शादी रुक जाती है और यदि शादी हो भी गई तो ससुराल वाले दहेज की मांग करके अपनी बहुँओं को प्रताड़ित करते है और बहु द्वारा लाए गए उपहारों की तुलना उनके आस–पास की अन्य बहुओं द्वारा लाए गए उपहारों से करते है और उन्हें नीचा महसूस कराते हुए व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते है।

लड़कियाँ अक्सर इसो वजह से भावात्मक रूप से तनाव महसूस करती है और मानसिक अवसाद से पीड़ित होकर फाँसी लगा लेती है तो कहीं आग लगा कर मर जाती है ये खबरे अखबारों में आम है।

वास्तव में हमारे समाज में बालिकाओं को बालका की अपेक्षा कम आँका जाता है। शिक्षा ही एक मात्र माध्यम है जो लडकियों को स्वालम्बी बना सकती है जिससे शायद वे दहेज प्रताड़ना से बच सके।

'स्त्रियों में संतोष और नम्रता और प्रीत यह सब गुण कर्ता ने उत्पन्न किये है। केवल विद्या की न्यून्ता है यदि यह भी हो तो स्त्रियाँ अपने सारे ऋण से चुक सकती है।" [31]

बिना शिक्षा के लड़कियाँ न तो सशक्त है, न समर्थ है और न आत्मनिर्भर है। माता–पिता की गरीबी का अभिशाप लड़कियों को शादी के बाद झेलना पड़ता है।

अतः समाज के समुचित एवं सर्वागीण विकास करने के लिए यह आवश्यक है कि नारियँ भी शिक्षित हों ताकि वे समाज में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकें। नारी के विकास के बगैर राष्ट्र के विकास की कल्पना करना निरर्थक है।" [32]

'निशिहर' जी ने दहेज प्रथा को समाज की विसंगति और कुप्रथा मानकर इस पर करारा प्रहार किया –

"दइज, प्रथा निरधन का देहे कलेस।
विटियन के ब्याहै मा लागति ठेस।।" [33]

'निशिहर' जी ने उच्च स्वर में इस प्रथा का विरोध करते हुए कड़ें दण्ड की अपील अपनी कृति के माध्यम से की –

"दइजु–लोभी बड़े ग्यानु खो देति है।
जानु अपनी पुतउ केरि लइ लेति है।
डडु अइसे खलन का मिलै खुब कड़ा
अउरि दयाखैं–डेरैं तो वऊ चेतिहै।" [34]

इस प्रकार 'निशिहर' जी ने अपनो कृतियों में दहेज प्रथा जैसी कुरीति का घोर विरोध किया।

सर्वविदित है कि हमारा समाज वैदिक वर्ण–व्यवस्था पर आधारित था जो चार भागो में बंटा था। कालान्तर में ये वर्णव्यवस्था परम्परागत रूप से जाति व्यवस्था में परिवतित हो गई है। इस जाति व्यवस्था में शूद्रो को निम्न श्रेणी मे रखा गया। इसमें अछूतो के हाथ का खाना–पीना, उच्च जातियों द्वारा वर्जित माना गया। कालान्तर में इस प्रथा ने अत्यन्त विभत्स रूप ले लिया।

समाज के एक वर्ग का अस्पर्श मान कर उससे अमानवोयता का व्यवहार किया जाने लगा। परिणामस्वरूप भारतोय समाज कई भागों में बँट गया और कमजोर हो गया। ऊँची जाति के लोगो ने निम्न जाति के लोगो को बहुत सताया लेकिन आजादी के बाद से संवैधानिक व्यवस्था के कारण और शिक्षा के प्रचार–प्रसार के कारण इसमें कमी आयी है –

"इधर जब से नगरीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी है। पारम्परिक वर्ण व्यवस्था का ह्रास भी तेजी से प्रारम्भ हो गया है और आज स्थिति यह है कि जीवन में वर्ण भावना के दोहरे मापदण्ड (अर्थमूलक और वर्णमूलक) विद्यमान हो गये है। जिनमें से एक विकासमान और दूसरा ह्रासोन्मुख है।" [35]

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' समतामूलक समाज के पक्षपाती है। वे चाहते है कि जाति व्यवस्था समाप्त हो और सभी लोग समरसता के सूत्र में बँधे। इस देश को जातिवाद ने बहुत हानि पहुँचाया है –

"जातिवादी अगिनि लागि जब ते बिकट।
बुति न पाई अबौ लग उठति है लपट
बीतिगे जुग, बहुत जरि रहा है मनइ
दुसमनी–रोगु ह्वावा करत हैं प्रगट।" [36]

'निशिहर' जी ने अपनी कृतियों मे भी यह दिखाने का प्रयास किया है कि आज भी ऊँची जाति के लोग नीचो जाति के लोगो को उच्च पदो पर बैठता हुआ नहीं देख पाते। आपकी 'आरक्षणी खेल' कहानी इसी व्यवस्था की ओर इंगित करती है।

किसी भी देश के विकास में उसकी संस्कृति का बहुत योगदान होता है। देश की संस्कृति उसके मूल्य, लक्ष्य, प्रथाएँ और साक्षी विश्वास का प्रतिनिधित्व करती है। भारतीय संस्कृति कभी कठोर नहीं रही, इसलिए यह आधुनिक काल में भो गर्व के साथ जिंदा है। यह दूसरी संस्कृतियों की विशेषताएँ सही समय पर अपना लेती है और इस तरह एक समकालीन और स्वीकार्य परपंरा के तौर पर बाहर आती है। समय के साथ चलते रहना भारतीय संस्कृति की सबसे अनूठी बात है। भारतीय संस्कृति विश्व की श्रेष्ठतम संस्कृति मानो जाती है जो उदारचेता है। सम्पूर्ण विश्व को अपना परिवार मानती है –

"अयम् निजाः अयम् परम् वेद
गणना लभतेनु साम उदार चरिता नाम्
देव वसुदेव कुटुम्भकम।"

गीता में भी 'सर्वभूत हिते रता' कहकर भगवान कृष्ण ने भारतीय संस्कृति के एकत्व की पुष्टि की है जो समता–ममता पर आधारित है। भारतीय संस्कृति अन्य संस्कृतियों को अपनी उदारता के कारण साथ लेकर चलती है। राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव की सबसे बड़ी विशेषता है।

'निशिहर' जी चाहते है कि सर्वागीण समाज का उत्थान हो और सभी समदर्शी हो जिससे सबका कल्याण हो वे – 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः' को मानते हैं।

"जाति–धरम कै आगी कूर लगाय
सुखु भाईचारा रहे नसाय।" [37]

हम अगर हमारे चारो ओर देखे तो ईश्वर की बनाई इस अद्‌भुत पर्यावरण की गोद में सुन्दर फूल लताये हरे–भरे वृक्ष, प्यारे–प्यारे चहचहाते पक्षी है जो आकर्षण का केन्द्र है। आज मानव ने अपनी जिज्ञासा और नई–नई खोज की अभिलाषा में पर्यावरण के सहज कार्यो में हस्ताक्षेप करना शुरू कर दिया है, जिसके कारण मानव ने अपने तत्कालिक लाभ के लिए पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ दिया व अपनी सोमा का अतिक्रमण किया। जैसे वनो का विनाश, जनसंख्या वृद्धि, अत्यधिक पशु चारण, औद्योगिक विकास, नगरीकरण संसाधनों का विवेकहीन विदोहन, ऊर्जा का अत्याधिक विदोहन तथा ऊर्जा का अधिक मात्रा में उपयोग आदि अनेक ऐसी क्रियायें है जिनसे पर्यावरण असंतुलित हुआ है।

पर्यावरणीय असंतुलन के फलस्वरूप आज अनेक समस्याएँ मानव के समक्ष विकराल रूप धारण किए हुए है। इनमें जल, थल तथा वायु प्रदूषण की समस्या प्रमुख है। वायुमण्डल के चारो ओर सूर्य की तीव्र किरणो के प्रहार को रोकने के लिए ओजोन परत है, परन्तु वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि समय रहते हमने पर्यावरण के ह्रास को नही रोका तो वह समय दूर नही जब सम्पूर्ण सभ्यता ही काल के गाल में समा जायेगी।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम पर्यावरण की सुरक्षा करें। पर्यावरण संरक्षण 'निशिहर' जी की कविता का एक आवश्यक अंग रहा है। अपनो कविता में उन्होने जगह–जगह पर शुद्ध पर्यावरण की बात की है –

"बिरवा डरिहौ काटि हरे तो पछितइहौ।।
जाइ भागि–पट फाटि जबै तो घबरइहौ।।
आइ जेठु बइसाखु आगि नभ तो ते बरसी।
मिली कतौ ना छाँह जबै तो कुँभिलइहौ।।
करति हवा का शुद्ध साँस लइ जियति सबै।
खुब दूसित होइ जाइ जबै तो अकुलइहौ।।" [38]

हम दोस्तो, परिवारो का तो बहुत ख्याल रखते है लेकिन जब पर्यावरण की बात आती है तो बस गाँधी जयन्ती या फिर स्वच्छ भारत अभियान के समय ही पर्यावरण का ख्याल आता

है। लेकिन यदि हम हमारे पर्यावरण का और पृथ्वी के बारे मे सोचेंगे तो इस प्रदूषण से बच सकते है।

किसी भी सभ्य समाज, अथवा संस्कृति की अवस्था का सही आकलन उस समाज में स्त्रियों की स्थिति का आकलन कर ज्ञात किया जा सकता है। विशेष रूप से पुरुष सत्तात्मक समाज में स्त्रियों की स्थिति सदैव एक ही नहीं रही। वैदिक युग में स्त्रियों को उच्च शिक्षा पाने का अधिकार था व वैदिक काल में नारी जाति का स्थान वर्तमान समय के समान निकृष्ठ नहीं था। नरियाँ याज्ञिक अनुष्ठानों में पुरुषो की भाँति सम्मिलित होती थी। वैदिक काल में गार्गा, मैत्रिय जैसी नारियाँ भी थी।

इसके बाद के काल में महिलाओं की दशा में अवमूल्यन हुआ और पुरुषो ने महिलाओं को पद्दलित भोग्या और दासी मान लिया। महिलाओं का नाना प्रकार के अत्याचार सहने पड़े और अनकी स्थिति पशुओं से भी बदतर हो गई।

मनु स्मृति कही भी महिलाओं को आगे बढ़ने से नहीं रोकती सामान्य धर्मानुसार वह महिलाओं के गुण धर्म को प्रकट करती हुई उनके आगे का मार्ग प्रशस्त करती है। मनुस्मृति में तो यहाँ तक कहा गया है कि जहाँ पर नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते है। इस सम्बन्ध में मनुस्मृति एक श्लोक द्रष्टव्य है –

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रिया।।"

भारत में आज भी महिलाओं की दशा दयनीय है। दिन–रात खटने वाली महिलाओं का कोई आर्थिक मूल्यांकन नहीं होता। प्रत्येक क्षेत्र में उनका स्थान पुरुषों से पीछे है। कुछ महिलाओं की प्रगति से ही सभी की प्रगति को नहीं आका जा सकता।

'निशिहर' जी का स्पष्ट मत है कि इस प्रकार की लैंगिक असमानता दूर होनी चाहिए। महिला–विमर्श के इस युग में महिलाओं को समानता मिलनी चाहिए –

"कर रही है नाम अपना नारियाँ।
असाधारण प्रकृति रचना स्वयं को वे मानती।
पुरुषो से हूँ कम नहीं समतुल्यता है जानती।
कर रहो हैं नाम अपना कर्मवीरा नारियाँ।" [39]

'निशिहर' जी ने स्पष्टतः कहा स्वतन्त्रता का मूल अभिप्राय है – 'निर्णय की स्वतंत्रता' और स्त्री स्वतंत्रता का रूप क्या होगा, यह स्वयं स्त्रियों का ही तय करना है, यह निर्णय कुछ विशिष्ट महिलाओं द्वारा नहीं लिया जा सकता। साहित्य किसी भी सैद्धांतिकी से प्रभावित हो सकता है और नया सिद्धांत भी गढ़ सकता है लेकिन साथ ही उसका एक बड़ा सामाजिक सरोकार होता है और यही से स्त्री–पुरुष के बदले मनुष्यता की जमीन तैयार होती है। बाल साहित्य की बहुत समृद्ध परम्परा है। बाल साहित्य क अर्न्तगत वह समस्त साहित्य आता है जिसे बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर लिखा गया हो। बाल साहित्य में रोचक कहानियाँ एवं कविताएँ प्रमुख है जो हमें अपनी नटखट तुतलाहट से रिझाता रहता है।

"बाल–साहित्य में सबसे बड़ी भूमिका निभाई है बालगीतों ने। जीवन के हर मोड़, हर राह पर आगे आगे पताका लिये चल है वे। हिन्दी के इन बालगीतों में भारतीय संस्कृति की बड़ी ही गहरी पहचान सुरक्षित रही है। उनमें जहाँ बात कहने का अपना ठेठ अंदाज था, वहीं प्रगति, आधुनिकता और जीवन की हर नयी संभावना को आगे बढ़कर स्वीकारने की ललक भी।" [40]

अवधी साहित्य में 'बाल साहित्य' का नितान्त अभाव है और जो बाल साहित्य अवधी में मिलता है न तो वह स्तरीय है न ही कवियों का बच्चों के प्रति समर्पण भाव है। हमारे यहाँ लोग बच्चों के बारे में बाते तो बहुत करते है। जैसे–बच्चे फूल है, बच्चे देश का भविष्य है, जिनकी खुशबू से देश महकता है आदि–आदि ऐसी सूक्तियाँ कह कर सब लोग किनारे हो लेते है। हम यह भूल जाते है कि बच्चों के लिए कुछ करना है तो उसे अभी करना पड़ेगा और उनके स्तर का साहित्य उन्हे देना पड़ेगा। बाल–साहित्य ही हो सकता है जो बच्चों के सामने कल्पना के नये क्षितिज खोले उन्हें उड़ने के लिए खूबसूरत मखमली पंख दे साथ ही साथ अपनी संस्कृति सभ्यता और देश से भी परिचित करायें।

'निशिहर' जी का साहित्य इस दिशा में मील का पत्थर साबित हुआ है। उन्होने अवधी में बाल साहित्य के अभावों की पूर्ति की है। विशेष बात यह है कि 'निशिहर' जी ने अपने बाल साहित्य में भारत वर्ष की भौगोलिक विशेषताओं का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है–

"अपै देसवा का भारत नाव।
नगर बहुतै कम ज्यादा गाँव।।

ठाढ़ हिमालै है उत्तर मा।
सबते ऊँच सैल जग भारिमा।।
गगा जमुना निकरी यही ते।
बहती रातिउ दिना जुगन ते।।" [41]

'निशिहर' जी बच्चों के लिए बच्चा बन कर लिखते है और कभी भी बलात अपने भावों को बच्चो पर थोपते नहीं। यहाँ तक कि इनका प्रयास रहता है कि जो कुछ भी अद्यतन हो रहा है उससे भी निरन्तरता बनाये रखी जाए बालगीतो को बच्चें खुद ही अपनी धुन में मस्ती मे गाते गुनगनाते फिरे। उनका मनोरंजन हो वे हँसे हँसाये ताकि बच्चों के भीतर मानवीय आस्था की सुनहरी लव प्रज्ज्वलित हो सकें –

"सबै मनई याकै परिवार के।
रहति द्रयासन मा सब संसार के।।
असरू पानी हवा पियै खाय का
रँगु उजर कार होता है द्रयाह का कतौ लघु कतौ बड़े आकार के।।" 42

'निशिहर' के बाल साहित्य में ऐसी अनेक कविताएँ है जो शिशुगीत भी है और बालगीत भी है। इक्कीसवीं सदी के निर्माण के लिए निःसंदेह आपके गीत बच्चो के लिए सशक्त दस्तावेज है। कविता वही अच्छी मानी जाती है जो युगबोध से अनुप्राणित हो। कोई कविता केवल समस्याएँ ही नही गिना सकती बल्कि उसे समाधान भी बताना चाहिए। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का कथन – 'साहित्य समाज का दर्पण है' पूर्णतः सत्य है समाज में जो भी घटता है साहित्य पर उसका प्रभाव पड़ता है। इस दष्टि से 'निशिहर' जी की कविताएँ युगबोध से प्राणित है। वैश्वोकरण, उदारीकरण का भी प्रभाव इनकी अवधी कविता का एक अंग है क्षेत्रोयता, अंचलिकता और इनसे सम्बन्धित समस्याएँ 'निशिहर' जी की कविता में है।

इसी प्रकार इनकी कहानियो में भी युगबोध के दर्शन होते ह। 'निशिहर' जी पारम्परिकता में बहुत विश्वास नहीं करते और उनका मानना है कि समाज के विकास के लिए साहित्य को भी अद्यतन होना चाहिए। उन्होने जो कुछ भी अपने गाँव में देखा वह सब अवधी साहित्य का अंग बन गया।

'निशिहर' जी के अवधी गद्य की भाँति इनका पद्य–साहित्य भी आधुनिक बोध से युक्त है। जब प्रा समाज, देश से जाति, धर्म को मिटाने का प्रयास कर रहा हो और लैंगिक असमानता पर चिन्ताए व्यक्त कर रहा है तब 'निशिहर' जी अपनी कविता क माध्यम से इन विषयों पर उत्प्रेरक का कार्य करते है –

"मिलै सुऔसर सबका, करै बिकास।
जाति धरम के भेद क होय बिनास।।" [43]

वर्तमान समय में भारत वर्ष की सबसे बड़ी समस्या जनसंख्या वृद्धि है। इसके कारण हमारी बुनियादी आवश्यकताओ की पूति में बाधा आती जा रही है। जनसंख्या वृद्धि देश की प्रगति में अवरोधक का कार्य कर रही है।

'निशिहर' जी ने जनसंख्या नियन्त्रण पर जोर देते हुए अपनी कृति 'एकउटनि' में यह सन्देश देते हुए कहते है –

"जनसंख्या ज्यादा अगर बढ़ि जाई।।
जन–जन का हींसा सुखद घटि जाई।।
नफा नकसानु बेकार नीक समझी।
जब बच्चा बच्चा सुढँग पढ़ि जाई।।
लगाई दिमाकु काम करी मन ते।
परगति के ऊँचे सिखर चढि जाई।।" [44]

हमारे संस्कृत साहित्य में कवियों का नीतिकर्ता के रूप में भी देखा गया है। हिन्दी जगत में अनेक कवि तुलसी जायसी, बिहारी, रहीम, आदि ऐसे कवि हुए ह जिन्होंने उपदेशात्मक कविता की है। कोई भी कवि नीति बताने व उपदेश देने का अधिकारी है। 'निशिहर' जी न भी अपनी कविताओं में स्थान–स्थान पर उपदेश दिए व कही–कही नीति की बाते बताई ह। ये नोतियाँ और उपदेश बहुत ही सरल भाषा में है और जनसामान्य के लिए ग्राह्य भी है।

भारतीय चिन्तकों ने व्यक्ति धर्म से समाज धर्म व समाज धर्म से राष्ट्रधर्म तथा राष्ट्रधर्म से विश्वधर्म को श्रेष्ठ माना है। भारतोय मनोषियों में यही आदर्शमान तत्व लोकमंगल की आधारशिला है। आज के भू–मण्डलोकरण में जब धर्म–संस्कृति और मूल्य बिखर रहे हो तो

ऐसे समय में 'निशिहर' जी लोकमंगल का भाव हमारे समक्ष रखते है, दया, माया, अहिंसा जो हमारो संस्कृति के मूलाधार है उनका समर्थन करते है। मानव एक चिन्तनशील प्राणी है मनुष्य को तथा उसके रहस्य को जानन के लिए उसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना आवश्यक होता है। 'निशिहर' जी की कहानियों में जो पात्र आयें है उनका चित्रण करते हुए देशकाल एवं परिस्थितियों के अनुसार उनका मनोवैज्ञानिक चित्रण प्रस्तुत किया है। इनकी कहानियों के अधिकतर पात्र गवँइ गाँव से सम्बन्धित है, अशिक्षित है अथवा साक्षर है, कुछ ही पात्र ऐसे है जो शिक्षित है। 'निशिहर' जी ने बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से इन्हें चित्रित किया है। 'साथ का पढ़इया' कहानी में शिवदीन और विशेषर भले ही बूढ़े हो गये है लेकिन जब वे मिलते है तो अपने बचपन को जरूर ताजा करते है जो बाल मनोविज्ञान के अर्न्तगत आता है।

इसी प्रकार 'निशिहर' जी 'मानमरजादा' कहानी की दुलारी का चित्रण स्वाभाविक ढंग से किया है। जब उसके लड़के पिकुवा को उसका पिता स्वयं गोली मार देता है तो दुलारी की मनोदशा का चित्रण 'निशिहर' जी बड़े मार्मिक ढ़ग से करते है।

निष्कर्षतः आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' ने अवधी गद्य और पद्य साहित्य मे समसामयिक विषयों को उठाया और जनजागरण फैलाया। इस प्रकार एक जनवादी अवधी कवि के रूप में 'निशिहर' जी ने दलितो–पीड़ितो और शोषितो की समस्या पर लिखा, साथ ही जीवन–मूल्यों के आरक्षण पर भी बल दिया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची : –

1. 'मधुप' मिश्र सुन्दर श्याम, अवधी साहित्य का इतिहास, भारत बुक सेन्टर लखनऊ, संस्करण– 2012, पृष्ठ संख्या–283
2. www.hindisaitya.com
3. hi.quora.com
4. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, पंक में पंकज, महामाया प्रकाशन तेलियाकोट रायबरेली, संस्करण–2019, पृष्ठ संख्या–65
5. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, प्याट के भीतर पेंडु, अवध भारती प्रकाशन हैदगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2017, पृष्ठ संख्या–26

6. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बच्चे गायें, अवध भारती प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2014, पृष्ठ संख्या–12
7. www.amarujala.com
8. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती समिति हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2005, पृष्ठ संख्या–134
9. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2014, पृष्ठ संख्या–74/75
10. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, खुब कमाव खुब छानौ घ्वाटौ, अवध भारती संस्थान हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–19
11. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बच्चे गायें अवध भारती प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2014, पृष्ठ संख्या–16
12. सन्तलाल, मारीशस में हिन्दी और राजेन्द्र अरुण का रचनाकर्म, भारत बुक सेंन्टर लखनऊ, संस्करण–2011, पृष्ठ संख्या–155
13. जोशी रतन, पर्यावरण अध्ययन, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा, संस्करण– 2004, पृष्ठ संख्या–भूमिका से
14. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, घुनघुना, अवध भारती संस्थान हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2013, पृष्ठ संख्या–11
15. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, लाल लाल पतंग, अवध भारतो प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2016, पृष्ठ संख्या–20
16. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, नीकि दिन अइहैं, अवध भारती संस्थान हैदरगढ, बाराबंकी, संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–5
17. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, खुब कमाव खुब छानौ घ्वाटौ, अवध भारती संस्थान प्रकाशन हैदरगढ, बाराबंकी, संस्करण–2012, पष्ठ संख्या–23
18. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, खुब कमाव खुब छानौ घ्वाटौ, अवध भारती संस्थान प्रकाशन हैदगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–25

19. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, खुब कमाव खुब छानौ घ्वाटौ, अवध भारती संस्थान प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–25
20. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2005, पृष्ठ संख्या–70
21. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2005, पृष्ठ संख्या–87
22. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, राना बेनी माधौ, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी , संस्करण–2008, पृष्ठ संख्या–4
23. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, राना बेनी माधौ, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ बाराबंकी, संस्करण–2008, पृष्ठ संख्या–4
24. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, परतन्त्रता नहीं स्वीकार, संस्करण–2004, पृष्ठ संख्या–5
25. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, म्वार नाव आजाद, अवध भारती समिति हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2006, पृष्ठ संख्या–4
26. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2005, पृष्ठ संख्या–30
27. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, पंक में पंकज, महामाया प्रकाशन तेलियाकोट, रायबरेली, संस्करण–2019, पृष्ठ संख्या–17
28. अवस्थी शरण सद्गुरू, दैनिक जागरण रायबरेली, जागरण प्रकाशन लिमिटेड मीराबाई रोड लखनऊ, संस्करण दिनांक–14 जून 2020, पृष्ठ संख्या–9
29. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, खुब कमाव खुब छानौ घ्वाटौ, अवध भारती संस्थान प्रकाशन हैदरगढ बाराबंकी, संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–5
30. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबकी, संस्करण–2005, पृष्ठ संख्या–42
31. शुक्ल रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, ग्रीन लीफ पब्लिकेशन वाराणसी, संस्करण–2015/2016, पृष्ठ संख्या–294

32. सिंह शिवनायक (सम्पादक), इन्दु वाषिक पत्रिका, इन्दिरा गाँधी राजकीय महिला महाविद्यालय रायबरेली, संस्करण–2010 / 2011
33. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, प्याट के भीतर पेंडु, अवध भारती प्रकाशन हैदरगढ बाराबंकी, संस्करण–2017, पृष्ठ संख्या–16
34. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, खुब कमाव खुब छानौ ध्वाटो, अवध भारती सस्थान प्रकाशन हैदरगढ़, बाराबंकी, संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–6
35. श्रीवास्तव मधुरलता, अवध के लोकगीत और उनका शिल्प–सौन्दर्य, सुलभ प्रकाशन लखनऊ, संस्करण–2007, पृष्ठ संख्या–229
36. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, खुब कमाव खुब छाना घ्वाटौ, अवध भारती संस्थान हैदरगढ़ बाराबंकी, सस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–8
37. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, प्याट के भीतर पेंडु, अवध भारती प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2017, पृष्ठ संख्या–7
38. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, एकउटनि, अवध भारती प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2018, पृष्ठ संख्या–21
39. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, पंक में पंकज, महामाया प्रकाशन तेलियाकोट रायबरेली, संस्करण–2019, पृष्ठ संख्या–27 / 28
40. भारती प्रकाश जय, हिन्दी के श्रेष्ठ बालगीत, पराग प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–1997, पृष्ठ संख्या–भूमिका
41. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, घुनघुना, अवध भारती संस्थान हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2013, पृष्ठ संख्या–80
42. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, घुनघुना, अवध भारती संस्थान हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2013, पृष्ठ संख्या–89
43. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, प्याट के भीतर पेंडु, अवध भारती प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2017, पृष्ठ संख्या–10
44. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, एकउटनि, अवध भारती प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2018, पृष्ठ संख्या–31

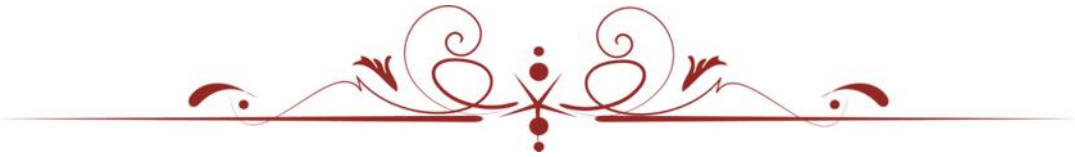

अध्याय पंचम
'निशिहर' जी की रचनाधर्मिता का शिल्प–विधान

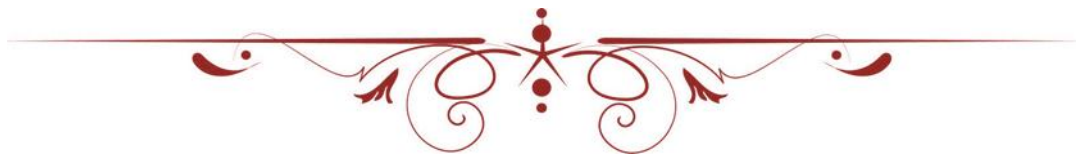

अध्याय–पंचम

'निशिहर' जी की रचनाधर्मिता का शिल्प–विधान

प्रत्येक साहित्यकार यह प्रयास करता है कि उसके भावपक्ष के साथ उसका शिल्पगत वैशिष्ट्य भी समृद्ध हो, साहित्यकार कि कृतियों में कथ्य पद्धति का महत्वपूर्ण स्थान होता है। निर्बल, शिल्प, भावपक्ष को निर्बल बना देता है। अगर कथ्य में लेखक या कवि के भाव अनुभूतिजन्यता, संवेदनशीलता, परिवेश और संस्कारो का समावेश लिए होत है तो कथन पद्धति में विचारों की अभिव्यक्ति साधनों की प्रयोगविधि विचारणीय होती है।

शिल्पगत वैशिष्ट्य के अन्तर्गत भाषाशैली, शब्दशक्ति, लोकोक्तियाँ, मुहावरे, अलंकार, रस और छन्द आदि आते है।

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' का अवधी साहित्य उनके भावपक्ष के साथ शैलीगत वैशिष्टय को ही महत्व देता है। 'निशिहर' जी ने अभिव्यक्ति के इन साधनो को अपनी कहानियों और काव्य में उचित स्थान देकर अपनी अभिव्यक्ति को मुखर किया है।

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' मूलतः कवि है, इसलिए इनकी शैली में भावपक्ष प्रधान है। उन्होने चाहे मुक्तक, लिखे हो अथवा प्रबन्धकाव्य या खण्डकाव्य इन सबमें इन्होने गेय शैली का प्रयोग किया है। इनकी कविताओं की यह विशेषता है कि इन्हें लय में पढ़ा जा सकता है। प्रकारान्तर से यह कहा जा सकता है कि इनकी अधितर रचनाएँ गेय शैली में लिखो गई है और प्रायः तुकान्त युक्त है, गेयता होने के कारण इनकी कृतियों में गीतकाव्य की तरलता पायी जाती है जो कि कविता का एक आवश्यक गुण है। संगीतात्मकता, ध्वन्यात्मकता इनकी कविताओं को वैशिष्टय प्रदान करती है। अवधी कविता में अभी अतुकान्त रचनाओ का प्रायः अभाव है जो बहुत कम मिलती है और गद्य कविता का तो सर्वथा अभाव ही है। अवधी कविताओं को लय म गाकर पढ़ना 'आर्ट ऑफ लिविंग' का एक प्रमुख गुण माना जाता है जो आनन्द की अनुभूति कराता है। गेयता का यह गुण ही कविता को चिरंजीवी और जन–जन का कंठहार बनाता है। 'निशिहर जी' जिस परिवेश मे रहते है वह ग्रामीण है। बहुत कम लोग उच्च शिक्षित है अधिकांश जनसंख्या साक्षर अथवा निरक्षर है, ऐसे वातावरण में यदि गद्यात्मक कविताएँ लिखी अथवा पढ़ी जाए तो पढ़ने और सुनने में अच्छी लगती है और सम्पषणशील है।

गेय शैली मे 'निशिहर' जी का एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

"दया मया का मनई भूले जाय रहा
हिंसा के झुलुवा मा झूले जाय रहा।
फल तरकारी नाज खाय की चीजै भूल
मछरी, बोकरी, मुरगा पेले जाय रहा।" [1]

जहाँ तक शैली का प्रश्न है 'निशिहर' जी ने परम्परागत शैली तो अपनाई ही है और कही–कही पर आधुनिक शैली का भी प्रयोग किया है। आधुनिक शैली में अप्रस्तुत विधान दिखाई पड़ता है। शैली की यह विशेषता आंचलिकता को संस्पर्श करते हुए चलती है।

समाज में रहकर हम अपने विचार और भाव दूसरो पर व्यक्त करते है उनके भाव और विचार सुनते और समझते है। भावो का यह सम्प्रेषण लिखकर, कहकर अथवा संकेतो के माध्यम से होता है इसीलिए भाषा हमारे जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है –

'भाषा' शब्द संस्कृत की 'भाष' धातु से बना है जिसका अर्थ है बोलना पर यहाँ बोलने से समझना भी जुड़ा है। भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त यादृच्छिक ध्वनि संकेतो (प्रतीकों) की व्यवस्था को कहते है।" [2]

भाषा सामाजिक व्यवहार की वस्तु है जिसके माध्यम से हम समाज मे अपना सम्पर्क स्थापित करते हुए अवसरानुकूल व्यवहार करत है।

भाषा भावो की अनुगामिनी होती है इसलिए चाहे कविता हो, चाहे गद्य हो उसे सम्प्रेषित करने के लिए भाषा एक अनिवार्य तत्व है। यह अनिवार्य तत्व अवधी के साहित्यकार आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' के अवधी साहित्य में देखने को प्रभावी रूप से मिलता है।

'निशिहर जी' न भाषा–सौष्ठव के रूप में लोकभाषा अवधी को अपने काव्य में अपनाकर उसे सार्थकता प्रदान की है 'म्वार नाव आजाद' अवधी खण्डकाव्य में हाइकु का प्रयोग अवधी में पहली बार हुआ है जो कविता के लिए नये शिल्प का प्रयाग है। इस दृष्टि से लोकभाषा अवधी में लीक से हटकर 'निशिहर' जी ने अभिनव प्रयोग किया है –

"जबहीं आयी/काकोरी टेसन मा/सब जानेन
दउरि चढ़े/सकल मुसाफिर/हरि डेब्बा मा/

लइ टिकट/क्रन्तिकारिउ चढ़े/बदले भेस।

कोउ बढ़ाये/कोउ कटाये/सिर के केस" [3]

'निशिहर' जी ने अवधी के शब्दो को व्यापक भावबोध प्रदान किया है। अनेक देशज शब्द जो इनकी कृतियों में प्रयुक्त हुए है उनका अर्थ बड़ा ही अद्भुत है इनकी कृतियों का महत्व इसलिए और भी बढ़ जाता है क्योंकि इन्हाने ठेठ बैसवारी के शब्दो को प्रचुरता और प्रमुखता के साथ प्रयुक्त किया है। किसी भी लोकभाषा की कृति देशज शब्दो के प्रयोग से लालित्यपूर्ण तो होती ही है साथ ही मूल्यवान भी हो जाती है।

जब बालचाल की भाषा से देशज शब्द मुहावरे लोकाक्तियाँ आदि गायब हो रहे है तो आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' की कविताएँ भाषाई संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

अवधी की तीन उपबोलियाँ है, पूर्वी अवधी, पश्चिमी अवधी और केन्द्रिय अवधी, केन्दीय अवधी को ही बैसवाड़ी या बैसवारी अवधी कहते है। बैसवारी अवधी पूर्वी अवधी की अपेक्षा कुछ खरापन लिये रहती है। तीनो उपबोलियों में थोड़ा–थोड़ा अन्तर है। इसका कारण यह है कि –

"भाषा ध्वनियों का समवाय होती है। प्रत्येक भाषा अथवा बोली अनेकानेक ध्वनियों की संख्या और स्वरूप लेकर चला करती है। 'कोस कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी' बदलने की बात प्रसिद्ध है। यद्यपि कुछ व्यापक विशेषतायें उन्हें एक परिवार की संज्ञा में आबद्ध रखती है तथापि कुछ सूक्ष्म अन्तर उनके अस्तित्व को स्पष्ट करता रहता है।" [4]

उन्नाव और रायबरेली के चौदह परगनो को बैसवाड़ा नाम से जाना जाता है जहाँ पर बैस ठाकुरो का अधिकार रहा है, पहले यह जिला था जो 1857 की गदर के बाद रायबरेली और उन्नाव में विभाजित हो गया परन्तु आज भी जनजीवन में यह क्षेत्र बैसवाड़ा या बैसवारा कहा जाता है यहाँ की बोली बैसवाड़ी अथवा बैसवारी मानी जाती है।

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' इसी बैसवाड़ी धरती के साहित्यकार है। बैसवाड़ी अवधी की साधारण क्रियाओं में प्रायः अनेक रूप पाये जाते है और वकारान्त क्रियाओं मे ए श्रुति के योग से वह बैसवारी बन जाती है। 'निशिहर' जी ने अपनी रचनाओं में वकारान्त

क्रियाओं का बखूबी प्रयोग किया है, बैसवाड़ो अवधी में चोर–च्वार, देखना–द्याखति, खेत–ख्यात और पेट को प्याट व बोलती–ब्वालति जैसे शब्दो का प्रयोग होता है। ऐसे शब्दो के प्रयोग से निशिहर की काव्य–भाषा सजीव बन गई है –

"साफ सीतल हवा धीरे–धीरे चलति
सांस लइ व्याट–भीतर पठावा करै।" [5]

अवधी भाषा मे ज्ञ की जगह ग्य, य की जगह ज और ताल्वय–श व मूर्धन्य–ष के स्थान पर दन्ति–स का प्रयोग किया जाता है। 'निशिहर' जी ने अपनी अवधी रचनाओं में अवधी भाषा नियम का पूर्णतः पालन किया है। 'निशिहर' जी की बैसवारी अवधी का एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

"विद्यालै बंद होय के बादि निरासा के सागर म बूडत–उतरात बिसराम सैकिल ते अपै घर का चलि देहेन। रास्ता म उनका लाग कि आजु सैकिल बहुत गरूवा रही है। ताकति ज्यादा लगावै का परि रही है। यहि तरा अउरे दिन ते आधा घंटा दयार म वी अपै घरे पहुँचे। सैकिल क ठढ़िहा कै कमरा म घुसिकै पलँग म परि रहें।" [6]

इस प्रकार ठेठ बैसवारी अवधी में लिखने के साथ–साथ 'निशिहर' जी ने काव्य भाषा में अवधी के असीम शब्द भण्डार के अतिरिक्त अंग्रजी फारसी, उर्दू, संस्कृत और इनके तद्भव तत्सम शब्दो को आवश्यकतानुसार प्रयोग किया है, कही–कही पर तो इन शब्दो का बैसवाड़ीकरण भी कर दिया गया है, समर्थ और सामयिक शब्दावली के वर्णन में शब्द शक्ति में वृद्धि की है और स्थानोयता के नाते शब्दों पर इनका नियन्त्रण भी बना रहा।

शब्द का अर्थ बोध कराने वाली शक्ति ही शब्दशक्ति कहलाती है। यह शब्द और शक्ति के समन्वय से बना है अर्थात शब्दशक्ति का समास विग्रह करने पर इसका तात्पर्य शब्द की शक्ति बताने से होता है।

शब्द के अर्थबोध द्वारा ही उसकी सामर्थ्य का ज्ञान होता है अर्थात व्याकरण पुस्तक काव्य रसायन में लिखा है –

"शब्दो का वह व्यापार, जिसके द्वारा किसी अर्थ का बोध होता है, शब्द शक्ति कहलाता है।" [7]

शब्द शक्तियाँ तीन प्रकार की होती है अभिधा, लक्षणा और व्यंजना जिस शब्द को शक्ति से उसका स्वाभाविक अर्थ ज्ञात होता है उसे अभिधा शक्ति कहते है। मुख्य अर्थ का पता लगने पर उससे सम्बन्धित अन्य अर्थ का बोध होने पर वहाँ लक्षणा शक्ति होती है, इसी प्रकार शब्द के जिस व्यापार से मुख्य और लक्ष्य अर्थ से भिन्न अर्थ का बोध होता है उसे व्यंजना शक्ति कहते है। आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' के अवधी साहित्य में अभिधा शक्ति का बहुतायत प्रयोग हुआ है। परन्तु लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्ति को 'निशिहर' जी ने कुछ ही जगह प्रयोग किया है। अभिधा शक्ति का एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

"न ठेका पावत सुधुवा–छवाट
मिलत वहिका जउँ सरहँग–म्वाट
मजूरी बहुतै कम है देत
बिछाये रहत चहूँदिसि म्वाट।" [8]

'निशिहर जी' ने अवधी हाइकु 'नीकि दिन अइहै' की रचना की। उनकी इस कृति में लक्षणा शक्ति का प्रयोग मिलता है –

"सकुनी बाढ़ि/भाइन भाइन का/फ्वारै क ठाढ़ि।" [9]

'नीक दिन अइहे' कृति में 'निशिहर' जी ने कही–कही व्यंग के रूप में व्यंजना शैली का भी प्रयोग किया है –

"डटि कै माँजै/आचरन–लोटिया/चमचमाय" [1]

'निशिहर' जी की कृतियों में काव्य की सभी विशेषताएँ समाहित है। काव्य का गुण ही किसी कृति को पाठक की ओर आकर्षित करने में मुख्य भूमिका निभाते है।

गुण संप्रदाय के आचार्यो ने काव्य में गुणों का अत्यन्त उत्कृष्ट स्थान प्रदान किया है। आधुनिक आचार्यो ने गुण को उतना उच्च स्थान नहीं दिया है और उन्हें काव्य के अभिव्यक्तिपक्ष का ही एक अंग माना है। वस्तुतः गुण रस के धर्म है। गुणों से काव्य में रस का उत्कर्ष होता है।

गुण तीन प्रकार के होते हैं– माधुर्य, ओज और प्रसाद। ये शब्द योजना तथा वर्णन विधान पर निर्भर रहते है तथा भावाभिव्यंजना के सौन्दर्य को बढ़ाते है।

जिस गुण के कारण किसी रचना को पढ़ या सुनकर चित्त आनंद से द्रवित हो जाये, उसे माधुर्य कहते है। माधुर्य गुण श्रृंगार, वात्सल्य तथा शान्त रस में अधिक दृष्टिगोचर होता है। इसमें कर्णकटु शब्दावली का निषेध होता है। लम्बे–लम्बे समासों का प्रयोग भी इसमें निषिद्ध है। जहाँ क, वर्ग, च वर्ग, त वर्ग, ड, भ, ण व, से युक्त वर्ण, अनुस्वार वाले वर्ण होते है, वहाँ माधुर्य गुण होता है।

'निशिहर' जी की कृति माधुर्य गुण से ओत–प्रोत मुक्तक –

"काका– काकी कहबु बंद भा।
अम्मा–बप्पा कहबु मंद भा।
मम्मी मैम आंटी डैड
अँगरेजी सुरू खुब बुलंद भा।" [11]

ओज गुण के अन्तगत वीर, वीभत्स, रौद्र आदि रसों का उत्कर्ष होता है। इसके लिए कर्कश, क्लिष्ट शब्दावली संयुक्ताक्षरों के प्रयोग लम्बे–लम्बे समास तथा ट, ठ, ड, ढ, श, ष आदि वर्णो की प्रचुरता आवश्यक हैं।

'निशिहर' जी की कृति 'राना बेनी माधौ' खण्डकाव्य से उदाहरण स्वरूप पंक्तियाँ–

"लल्हकारत सब साथिन का
सबजा सवार नृप राना।
रन कला असीम देखायेन
वही चिनहट के मैदाना।।" [12]

'निशिहर' जी के तीनो खण्ड काव्यों 'म्वार नाव आजाद', 'परतन्त्रता नहीं स्वीकार' और 'राना बेनी माधौ' में ओज गुण के स्पष्ट दर्शन होते है –

"लच्छि एकु भारत माइया का कटै गुलामी बँधना।
जुटे रहौ खुब बहादुरी ते बाँधे मूँड़े कफना।।
यहै करम बर अउर धरम निज जानौ मत ते मानौ
मौको ढूढ़ि फिरंगिन पर लीन्हे पिस्तौले तानौ।।" [13]

'निशिहर' जी की कृतियों में प्रसाद गुण का स्थान महत्वपूर्ण विशेषकर उनकी बालगीत व शिशुगीत में प्रसाद गुण की महत्ता बनीं है।

जहा पर अन्यन्त सरल तथा भावानुभूति व्यंजक शब्द–योजना के कारण सुनते ही अर्थ प्रतीति हो जाए, वहाँ प्रसाद गुण होता है। सदृश्यचित की ऐसी निर्मलता चित्त में इस प्रकार व्याप्त हो जाती है, जिस प्रकार कि सूखी लकड़ी में आग, प्रसाद गुण कहलाती है। जिस प्रकार पके हुए अंगूर का रस बाहर से झलकता है, उसी प्रकार प्रसाद गुणयुक्त काव्य का भावार्थ शब्दों से झलकता हैं उसको समझने में देर नहीं लगती। प्रसाद गुण सभी प्रकार की रचनाओं में प्राप्त हो सकता है।

"पचासी साल के बाबा हमारि।।
नये है ख्याल के बाबा हमारि।।
दुइ ही तीन दाँत उखरे है
न पचके गाल के बाबा हमारि।।" [14]

उपर्युक्त पंक्तियाँ 'निशिहर' जी द्वारा रचित, बालगीत 'बाबा हमारी' से संबंधित है जिसमें प्रसाद गुण स्पष्टता द्रष्टव्य है।

'निशिहर' जी के काव्य में लोकोक्ति और मुहावरा की तारतम्यता परस्पर देखने को मिलती है जिससे उनके द्वारा रचित कृतियों में भाषा को चार चाँद लगाने जैसा कार्य करती है और पाठको को लभाती है।

लोकोक्तियाँ और मुहावरो का प्रयोग भाषा का प्राण–तत्व है। इनके समावेश से भाषा विशिष्ट सौन्दर्य–युक्त, सजीव और चमत्कारिक हो जाती है। प्रसाद गुण से सुज्जित भाषा का प्रमुख साधन लोकोक्तियाँ और मुहावरे ही होते है। इनका आश्रय लेकर बड़ी से बड़ी बात को सहज रूप से संप्रषित किया जा सकता है आधुनिक खड़ी बोली काव्य की एक बहुत बड़ी कमी मुहावरों और लोकोक्तियों का कम प्रयोग है। यही कारण हे कि यह व्याख्या की अपेक्षा करता है।

लोकाक्तियों और मुहावरों के संन्दर्भ में यह भी ध्यात्यव्य है कि जिस भाषा म इनका प्रयोग हो, लोकोक्तियाँ और मुहावरे उसो देश और समाज के होने चाहिए अन्यथा अनूदित और अप्रचलित मुहावरे भाषा में सुगमता और स्वाभाविकता लाने के स्थान पर कृत्रिमता और क्लिष्टता को ही प्रश्रय (बढ़ावा) देंगे।

जब कोई वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाता है लेकिन जब कोई पूरा कथन किसी प्रसंग विशेष से उद्‌भूत किया जाता है तो उसे लोकोक्ति कहते है। आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' के अवधी साहित्य में लोकोक्तियाँ और मुहावरे पर्याप्त मात्रा में दिए है। लोकोक्तियाँ और मुहावरो का प्रयोग 'निशिहर' जी ने स्वभाविक रूप से किया है, इसीलिए इनकी भाषा आकर्षक हो गई है जो भी लोकाक्तियाँ व मुहावरे 'निशिहर' जी ने प्रयोग किय है वे अपने ही देश व समाज की उपज है और बैसवारे सहित समस्त हिन्दी क्षेत्र में उनका प्रायः चलन है।

'निशिहर' जी द्वारा प्रयुक्त कुछ लोकोक्तियाँ और मुहावरे निम्नलिखित है –

"जल्दीबाजिम खाव–अघाव
गुरू–सेतुवा का सानौ तो।।"

पाँव आपन राखु 'निशिहर' चादरै मा।
भवा बाहेर जाहिका हलकानु होइगा।।

मरा जा रहा आँखिन का पानी।
'निशिहर' बेभिचारिन क दल बढ़ि रहा।।

बकुला करि न सकति बराबरि हंसन कै।
करिहैं खुब गंदगी जहाँ पर बसि जइहैं।।

करिया अच्छरू भइँसि बराबरि जिनका है।
उनके सुतन क पढ़ा दियै जो वहै भला।।

अँगुरी ठा सकै ना कोउ।
फर्ज निभावै सदा अपनि।।

दाबे जबरा। किकिहात निबंरा/बेबस परा
घर मुखिया/भागु गुणा करत/गिरित्ती चलै।
जनता जागै/मतु का जूता मारै/कुनेता भागै।
जबै मिलिगा/**नहले का दहला**/अहं गलिगा
मिलिगा बापु/झौंकै लाग बगली/बोलती बंद
सहत रहा/पानी सिर ते बहा/औजारू गहा

"पतनी बिटिया बेटवा बहिनी
बंधू सब कोउ मांगत है
गल गल होत जबै पावत
ना मिलत तो मुँहु लटकावत है
बड़ेन बड़ेन का अपने बल पर
बस मा यहै करइया है।।
"कपड़ा जूता नीकि न पहिना
मद्दि मा कीन गुजारा
धूँकु लगा कै रूपिया जोरि कै
नौ बियाह करि डारा
मिलतै वेतनु हुर्रू हवात है
पास रहत दिन चारिका।।"
"दइ सुपारी कूर मनइन का
पठइ है उदरि घेरिबै
भागि कै ना जाय पइहैं
उन सबन का खेदि मरिबै
दालि ना गलि पाइ तिनकौ
तोरि भारत धरनि तल मा।।"
"आवा अगर तो पकरि कै गिरावत
दूधू छठी का यादि तबै करावत
अढ़ेंगी कूर भुलावत जीवन मा।
"जो कोउ हिम्मति हारा जग मा।।
कामु बेगारिसि सारा जग मा।।"

'मुला दुसरवा हमारि तड़क–भड़क देखि क ब्वाला आवा साहेब बइठो'। वहिका, 'आव साहेब बइठौ' कहबु सुनिकै हमार पीठासीन अधिकारी होय क भाव अक्कास म चढ़िगा।

'जो रोकित तो बहु गोली जरूर मारि दयात। वहिके खूनु सवार होइगा रहै। हम तो जान ते जाइत। परिवारू अनाथ होइ जात।'

"वहि राति हम का नींद नहीं आइ। पूरी राति करवटै बदलत बीता रहै। जऊँ अपमान के घूँट पियै का परा रहै, दुइ, दिन की अपसरी म, वहु अबौ तक नहीं भूला।

"न जानै कहाँ कहाँ, कस–कस पापड़ ब्यालै क परा, म़ला हम हार नहीं माना। अब तन मन ते भारत माता कै सेवकाई करि रहे हन।"

"धंधा करबु कउनो खराब कामु थोरो आय। याक पुरानी कहनूति है, 'उत्तिम खेती मध्धिम बान।"

"पहिने पढ़ि लिखि कै बनयइ करै क खराब माना जात रहा मुला अब बइस नहिन। यहि बारे म तब कहनूति कही जाति रही "पढ़ै फारसी व्याँचै तेलु। यहु दयाखौ कुदरति का खेलु।"

"एतना सुनिकै सियावती, छबीला औ गाँव वालेन के पाँयन तरे ते जमीन खसकि गै। सब गँवहा स्याम बिहारी की म़रूखइ औ निरइपन क स्वाचै लागि।"

"पिंटुवा कपूत निकरा जउँ बनी बनाइ मान–मरजादा म कालिखि प्वातत रहा। बहु बापो क गरियावत औ मारै दउरत रहा।"

"सोरी ना अगर चरइ है, भूखा रह है बिललइ है। पुरिखन कै लोटिया बोरिहै, दुनिया का पूरि हँसइ है।।

"यतना सुनि बेनी माधौ राना खुब गलगल होइगे। आसा के फूल तमामन मन–फुलवाइै ना कोउ उठाये।। "

"नौकर–चाकर सब अभिरे करि रहे कामु जो पाये। कतहूँ न कमी रहि जाये, अंगुरी ना कोउ उठाये।।"

"दालि गली ना होपग्रंट कै खुब खिसियाना। कइसी गे चढ़ि बाजि बीर राना मरदाना।।

"म्वाछन का ताव म अपैं अँइठि। राना अपने सब्जा म बइठि।।

"सोरी न अगर चरइ है भूखा रइ है बिललइ है। पुरिखन कै लोटिया बोरि है, दुनिया का पूरि हँसइ है।।

"यतना सुनि बेनी माधौ राना खुब गलगल होइगे। आसा के फूल तमामन मन–फुलवाई मा खिलिग।।

"नौकर–चाकर सब अभिरे करि रहे कामु जो पाये। कतहुँ न कमी रहि जाये, अँगुरी ना कोउ उठाये।।

"म्वाछन का ताव म अपैं अँइठि।
श्राना अपने सबजा म बइठि।।"
"दाँति पीसि निज भउँह चढाई।
मारिसि कसिकै जोरू लगाई।।"
"यहि जग मा ना बड़ा हवै दादा औ भइया।
समझदार जउँ लोग कहति हँस बड़ा रूपइया।।"
"लडे लडाई साथ्ज्ञ मुसीबत बहुतै झेलेन।
अपैं द्रयास के बरे खून कै होरी खेलेन।।"
"करै लागि सठ बाबा भोग बिलास।
पोल खुलति जन थूकति जाति न पास।।"

अलंकारो की दष्टि से आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' का काव्य समृद्ध है। इनकी रचनाओं में अलंकार स्वभावगत आयें ह जो भाषा की चारूता बढ़ाते है। अलंकार दो शब्दों से बना है अलम् +कार अर्थात जो अलंकृत करे अथवा शोभा बढाए उसे अलंकार कहते है।

"अलंकार शब्द अलम और कार शब्दो के योग से बना है यहाँ अलम् का अर्थ है– भूषण तथा कार का अर्थ है 'वाला' अर्थात जो अलंकृत करे अथवा शोभा बढ़ाने से स्त्री के सौन्दर्य में चार चाँद लग जाते है, उसी प्रकार अलंकार के प्रयोग से काव्य का सौन्दर्य बढ़ जाता है। अलंकारों के प्रयाग से शब्द और अर्थ में चमत्कार उत्पन्न हो जाता है।"

'निशिहर' जी की कविता में अलंकारों के कारण न तो भाषा दुरूह हुई है और न ही अप्रस्तुत विधान पारम्परिक रहा है जो एक शुभ लक्षण है इनका अप्रस्तुत विधान अभिनव उक्तियो और कथनो से वैभव मण्डित है जो हमारे मानस जगत को गहराई से छूते है। 'निशिहर' जी ने शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनो का प्रयोग किया है।

अलंकारो में उपमा, रूपक, मानवीकरण, अनुप्रास और श्लेष अलंकार तथा उत्प्रेक्षा अतिशयोक्ति आदि अलंकार आते है। जहाँ उपमा में उपमान की संभावना या कल्पना हो, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। अवधी के आधुनिक प्रमुख प्रबन्ध–काव्यों की 'निशिहर' जी का अभिव्यक्ति पक्ष –

"वे अगणित अंग्रेज ओर हर लगे विचरने
मानो वर्षा ऋतु में पाँखीलगी हों उडने।
राव–दुर्ग के इर्द गिर्द सब लगे घूमने
कैसी कहाँ जगह है? स्थिति लगे देखने।" [15]

जहाँ व्यंजनो की समानता हो, चाहे उनके स्वर मिलें या न मिलें वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है, जैसे 'निशिहर' जी ने 'म्वार नाव आजाद' की इन पंक्तियों में लिखा –

"मुरगा–मुरगी मुदित मंजु दरबा निज छाँड़ेन।
कुकुडुक कूँ का रामु जोर अतिसय वी छेड़ेने।।
वाँकै लागी भँइसी, बाँ बाँ बोली गाई।
दूधु पियै का जागि उठे लैरा मुसुकाइै" [16]

जहाँ पर किसी वस्तु का वर्णन लोक–सीमा से इतना अधिक बढ़ा–चढाकर किया जाये तो वह असत्य लगने लगे, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। 'निशिहर' जी की कृति 'परतन्त्रता नहीं स्वीकार' से अतिशयाक्ति अलंकार का उदाहरण द्रष्टव्य –

"प्राची दिशि नभ लाल उदय हो रहा था दिनकर
तोपें दागना शुरू किया अतिशय गुस्सा कर।
लगी गरजने गड़गड़ाक नभ–भुआँ छा गया
उसमें रवि रजनी का ऐसा चाँद हो गया।" [17]

जहाँ पर मानवीय क्रियाकलापों का अन्य वस्तुओं में आरोप हो वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है। 'निशिहर' जी की कृति से मानवीकरण का एक उदाहरण द्रष्टव्य –

"ठंठि दिनन कै चुकिगै जवानी
बूढ़ि असि ढलिगे आवा बसंतु।
बागै फसलै सबै मुसक्यानी

बलम जस मिलिगे आवा बसंतु ।
चढ़ी जवानी बहुतै फुलानी
पहुँचि ढिंग अलि में आवा बसंतु।
पियै लागि कुसुमन का मीठ रसु
सबै ते हिलिगे आवा बसंतु।" [18]

जहाँ उपमेय में उपमान का आरोप किया जाये, वहाँ रूपक अलंकार होता है। रूपक का एक सुन्दर उदाहरण –

"सुमन मन खिलिग आवा बसंतु
रंग ढँग बदलिगे आवा बसंतु।
घामु चटक होय लाग सुरूज का
सिसिरउ सकिलिगे आवा बसंतु।" [19]

इसके अतिरिक्त 'निशिहर' जी के काव्य में उपमा, यमक, श्लेष व्यतिरेक आदि सहित अन्य अलंकार भी मिलते है जिनका सुन्दर सहज और स्वाभाविक प्रयोग 'निशिहर' जी ने अपनी कृतियों म किया है।

सब प्रकार के काव्य का प्राण रस है। बिना प्राण के शरीर निर्जीव हो जाता है परन्तु प्राणों के रहते हुए भी शरीर के वाह्य सौन्दर्य को आकर्षक बनाने की आवश्यकता रहती है। भावपक्ष तथा कलापक्ष इन दोना का अटूट संबंध ह, जहाँ एक का भी परित्याग हुआ या क्षीणता आई, वहाँ काव्य की अन्तरात्मा में स्वयं को उद्‌भासित करने की क्षमता नहीं रह जाती। कहने का तात्पर्प यह है कि कवि चाहे कितना प्रतिभावान हो, उसकी सामग्री चाहे जितनो उत्तम क्या न हो, उसके भाव और विचार चाहे जितने परिपक्व क्यों न हो, जब तक उसकी रचना में रूप–सौन्दर्य का अभाव रहेगा, तब तक उसकी कृति सराहनीय नहीं होगी।

"जब कोई प्रतिभावान कलाकर शब्द–भण्डार का प्रयोग इस रीति से करता है कि एक चमत्कार, प्रभाव, रमणीयता और रसात्मकता का प्रादुर्भाव हो जाता है तो इस शाब्दिक योजना को काव्य का नाम दिया जाता है।" [20]

रस शब्द की व्युत्पत्ति 'रसस्यते डासौ इति रसः' के रूप में हुई है अर्थात जो चखा जाए या जिसका स्वादन किया जाए अथवा जिससे आनन्द की प्राप्ति हो, वही रस है।

सामान्य भाषा में 'रस' का अर्थ 'स्वाद' से लिया जाता है, परन्तु साहित्य में 'रस' का आशय उस आनन्द से लिया जाता है जो काव्य को पढ़ने, सुनने अथवा अभिनय देखने में मन में उत्पन्न होता है।

'भरत मुनि ने सर्वप्रथम अपने 'नाटयशास्त्र' में इसका स्वरूप बताया है। रस की निष्पत्ति (रस उत्पन्न होने की प्रक्रिया) के सम्बन्ध में उन्होने लिखा है–विभावानुभाव व्यभिचारिसंयोगा रसनिष्पतिः अर्थात विभाव, अनुभाव व्याभिचारी भाव (संचारो भाव) के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।" [21]

'निशिहर' जी की कविता में प्रायः सभी प्रकार के रस पाये जाते है। वीर, शान्त, करूण रौद्र, विभत्स, भयानक, वात्सल्य और श्रृंगार रसो का प्रयोग इन्होने अपनी कविताओं में किया है।

नव रसों में श्रृंगार की प्रधानता है। श्रृंगार रस को आदि रस तथा रसराज की संज्ञा से विभूषित किया गया है।

"श्रृंगार रस का काव्य विश्वसाहित्य में अपनी सर्वोच्चता सिद्ध किये हुये है। इसका कारण एक पंक्ति में कह सकते है – "प्रेममय है सारा संसार।" [22]

जब नायक–नायिका विशेष परिस्थिति के मध्य एक–दूसरे से वार्तालाप आदि करते हैं तो मन को विभोर कर देने वाले काव्य में उसे संयोग श्रृंगार की संज्ञा दी जाती है। इसका स्थायी भाव रति हैं।

जहाँ पर नायक–नायिका की संयोगावस्था में पारस्परिक रति होती है, वहाँ संयोग श्रृंगार होता है और जहाँ नायक–नायिका पारिस्परिक रति होते हुए भी संयोगावस्था नहीं रहती, वहाँ वियोग श्रृंगार होता है।

'निशिहर' जी के काव्य में वियोग श्रृंगार बहुत कम देखने को मिलता हैं लेकिन संयोग श्रृंगार अवश्य मिलता है।

पराक्रम, विनय, धैर्य, हर्ष, विस्मय, प्रताप आदि विभावों से उत्साह स्थायी भाव का पारिस्परिक होने पर वीर रस होता है। इसमें मति, गर्व, धृति और प्रहर्ष संचारी भाव होते है। भुजाओं का फड़कना, रोमांच, गर्वीली वर्णन आदि अनुभव है। शत्रु की उन्नति उसकी ललकार

आदि से किसी व्यक्ति के हृदय में उसकों मिटाने के लिये जो उत्साह होता है। उससे वीर रस की उत्पत्ति होती है।

'निशिहर' जी का काव्य वीर रस से परिपूर्ण जगह–जगह वीर रस के उदाहरण द्रष्टव्य है –

"घंटा भरि तक खूब हुआँ पर बरसी गोली
येकला समुह भिड़ा चहुँ दिसि अरि की टोली
तड़–तड़–तड़–तड़ ठॉय ठॉय होती आवाजै
जइसे चपला चमकि रही गिरती बहु गाजै।।" [23]

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' ने अपने काव्य को शान्त रस में डुबोकर बड़ा सुन्दर वर्णन किया।

शान्त रस भारतीय साहित्य का विशिष्ट अंग रहा है। अध्यात्म हमारे देश की संस्कृति का एक प्रमुख अंग रहा है। मोक्ष ही हमारे जीवन की चरम परिवति और लक्ष्य है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में मोक्ष ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आत्मिक आनन्द ही सच्चा आनन्द है, जो सत्, चित, आनन्द ब्रह्म के संसर्ग से प्राप्त होता है। भौतिक सुखों को हमारी संस्कृति में अधिक महत्व नहीं दिया गया है। संसार नश्वर है। यही कारण है कि भारतीय साहित्य में शान्त रस की प्रतिष्ठा अखण्ड रूप में होती रही हैं।

उहादरण– "फूलन असि भलि मनई देति सुगंध।
मोदु बढ़ावति हरिकै दुख–दुरगध।।

इस प्रकार 'निशिहर' जी ने शान्त रस अपनी कृतियों में जगह–जगह लिखा।

करुण रस की व्यापकता और सर्वप्रधानता स्पष्ट है। साहित्य में करुण रस का स्थान सर्वोपरि है वियोग अर्थहीनता शोक आदि जहाँ पर होता है वहाँ करुण रस होता है।

'निशिहर' जी के काव्य मं जहा गरीबी भुखमरी, अर्थाभाव आदि का वर्णन हुआ है वहाँ करुण रस का परिपाक हुआ है अर्थाभाव के कारण किसान अपनी बेटी की शादी नहीं कर पाता है। किसान को इस पीड़ा का उदाहरण निम्न पंक्तियों में –

"दइनु बिन घर बइठि है बिटिया कुँवारी।
बापु रोटी के बरे दिन भरि खटत है

तबौ खाना बड़ी मुसकिल ते अँटत है
खूनु पानी करत बीती है जवानी।" [24]

हास्य रस से अवधी की आधुनिक कविता विशेष परिपूर्ण है परन्तु इसका परिपाक अधिकांशतः मुक्तक–काव्य में मिलता है। इस रस का स्थायी भाव हास्य है। वाणी आदि के विकारो का देखकर चित का विकसित होना हास्य है।

'निशिहर' जी के काव्य में हास्य रस यत्र–तत्र ही देखने को मिलता है। अवध के विवाह में महिलाओं द्वारा बारातियो के लिए गाली गाने की परम्परा ह, ऐसे अवसर पर हास्य रस की उत्पत्ति स्वभाविक है।

"सबै बराती परसन्न बहुतै
उलरति हयँ जस भाँड़ कि वाह वाह
नचवाइया लावै क नहिं रूपिया
खुदै रहे भुइँ। कि वाह वाह।" [25]

घृणित वस्तु के देखने या सुनने से जहाँ घृणा या जुगुप्सा का भाव परिपुष्ट होता है, वहाँ विभत्स रस होता है। 'साहित्य दर्पण' में घृणा या जुगुप्सा का लक्षण इस प्रकार दिया गया है –

'दोषक्षणादिभिर्गहा जुगुप्सा विस्मयोदृभाव।' अर्थात दोष देखने से जो निंदा का भाव होता है उसे घृणा कहते हैं। सुधार के लिये वीभत्स का वर्णन किया जाता है। इसका स्थायी भाव घृणा या जुगुप्सा है। श्मशान, शव, चर्बी, माँस, रक्तभेद शव आदि हैं। संचारी भाव–मोह अपस्मार, आवेग, व्याधि, उन्माद, ग्लानि आदि है। अनुभाव– थूकना, मुँह फेरना, आँखे बन्द कर लेना आदि है।

'निशिहर' जी खण्डकाव्यों में विभत्स रस के अनेक उदाहरण प्राप्त होते है। राव रामबक्स सिंह और अंगजो की लड़ाई का वर्णन विभत्स रस पैदा करता है जिसमे अंगजों के हाथ–पैर–सिर कटकर अलग–अलग पड़ ह।

"कहीं हथेली पड़ी कहीं पर रूंड पड़े थे
कहीं कटे टाँगो–मुंडों के झुंड पड़े थे
तड़िता सी तलवार तेज ब चमक रही थी

पीती अरि का खून लपालप लपक रही थी।" [26]

'निशिहर' जी खण्डकाव्यों में भयानक रस का परिपाक अनेक स्थानो पर हुआ ह भयदायक वस्तु के देखने, सुनने अथवा प्रबल शत्रु के विद्रोह आदि से जब हृदय में वर्तमान भय स्थाई होकर परिपुष्ट हो जाता है तब भयानक रस उत्पन्न होता है। इसका स्थाई भाव भय होता है। 'निशिहर' जी के खण्डकाव्य 'परतन्त्रता नहीं स्वीकार' से एक उदाहरण द्रष्टव्य –

"झपट शत्रु पर टूट पड़े सहसा ललकारा
छिड़ गया रण विकराल बह चली शोणित धारा।
चिल्ला रहे थे सूर फिरंगी बचने न पाये
चला रहे थे प्रखर शस्त्र रिपु को दौड़ाये

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' जी रस निरूपण में अत्यन्त कुशल है। 'निशिहर' जी भाव व विचारा की कसौटी पर रसात्मकता को खरा उतारते है।

वेद के छः अंगो में छन्द विधान भी एक अंग है। प्राचीनकाल से कविता और छन्द का घनिष्ट संबंध माना गया ह। छन्द काव्य का एक आवश्यक अंग माना गया है। प्रसिद्ध छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत ने लिखा है –

"कविता और छन्द के बीच बड़ा घनिष्ट संबंध है। कविता हमारे प्राणों का संगीत है, छन्द हल्कंपन। कविता का स्वभाव ही छन्द में लयमान होना है।" हमारे प्राचीन आचार्यो ने तो काव्य–रचना के लिए छन्दों को अनिवार्य बना दिया था। उनका विचार था कि छन्द–योजना प्रत्येक रस और वर्ण–विषय के अनुकूल होनी चाहिए, जिससे संगीत के साथ ही साथ रस की व्यंजना में भी सहायता मिल सके।

छन्द दो प्रकार के होते है मासिक छन्द व वर्णित छन्द। 'निशिहर' जी ने अपनी रचनाओं म दोनो प्रकार क छन्दो का प्रयोग किया है। कुछ कृतियो में 'निशिहर' जी ने लोकगीत शैली में लोक छन्दो सोहर आदि का भी प्रयोग किया है इन्होंने हाइकु, सोहर, कजरी, बिरहाफाग जैसे लोक छन्दो के साथ–साथ शद्धत्व ध्वनि, विमलत्व ध्वनि, दोहा बरवै आदि छन्दो का सफल प्रयोग किया है। 'निशिहर' जी ने उर्दू के छन्दो का भी प्रयोग किया

जिसमे ग़ज़ल के अर्न्तगत बड़ी बहर, छोटी बहर दोना विधाओं की गजले आती ह। 'निशिहर' जी के अवधी ग़ज़ल संगह 'एकउटनि' से छोटी बहर की गजल का उदाहरण द्रष्टव्य –

"कोऊ सीख बुरी सिखलाये ना मानै।।
चाहै जेतना हँसि फुसलाये, ना मानै।।
कामु भला करि सुरू करै तनम न धन ते।
जब तक पूरा ना होइ जाये, ना मानै।।
उन्नति करैं रहैं हिलि मिलि कै
सब भाई।
कउनो सकुनी अगर लराये, ना मानै।।" [28]

बाल कविताओं में 'निशिहर' जी ने विमलत्व ध्वनि छन्द का प्रयोग किया जिसमें सोलह–मात्राएँ होती है। 'निशिहर' जी की बालकविता से एक उदाहरण द्रष्टता –

"पढ़े नहिन बप्पा महतारी।
मुला पढ़ति बिटिया सिउ प्यारी।।
रोजु सबेरे जल्दी जागति।
खाली किताबै मन ते बाँचति।।"

इस प्रकार भी प्रयोग किया जिसमें चौबीस–चौबीस मात्राएँ होती है।

'निशिहर' जी के बाल–कविता से सार छन्द का एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

"तीसो दिन चिंता का कठिन विषय हो रही।
स्वार्थ के सघन वन में मानवता खो रही।" [30]

'निशिहर' जी ने वणित छन्द के अन्तर्गत आने वाले घनाक्षरी छन्द का प्रयोग किया जिसमें इकतीस वर्ण होते है। 'निशिहर' जी के खण्डकाव्य 'राना बेनी माधौ' का एक उदाहरण द्रष्टव्य है जिसमें घनाक्षरी छन्द का प्रयोग हुआ –

"घूमि–घूमि खब लड़ा सेरू अस दहाड़िकै
सब्जा सवार रनधीरू खर पानी का।
अंगरेजी दलु नाव सुनि काँपि जात रहा
पकरि न पाइसि कबहुँ जेहि सानी का।" [31]

'निशिहर' जी की कृति 'नीकि दिन अइहैं' हाइकु छन्द में लिखी गई कृति है। हाइकु छन्द पाँच, सात, पाँच के क्रम में सत्रह वर्णो का छन्द है जिसका एक उदाहरण द्रष्टव्य –

बड़े ते भिड़ा। मुँहभरा गिरिगा।
जोसु झरिगा।" [32]

'निशिहर' जी ने लोकशैली में कई छन्दो का प्रयोग किया है। अवध में सोहर गाने की परम्परा है विशेष रूप से पुत्र के जन्म के समय सोहर गाया जाता है जिसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

"रामा/भागि का सुरूज उइ आवा
खुसी का फूलु सिलिगा हय।
रामा/भौन पूर खूब मुसकावा
बासिन क पूतु मिलिगा हय।
रामा महतारी हबै बड़भगिनि
लगा दिहिस बंस बिखा।" [33]

सावन के महीने मे अवध में पेड़ की डालो पर झूले पड़ जाते है तब महिलाएँ कजलो गाती है। 'निशिहर' जी द्वारा लिखी गई कजलो गीत का एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

"हरे रामा/काने म अँगुरी डारि
बइठि तु सइयाँ/रे हरि
हरे रामा/गुड़िया क्यार तेउहार
चारि दिन मइहाँ/रे रही
बिटिया पशु दयारवति होई
ससुरे मा स्वाचति होइ/रामा
हरे रामा/अबहूँ न बाप हमारि
लिहिसि सुधि मइया/रे हरि
उठि तड़के बाँधौ गठरी
दइ आव हुवाँ पर धुधुरी/रामा" [34]

फाग गाने की परम्परा अवध की प्राचीन परम्परा है। फाग होली के आसपास गाया जाने वाला गीत है, जिसमें चौताल, ढाई ताल व डेढ़ ताल में गाने की परम्परा है जिसकी बड़ी ही सुन्दर रचना 'निशिहर' जी ने 'बिरवा तरे' अवधी गीत संग्रह में की है जिसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

"अवध मा भा खुब जुद्धु सुराजो।।
उदाठारा सौ सत्तावन मा सब अँगरेजवा पाजी।
राजन महराजन के काम मा कीन्हेन दखल हाजी
आपनि राजि चलावा चाहेन करै लागि रँगबाजी।
देखि सरहँगी उनकै बाढ़ी जन मा नाराजी।।
पानीदार रहें जी राजा अपनी फउजै साजी।
गरजी तोपै रजख्यातन मा जमि तरवारी बाजी" [35]

'निशिहर' जी ने अपनी कुछ कृतियों में मुक्तक छन्द का भी प्रयोग किया है। मुक्तक छन्द के विषय में कहा गया है कि जिस विषय छन्द मे वर्ण और मात्राओं पर प्रतिबंध न हो और ना ही प्रत्येक चरण में वर्णो की मात्रा और क्रम समान हो और ना ही मात्राओं की कोई निश्चित व्यवस्था हो जिसमें नाद और ताल के आधार पर पंक्तियों में लय लाकर उन्हें गतिशील करने का आग्रह हो उसे मुक्तक छन्द कहते है।

'निशिहर' जी का मुक्तक छन्द पर आधारित अवधी गीत का एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

"मारे न जाउँ जिउ
जियत रहै। जग मा।
कारीगरू है ईसु सबका कनाइसि
आकार अलग अलग दइकै सजाइसि
परसन्न चलत रहै।
जीवन के मग मा।" [36]

'निशिहर' जी की कृतियों में छन्द विधान विविधतापर्ण ललित और विलक्षण है। हिन्दी के छन्दों के साथ–साथ उसमें संस्कृत के वर्णवृत्त लोकगीत तथा उर्दू के छन्द भी मिल जाते हैं।

इस प्रकार 'निशिहर' जी की कृतियों का अभिव्यक्तिपक्ष अत्यन्त समृद्ध और उत्कृष्ट है। 'निशिहर' जी जहाँ परम्परा को लेकर चले हैं, वहीं नवीनता का आग्रह भी उनमें दिखलाई पड़ता है। भाषा का वैविध्य और प्रभाविकता, अंलकारों का सहज और स्वाभाविक प्रयोग छन्दों का वैविध्य, अभिनव शैली विधान और पारंपरिक शैली के प्रति अभाव आदि का मनोरम समुच्चय 'निशिहर' जी की कृतियों में मिलता है। 'निशिहर' जी अपनी कृतियों के अभिव्यक्तिपक्ष को पर्याप्त वैभव–मण्डित करने में सक्षम है। आज भी कलापक्ष में नये–नये प्रयोग हो रहे है। इस क्रम में 'निशिहर' जी भी प्रयासरत हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, खुब कमाव खुब छानौ घ्वाटौ, अवध भारती संस्थान प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबकी, संस्करण–जून 2012, पृष्ट संख्या–32
2. पन्त सुरेश, अनपुम व्यावहारिक व्याकरण तथा रचना, आर्य पब्लिकेशंस नई दिल्ली, संस्करण–2004, पृष्ठ संख्या–1
3. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, म्वार नाव आजाद, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2006, पृष्ठ संख्या–3
4. 'मधुप' सुन्दर श्याम, अवध साहित्य का इतिहास, भारत बुक सेन्टर लखनऊ, संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–7
5. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2005, पृष्ठ सख्या–70
6. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, साथ का पढ़इया, अवध भारती हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2014, पृष्ठ संख्या–64
7. शर्मा प्रकाश ओम, काव्य रसायन, हिन्दी पुस्तक भण्डार दिल्ली, संस्करण–1962, पृष्ठ संख्या–15
8. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, खुब कमाव खुब छानौ घ्वाटौ, अवध भारती संस्थान प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–28

9. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, नीकि दिन अइहै, अवध भारती संस्थान प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण नवम्बर 2012, पृष्ट संख्या–21
10. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, नीकि दिन अइहै, अवध भारती संस्थान प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण नवम्बर 2012, पृष्ठ संख्या–34
11. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, खुब कमाव खुब छानौ घ्वाटौ, अवध भारती संस्थान प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–42
12. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, राना बेनी माधौ, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2008, पृष्ठ संख्या–38
13. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, म्वार नाव आजाद, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2006, पृष्ठ संख्या–63
14. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, घुनघुना, अवध भारती संस्थान प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2013, पृष्ठ संख्या–70
15. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, परतंत्रता नहीं स्वीकार, संस्करण–2004, पृष्ठ संख्या –31
16. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, म्वार नाव आजाद, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2006, पृष्ठ संख्या–81
17. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, परतन्त्रता नही स्वीकार, संस्करण–2004, पृष्ठ संख्या –36
18. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2005, पृष्ठ संख्या–68
19. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2005, पृष्ठ संख्या–68
20. ज्ञानवती, अवधी की आधुनिक प्रबंध धारा, देशभारती प्रकाशन दिल्ली, संस्करण –2019, पृष्ठ संख्या–245
21. अग्रवाल गिरिराजशरण, हिन्दी सौरभ, चित्रा प्रकाशन इंण्डिया प्रा. लि. मेरठ, पृष्ठ संख्या–216
22. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, अवधी की आधुनिक प्रबन्ध धारा, देशभारती प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2019, पृष्ठ संख्या–222

23. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, म्वार नाव आजाद, अवध भारती समिति हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2006, पृष्ठ संख्या–89
24. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती समिति हैदरगढ़ बाराबंकी संस्करण–2005, पृष्ठ संख्या–25
25. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती समिति हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2005, पृष्ठ संख्या–142
26. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, परतंत्रता नही स्वीकार, संस्करण–2004, पृष्ठ संख्या –34
27. ज्ञानवतो, अवधी की आधुनिक प्रबंध धारा, देशभारती प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2019, पृष्ठ संख्या–265
28. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, एकउटनि, अवध भारती प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2018, पृष्ठ संख्या–28
29. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, घुनघुना, अवध भारती संस्थान प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2013, पृष्ठ संख्या–79
30. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, पंक में पंकज, महामाया प्रकाशन तेलियाकोट रायबरेली, संस्करण–2019, पृष्ठ संख्या–45
31. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, राना बेनी माधौ, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2008, पृष्ठ संख्या–12
32. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, नीकि दिन अइहैं, अवध भारती संस्थान हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–12
33. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2005, पृष्ठ संख्या–140
34. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2005, पृष्ठ संख्या–129
35. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2005, पृष्ठ संख्या–124

36. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे, अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़ बाराबंकी, संस्करण–2005, पृष्ठ संख्या–31

उपसंहार

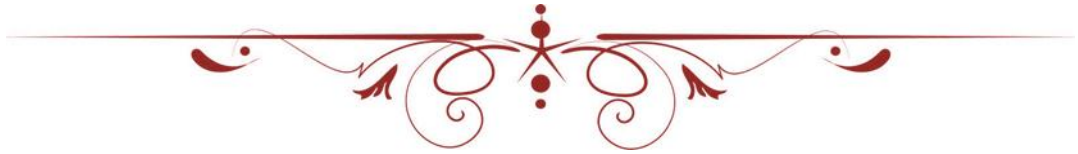

उपसंहार

हमारा देश भाषाओं और उपभाषाओं की संगमस्थली है। राजनैतिक, प्रशासनिक, सांस्कृतिक और भावात्मक एक्य होते हुए भी भौगोलिक, धर्मगत, जातिगत और भाषिक वैभिन्य पूर्णतः स्पष्ट है।

'कोस–कोस पर बदले पानी चार कोस पे बानी' की कहावत सत्य का अतिरेक नहीं करती है।

हिन्दी के विशेष सन्दर्भ में बात की जाए तो इसकी अनेक उपभाषाएँ अथवा बोलियाँ हैं। इसी क्रम में अवधी हिन्दी की एक उपभाषा अथवा पूर्वी हिन्दी की एक प्रमुख बोली है जो एक बड़े भू–भाग पर लोगों द्वारा बोली जाती है। भाषिक दृष्टि से भी और साहित्यिक दृष्टि से भी इसका महत्व किसी भाषा से कम नहीं।

अवधी में लिखा गया विपुल साहित्य इसकी लोकप्रियता का ज्वलंत प्रमाण है। आज भी अवधी में सृजन कार्य अबाध गति से चल रहा है। हिन्दी की जनपदीय भाषाओं में इसका सर्वोपरि स्थान है और बोलचाल की भाषा में यह प्रतिष्ठित है। भले ही अवधी को अवध से जोड़कर इसकी भाषाई सीमाओं का निर्धारण किया जाता है किन्तु प्रकृत में सुदूर क्षेत्रों तक, यही नहीं सागरपार भारतवंशीय देशों में यह ध्वनित हो रही है। अवधी की इस व्यापकता के पीछे इसे एक दिन का परिणाम न मानकर इसकी अपनी सुदीर्घ यात्रा है। अपने उद्‌भव से लेकर आजतक राज्याश्रय को ग्रहण नहीं किया और न ही शासन–प्रशासन द्वारा संरक्षण दिया गया है। अवधी जनसंरक्षित और लोकसंरक्षित हिन्दी बोली के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी है।

रीतिकाल में ब्रजभाषा का प्राधान्य होने के नाते यह मन्द अवश्य पड़ी लेकिन इसकी गति में ठहराव नहीं आया। भारतेन्दु युग में आकर इसे नया रूप और नये तेवर इस युग के कवियों ने प्रदान किये। यह वह युग था जब ईसाई मिशनरियाँ अपने धर्म का प्रचार कर रही थीं। औद्योगिकीकरण की शुरुआत हो रही थी। अंग्रेजी शिक्षा का चलन बढ़ रहा था लेकिन अवधी इसी के साथ–साथ वेगवान हो रही थी। द्विवेदी युग के कवियों ने तो इसको हाथों–हाथ लिया। यह भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति का समय था।

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में गाधी जी राजनैतिक क्षितिज पर चमक रहे थे। उत्तर भारत में लोगों को जगाने के लिए हिन्दी के साथ–साथ हिन्दी की बोली अवधी को जागरण का

माध्यम बनाया गया। पं. वंशीधर शुक्ल, बलभद्र प्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस' जैसे अनेक साहित्यकारों ने मजदूरों और किसानों में जागरण का मंत्र फूंक दिया। आजादी के बाद लोकभाषा के रूप में अवधी पुनः प्रतिष्ठित हुई और विपुल मात्रा में साहित्य सृजन होने लगा। आजादी के बाद की समस्याओं का चित्रण अवधी में किया जाने लगा।

प्रारम्भ में अवधी में पद्य ही लिखा जाता था। गद्य की मात्रा कम थी पर धीरे–धीरे अवधी में गद्य की विविध विधाओं को आत्मसात किया। निबन्ध, कहानी, एकांकी, संस्मरण, नाटक आदि अवधी बोली में लिखे जा रहे हैं। अवधी की इसी समृद्ध धारा को और आगे बढ़ाने में जिन आधुनिक साहित्यकारों का योगदान है उनमें आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' का नाम प्रमुखता से लिया जाता है।

'निशिहर' जी ने छब्बीस पुस्तकों की रचना की है जिसमें गद्य के अंतर्गत कहानी संग्रह, एकांकी नाटक संग्रह एवं लघुकथाओं का प्रणयन किया गया है, साथ ही अन्य पुस्तकें कविता संग्रह के रूप में हैं। 'निशिहर' जी की सभी रचनाएँ आधुनिकता की भावभूमि पर रची गई हैं और समसामयिक विषयों को इन्होंने अपनी रचनाओं का आधार बनाया है। 'म्वार नाव आजाद', 'राना बेनी माधौ', 'परतन्त्रता नहीं स्वीकार' राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत खण्डकाव्य है जो सत्तावनी क्रांति के अमर नायकों से संबंधित है।

21वीं सदो में जब व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और यहाँ तक की सम्पूर्ण विश्व परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रहा है। मान्यताएँ, परम्पराएँ और संस्कृतियाँ प्रभावित हो रही हैं जिससे बोलियों में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है। प्राचीन अवधी और वर्तमान अवधी में देशकाल एवं परिस्थितिया के अनुसार परिवर्तन होना स्वाभाविक है। आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' ने इस प्रकार के परिवर्तन को पहचाना और अपने आसपास की लोकभाषा के माध्यम से बदलती हुई विषयवस्तु को पकड़ा।

'निशिहर' जी के काव्य की बड़ी विशेषता यह रही है कि आपने परम्परा और धार्मिकता के पुट को लेकर सामाजिक विसंगतियों, स्त्री–विमर्श, पाखण्ड, अंधविश्वास, अन्याय और अत्याचार का विरोध करते हुए व्यवस्था के विरुद्ध एक आन्दोलन इनकी रचनाओं में मिलता है। इसके पूर्व प्रायः अवधी लोकगीत शैली में थी वह दौर प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का था। 'निशिहर' जी ने 21वीं सदी में व्याप्त असंगति और कुसंगति को जनवाद से जोड़कर नई भंगिमा दी और अवधी की दिशा व दशा का निर्धारण करने में इनकी रचनाएँ मील का पत्थर

सिद्ध हुई। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि लोक–जीवन, लोक परिवेश और लोक संस्कृति से जुड़ते हुए आंचलिकता की बात करते हुए इनकी रचनाएँ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं तक पहुँचती है। 'निशिहर' जी का जन्म गाँव में हुआ परन्तु जीविकोपार्जन के लिए शहर में बस गये पर उनका मन आज भी गाँवों में रमता है। खेत–खलिहान, बाग–बगीचे, बेरी और झरबेरी, खेतों म फैली हुई लौकी, कुम्हड़े की फैली हुई बेले 'निशिहर' जी को याद आती हैं। इन सबको जनजीवन से जोड़ते हुए अपनी रचनाओं में सुन्दर वर्णन किया है।

मैने अपने लघु–शोध प्रबन्ध का प्रारम्भ अवधी बोली का सामान्य परिचय देते हुए यह बताने का प्रयास किया है कि अवधो बोली है न की भाषा। अवधी की उत्पत्ति के विषय में पर्याप्त प्रमाण नहीं मिले परन्तु अधिकतर विद्वानों ने अवधी को अर्धमागधी से उत्पन्न व पूर्वी हिन्दी का हिस्सा माना है। अवधी क्षेत्र की भौगोलिक सीमाओं का वर्णन किया है। अवधी बोली को बोलने वालों की कुल आबादी के आँकड़ों को भी दर्शाया है। अवधी के विकास को तीन कालखण्डों आरम्भिक युग, मध्ययुग और आधुनिक युग में बाँटते हुए क्रमशः विवेचित किया है। अपने प्रारम्भिक समय में अवधी गोरखबानी, परमलरासों, चंदायन और अमीर खुसरों की मुकरियों में प्राप्त होती है। सबसे प्राचीन अवधी ग्रन्थों को उद्योतन सूरी का प्राकृत पैंगलम् माना जाता है। सन्त साहित्य अवधी में रचा गया विशेष काव्य है जिसमें सूफी महाकाव्य, कबीर की रमैनी सुन्दरदास, मलूकदास जैसे कवियों की रचनाओं में अवधी का स्पष्ट रूप दिखता है। रामचरितमानस जैसा महाकाव्य अवधी में ही लिखा गया है जो विश्वस्तर पर प्रतिष्ठित है। आधुनिक काल में अवधी पद्य से गद्य की ओर बढ़ने लगी है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़कर राष्ट्रीयता के रंग में रंग गई। इस काल के कवियों में बलभद्र प्रसाद दीक्षित, रमई काका आदि ने जोर–शोर से तत्कालीन व्यवस्थाओं के प्रति अपना स्वर मुखरित किया। अवधी अपनी व्याकरणिक विशेषताओं के कारण ही जानी जाती है। इसमें संस्कृत की तालव्य, मूर्धन्य ष, ऋ, व, क्ष, ज्ञ ध्वनियों का अभाव है और गतिपय स्थानों पर य, व क्रमशः ज और ब में परिणत हो जाते हैं। निष्कर्षतः अवधी हिन्दी की एक प्राचीन बोली है जो प्राचीन से नवीन अवधी तक आते–आते अपने परिवर्तित रूप में है।

द्वितीय अध्याय को 'निशिहर' जी के व्यक्तित्व से प्रारम्भ किया है जिसमें आपके जन्म, परिवार (मात–पिता व अन्य) पालन–पोषण व संघर्षशील परिस्थितियों से जूझते हुए उनके माता–पिता के कठिन परिश्रम त्याग द्वारा उन्हें प्रारम्भिक शिक्षा दिलाना व नौकरी पाने तक के

संघर्षों को दर्शाया। साथ–साथ इन सब परिस्थितियों के मध्य अपनी लेखनी को बनायें रखने के साहस को भी दिखाया है। आपके वैवाहिक जीवन व परिवार के विषय में उपलब्ध जानकारी को भी लिखा। उनके रहन–सहन, पहनावे, बोली, स्वभाव आदि पर भी चर्चा की। इसी अध्याय में 'निशिहर' जी के व्यक्तित्व के साथ कृतित्व की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर लिखा जो अवधी साहित्य में उनके प्रमुख योगदान को दर्शाती है। उनके इस साहित्यिक योगदान के लिए उन्हें अनेक प्रकार के सम्मानों से सम्मानित किया गया व दो बार उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा मलिक मोहम्मद जायसी पुरस्कार व समवेत संकलनों में आपकी सहभागिता व आपके द्वारा की गई विदेश यात्राओं की भी विस्तृत जानकारी उपलब्ध करायी। अन्य अवधी रचनाकारों में 'निशिहर' जी के स्थान का आकलन किया है।

'निशिहर' जी का गद्य व पद्य दोनों में साहित्यिक योगदान है। पद्य की अनेक विधाओं में अपनी लेखनी सहजता से चलाई है, साथ ही प्रारम्भिक दौर में पद्य से ही शुरुआत की।

मेरे अध्यनानुसार 'निशिहर' जी की रचनाएँ आम जनमानस से जुड़ी हुई हैं जो समाज को जागरूक करने में सहायक है। 'निशिहर' जी की छब्बीस पुस्तकें अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं। इस अध्याय में आपकी रचनाओं के परिचयात्मक विवेचन के क्रम में टुकवा (अवधी काव्य) से प्रारम्भ करते हुए उनके अवधी गीत बिरवा तरे व तीनों खण्डकाव्य 'म्वार नाव आजाद', 'राना बेनी माधौ', 'परतन्त्रता नहीं स्वीकार' से परिचित कराया है। इसी क्रम में अवधी मुक्तक 'खुब कमाव खुब छानौ घ्वाटौ' का परिचय देने के साथ–साथ मुक्तक के अर्थ को भी समझाने का प्रयास किया है। अवधी साहित्यकारों में सर्वप्रथम क्रमबद्ध तरीके से हाइकु कविता लिखने का श्रेय आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' को जाता है। 'नीकि दिन अइहै' नामक अवधी हाइकु आपके द्वारा लिखा गया जो उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत है। आप बाल साहित्य लिखने में भी सिद्धहस्त हैं। घुनघुना (बालगीत), बच्चे गायें (बालगीत) जैसी रचनाएँ बच्चों को प्रोत्साहित व उनका मनाबल बढ़ाने के लिए लिखी। 'निशिहर' जी की रचना प्याट के भीतर पेंडु (अवधी बरवै संग्रह) जिसमें 'निशिहर' जी ने सामाजिक विसंगतियों, विद्रूपताओं, राजनैतिक अव्यवस्था आदि पर आधारित रचना है। एकउटनि (अवधी गजल संग्रह) जिसमें पारम्परिक विधि की गज़ले, हाइकु गज़ले, दोहा गज़ले हैं। साथ का पढ़इया (कहानी संग्रह) में आधुनिक विसंगतियों, पारिवारिक कलह, आरक्षण आदि को लेकर लिखा है। इस कहानी संग्रह की एक कहानी 'दुइ दिन कै अपसरी' वर्तमान चुनाव व्यवस्था में फैली अव्यवस्था

से परेशान प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक की व्यथा है। इस दृष्टि से आपका रचनाकर्म विस्तृत और बहुकोणीय है।

लघुशोध प्रबन्ध के चौथे अध्याय में आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' के काव्य–कृतियों के भावपक्ष को उकेरा गया है। 'निशिहर' जी की रचनाओं का मूल–स्वर ग्राम्य जीवन का अंकन है। गाँव के जीवन का इन्होंने सूक्ष्मता के साथ निरीक्षण किया है। अपनी रचनाओं के माध्यम से गाँव में फैली अव्यवस्था और अराजकता पर प्रकाश डाला है। अपने बालगीतों में बच्चों के अन्दर राष्ट्रप्रेम जैसे विषयों को भरने की कोशिश की है। प्राकृतिक चित्रण, भ्रष्टाचार, राष्ट्रनायकों के चरित्र का गायन, अस्पृश्यता, मानवीय मूल्य और समाज विषयक विसंगतियों को अपनी रचनाओं का वर्ण्य–विषय बनाया है। दहेज प्रथा, महिला शिक्षा, वर्ण व्यवस्था, सांस्कृतिक चेतना, पर्यावरण संरक्षण और लैंगिक असमानता भी इनकी रचनाओं में सम्मिलित हैं।

पंचम अध्याय 'निशिहर' जी के शिल्प–विधान से सम्बन्धित है जिसमें भाषाशैली, शब्द शक्ति, लोकोक्तियाँ, मुहावरे, अलंकार, रस, छन्द आदि आते हैं। 'निशिहर' जी की भाषा बैसवारे में बोली जाने वाली ठेठ अवधी है ग्रामीण क्षेत्र में इसका बहुत प्रभाव है, साथ ही देशज शब्दों का भी प्रयोग किया है। शब्द शक्ति में अभिधा, लक्षणा, व्यंजना और गुण में ओज प्रसाद और माधुर्य का प्रयोग किया गया है। बैसवारे के अंचल में प्रचलित लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग से भाषा सजीव हो गई है। इसी प्रकार मुख्य अलंकार, रूपक, मानवीकरण, अनुप्रास, श्लेष और अतिशयोक्ति का 'निशिहर' जी ने प्रयोग किया है।

अवधी का प्रचार–प्रसार और इसकी व्यापकता से यह सिद्ध हो चुका है कि अवधी हिन्दी की प्राचीनतम बोली है अथवा उपभाषा है जिसने अपना स्वर्णकाल भी देखा है। राज्याश्रित न होने के कारण रीतिकाल में पराभव भी हुआ है किन्तु आधुनिक काल में अवधी ने पुनः प्रतिष्ठा प्राप्त कर हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में अपना योगदान दिया है। हिन्दी की उपभाषाएँ ही हिन्दी की वास्तविक शक्ति हैं। विस्तृत भू–भाग और सागर पार के देशों में बोली जाने वाली अवधी का महत्व इस दृष्टि से और बढ़ जाता है। अवध क्षेत्र की पहचान के रूप में यहाँ की सांस्कृतिक चेतना का संवहन करने के कारण अवधी एक बोली ही नहीं यहाँ का प्राण तत्व है। वर्तमान समय में विभिन्न विधाओं में इसकी सर्जना करके अवधी लेखकों ने इसे हिन्दी के समतुल्य बना दिया है।

अवधी के परिप्रेक्ष्य में जब हम आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' की रचनाओं का सम्यक अनुशीलन करते हैं तो यह पाते हैं कि इन्होने अवधी में लेखन करके नये मापदण्ड स्थापित किये हैं। अभी तक अवधी का जो साहित्य लिखा गया था उसमें युगबोध का अभाव था। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समस्याएँ न के बराबर उठाई गई। प्रकृति, खेती–किसानी, राष्ट्र–प्रेम जैसे कुछ विषय ही अवधी कविता के प्रमुख स्वर थे। अवधी में कहानियाँ, नाटक और एकांकी जैसी गद्यात्मक विधा न थी। अवधी में बच्चों के लिए कुछ भी नही लिखा गया लेकिन 'निशिहर' जी ने बच्चों के लिए अवधी बालगीत की पुस्तकें लिखकर एक नई परम्परा डाली, परिणामस्वरूप अब अवधी के कवि इस दिशा में भी अग्रसर हुए हैं। प्रकान्तर से यह कहा जा सकता है कि बीसवीं शताब्दी के अंत तक अवधी का गद्य साहित्य सीमित था और पद्य साहित्य मात्र परम्परागत था।

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' ने अवधी को यहाँ से उठाकर चैतन्यता प्रदान की और जो अवधी एक ढर्रे पर चल रही थी, उसे कई दिशाओं में गति प्रदान की। चाहे पद्य हो अथवा गद्य हो। 'निशिहर' जी ने इन सब में ईमानदारी के साथ युग धर्म का निर्वहन किया है।

'निशिहर' जी के साहित्य की यह विशेषता रही है कि वे समसामयिक विषय पर लेखनी चलाते हुए भारतीय परम्परा, सभ्यता–संस्कृति का अनुरक्षण भी करते हैं। संवेदना और सहानुभूति के स्तर पर विसंगतियों को उजागर करते हैं। मानवतावाद का समर्थन करते हैं। 'निशिहर' जी की रचनाओं की ये सारी विशेषताएँ मेरे मन को छूती हैं।

'निशिहर' जी जिस क्षेत्र म पैदा हुए वह सामन्तों का गढ़ माना जाता है। सामन्तवाद के विरुद्ध आवाज उठाकर आपने अपने कविधर्म का परिचय दिया है। ये सब विषय अभी तक नितान्त अछूते थे। इन पर विद्वानों की दृष्टि नहीं गई थी। 'निशिहर' जी के साहित्य की इन उद्भावनाओं ने मेरे मन को प्रेरित किया, परिणामस्वरूप प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध आप सबके सम्मुख है।

अवधी हिन्दी की एक महत्वपूर्ण बोली है जो उत्तर भारत के एक बहुत बड़े भू–भाग पर अपने दैनिक जीवन में व्यवहार में लाई जाती है। हिन्दी का प्रचुर मात्रा में जो साहित्य लिखा गया है वह अवधी में ही है। भक्तिकाल अवधी का सबसे समृद्ध काल कहा जाता है। उत्तर भारत की जनता प्रायः धर्म–प्राण और आध्यात्म प्रवृत्ति की है। भक्ति सम्बन्धी सभी ग्रन्थों को समझने के लिए अवधी की जानकारी होना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में

अवधी का जो साहित्य है, उसमे विसंगतियों, विद्रूपताओं और समस्याओं को लेकर बहुत कुछ लिखा जा रहा है। अद्यतन समस्याओं को जानने–समझने के लिए अवधी का ज्ञान होना महत्वपूर्ण है। साहित्यिक और भौगोलिक दोनों दृष्टियों से अपनी बोली से सबको प्रेम होता है। आधुनिकता के इस युग में जब पाश्चात्य प्रभाव हम पर प्रभावी होता जा रहा हो तब अपने अवधी में लिखे हुए साहित्य और संस्कृति को सरंक्षित रखने के लिए अवधी बोली का उपयोग करना आवश्यक है।

अवधी न तो कृत्रिम बोली है और न अविष्कृत यह परम्परागत लोकभाषा का साहित्यिक रूप है। लोकभाषा अवधी के साहित्यिक रूप को व्यापकता प्रदान करने के लिए हमें अपने–अपने क्षेत्र की बोलियाँ को बोलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

हिन्दी भाषा में बोलियों का बहुत महत्व है, विशेष रूप से ब्रज और अवधी में अत्यन्त उच्च साहित्य की रचना हुई है। इस उच्च साहित्य को समझने के लिए बोलियों को जानना आवश्यक है। हिन्दी की बोलियाँ ही वास्तव में हिन्दी की ताकत हैं। यदि बोलियों को साहित्य से निकाल दिया जाए तो हिन्दी में कुछ विशेष शेष नहीं बचता। हिन्दी एक वटवृक्ष की तरह है। इसकी बोलियाँ उसी वटवृक्ष की जड़ हैं जो उसे सहारा देती हैं। हिन्दी की जनपदीय बोलियों में हिन्दी की विविधता भी है और शक्ति भी। वे हिन्दी की जड़ों को गहरा बनाती हैं। इन बोलियों में परम्परा, इतिहास और सभ्यता समाहित है। इसलिए हिन्दी की बोलियों को स्वयं बोलना चाहिए एवं दूसरों को बोलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। बोलियाँ समाज को जाग्रत करती रहती हैं और अवधी जैसी बोली जिसकी व्यापकता और साहित्य, आजादी की लड़ाई में उसका योगदान निर्विवाद रहा है। समाज पर जिसका व्यापक प्रभाव रहा हो, ऐसे समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

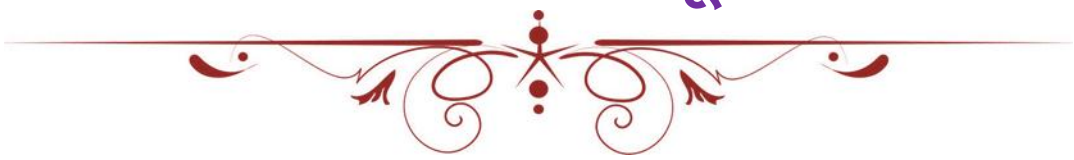

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

37. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, टुकवा (काव्य संग्रह), बैसवारा लोकोन्नयन समिति प्रकाशन, संस्करण–1992
38. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, महतारी के मंसा (अवधी कहानियाँ), अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़–बाराबंकी, संस्करण–2010
39. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, बिरवा तरे (अवधी गीत), अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़–बाराबंकी, संस्करण–2005
40. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, नीकि दिन अइहैं (अवधी हाइकु संग्रह), अवध भारती संस्थान हैदरगढ़–बाराबंकी, संस्करण–2012
41. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, घुनघुना (अवधी बालगीत संग्रह), अवध भारती संस्थान हैदरगढ़–बाराबंकी, संस्करण–2013
42. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, एकउटनि (अवधी ग़ज़ल संग्रह), अवध भारती प्रकाशन हैदरगढ़–बाराबंकी, संस्करण–2018
43. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, म्वार नाव आजाद (अवधी खण्डकाव्य), अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़–बाराबंकी, संस्करण–2006
44. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, साथ का पढ़इया (अवधी कथा संग्रह), अवध भारती प्रकाशन हैदरगढ़–बाराबंकी, संस्करण–2014
45. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, राना बेनी माधौ (अवधी खण्डकाव्य), अवध भारती समिति प्रकाशन हैदरगढ़–बाराबंकी, संस्करण–2008
46. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, प्याट के भीतर पेंडु (अवधी बरवै संग्रह), अवध भारती प्रकाशन हैदरगढ़–बाराबंकी, संस्करण–2017
47. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, पंक में पंकज (गीत संग्रह), महामाया प्रकाशन तेलियाकोट रायबरेली, संस्करण–2019
48. 'निशिहर' शर्मा प्रसाद सूर्य, परतंत्रता नहीं स्वीकार (खण्डकाव्य), संस्करण–2006

सहायक ग्रन्थ :–

1. अग्रवाल गिरिजा शरण, हिन्दी सौरभ, चित्रा प्रकाशन इण्डिया प्रा.लि. मेरठ
2. जोशी रतन, पर्यावरण अध्ययन, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा, संस्करण–2004
3. दाउद मुल्ला, चन्दायन, विश्वविद्यालय वाराणसी
4. द्विवेदी शरण शम्भू, त्रिशूल काव्य, बन्धु प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–1995
5. दीक्षित प्रसाद सूर्य, अवध संस्कृति विश्वकोश (खण्ड–दो), वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण–2016
6. पाण्डेय प्रकाश इन्दु, अवधी लोक साहित्य ग्रंथावली, वाणी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2010
7. पन्त सुरेश, अनुपम व्यावहारिक व्याकरण तथा रचना, आर्य पब्लिकेशन नई दिल्ली, संस्करण–2004
8. पीयूष जगदीश, अवधी ग्रन्थावली (खण्ड–एक) वाणी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2010
9. पीयूष जगदीश, अवधी साहित्य सर्वेक्षण और समीक्षा, प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली, संस्करण–2014
10. बाहरी हरदेव, अवधी शब्द सम्पदा, विद्या साहित्य संस्थान इलाहाबाद
11. भारती प्रकाश जय, हिन्दी के श्रेष्ठ बालगीत, पराग प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–1997
12. 'मधुप' मिश्र सुन्दर श्याम, अवधी साहित्य का इतिहास, भारत बुक सेन्टर लखनऊ, संस्करण–2012
13. शर्मा प्रकाश ओम, काव्य रसायन, हिन्दी पुस्तक भण्डार दिल्ली, संस्करण–1962
14. शुक्ल रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण–2013
15. सिंह प्रताप योगेन्द्र, भारतीय भाषाओं में रामकथा अवधी भाषा, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
16. ज्ञानवती, अवधी की आधुनिक प्रबन्ध धारा, देशभारती प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2019
17. श्रीवास्तव मधुरलता, अवध के लोकगीत और उनका शिल्प सौन्दर्य, सुलभ प्रकाशन लखनऊ, संस्करण–2007

पत्र–पत्रिकाएँ :–

1. अवस्थी शरण सद्गुरु, दैनिक जागरण रायबरेली, जागरण प्रकाशन लिमिटेड मीराबाई रोड लखनऊ, संस्करण – 14 जून 2020
2. सिंह शिवनायक, इन्दु वार्षिक पत्रिका, इन्दिरा गाँधी राजकीय महिला महाविद्यालय रायबरेली, संस्करण–2010 / 11
3. https//sahityavimrsh.com
4. hi.m.wikipedia.org
5. hindi.webdunia.com
6. m.bharatdiscovery
7. www.hindisahitya.com
8. hi.quora.com

साक्षात्कार के अंश

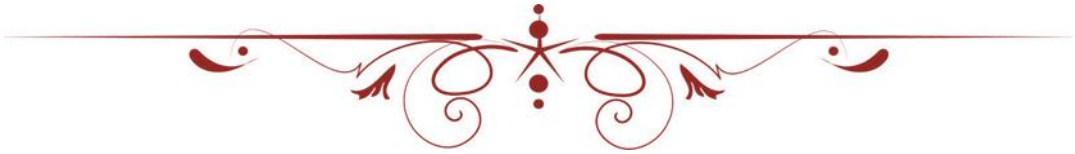

शोधार्थिनी द्वारा आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' से लिए गये साक्षात्कार के अंश

अभिलाषा :– सर! आप अपने जन्म, घर–परिवार, शिक्षा–दीक्षा एवं प्रेरकों के बारे में विस्तार से बताएँ।

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– अभिलाषा जी! मेरा जन्म ननिहाल–ग्राम–मानपुर, ब्लाक–खीरों, जिला–रायबरेली (उ.प्र.) में 12.09.1954 को नाना स्व. महावीर शर्मा के घर हुआ था। मेरी माता जी का नाम श्रीमती चन्द्रकला शमा है जो वर्तमान समय में लगभग 95 वर्ष की हैं। मेरा पैतृक गाँव बसंत खेड़ा मजरे रामपुर है जो ब्लाक सुमेरपुर, जिला उन्नाव के अंतर्गत है। मेरे पिता जी का नाम स्व. संत प्रसाद शर्मा है। वह केवल साक्षर भर थे।

मेरे बाबा जी स्व. देवी दास व्यवहार कुशल, स्वाभिमानी, सम्मानित ढोलवादक एवं काष्ठकला में अत्यंत निष्णात थे। शिक्षा के नाम पर वह शून्य थे परन्तु समझदारी काबिले तारीफ थी। गौरांग, लम्बे–चौड़े शरीर के थे वह। जब मैं कक्षा तीन में पढ़ रहा था, तब एक दिन उन्होंने मुझसे कहा था, "बच्चा! खूब मन लगा कर पढ़ो, उच्च शिक्षा प्राप्त कर कोई अच्छा कार्य करना। इस काष्ठकार्य को करने में बड़ी मेहनत लगती है। शरीर कमजोर हो जाने पर यह कार्य नहीं किया जा सकता।

मैं चार भाई हूँ। उनमें मैं सबसे बड़ा हूँ। मैने प्राथमिक शिक्षा प्राइमरी पाठशाला बजौरा, ब्लाक–सुमेरपुर, जिला–उन्नाव से, पूर्व माध्यमिक शिक्षा जूनियर हाईस्कूल सुमेरपुर, जिला–उन्नाव (अब इण्टर कालेज) से प्राप्त की थी। माध्यमिक शिक्षा (कक्षा नौ से बारह तक) जवाहर विद्यालय इण्टर कालेज सेमरी, जिला–रायबरेली से (अब राजकीय इण्टर कालेज) प्राप्त की थी। बी.टी.सी. का प्रशिक्षण राजकीय दीक्षा विद्यालय खजुहा, जिला–फतेहपुर से प्राप्त किया था। रायबरेली के परिषदीय विद्यालयों में पढ़ाते समय व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में कानपुर विश्वविद्यालय से बी.ए. तथा एम.ए. किया। सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से आचार्य (साहित्य) किया। विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ भागलपुर (बिहार) से मुझे विद्यावाचस्पति (मानद उपाधि) भी मिली।

मेरी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती भानमती शर्मा है। मेरे तीन पुत्र मुकेश, अवधेश, माधवेश और एक पुत्री उषा शर्मा है। बहुएँ क्रमशः रीता शर्मा, सुरेखा शर्मा एवं दीपिका शर्मा हैं। सभी उच्च शिक्षित हैं। बड़े पुत्र के एक पुत्री प्रज्ञा शर्मा, एक पुत्र प्रभाष शर्मा है। मँझले पुत्र के दो

पुत्र–प्रतीक शर्मा व शुभ शर्मा हैं। छोटे पुत्र के एक बेटा क्षितिज शर्मा है। पोती–पोते सभी अध्ययनरत हैं।

अभिलाषा :– सर! आप बैसवारा क्षेत्र में पैदा हुए। आप यहाँ की लोक संस्कृति, रीति–रिवाज और रहन–सहन के बारे मे बताएँ।

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– अभिलाषा जी! भारत में अंग्रेजों का शासन स्थापित होने से पहले बैसवारा क्षेत्र अवध का दक्षिणी भाग था। अंग्रेजों ने इसे चार जिलों उन्नाव, रायबरेली, बाराबंकी और लखनऊ में विभक्त कर दिया था। इन्ही चार जिलों के केन्द्र भाग में मेरा जन्म हुआ। यहाँ की लोकभाषा को बैसवारी कहा जाता है जो अवधी का एक भेद है।

यहाँ पर मेरे बचपन बिताते समय लोगों की शिक्षा का स्तर बहुत उच्च नहीं था। दो–चार गाँवों में एक–दो व्यक्ति उच्च शिक्षित होते थे। ज्यादातर साक्षर ही मिलते थे। कुछ लोग तो बिल्कुल निरक्षर ही होते थे जो ग्रामीण भाषा ही बोलते थे। निरक्षर लोग चिट्ठी–पत्री अथवा कोई लिखा–पढ़ी का काम दूसरे के पास जाकर करवाते थे। गाँवों के पुरुष धोती–कुर्ता, कमीज–धोती अथवा पाजामा–कुर्ता पहनते थे। निर्धन लोग तो पंचा (लगभग आधी धोती) पहनते थे। महिलाएँ धोती–ब्लाउज, साया पहनती थीं। कुछ धनी परिवारों में कंठा, हार या जँजीर औरते पहनती थी। बहुएँ अपने घर में सारे काम करतीं तथा सास, अजिया सास की सेवा–पैर दबाना, तेल लगाना आदि के साथ घर के बड़े लोगों के कपड़े भी धोतीं थी। उनके पैर छूकर आशीर्वाद लेती थी। पुरुष वर्ग एक दूसरे से मिलने पर राम जोहार (राम राम कहना) करते थे। पुरोहिती करने वाले अथवा ब्राह्मणों से मिलने पर "पाँय लागी महराज" कहकर लोग मिलते थे। छोटी जाति के लोग ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय लोगों के सामने खाट पर बैठते नहीं थे। अगर कहीं बैठना ही पड़ा तो पैंताने की तरफ बैठते थे। अछूत कहे जाने वाले लोग दूर ही धरती पर बैठते थे। वे किसी के घर के बर्तन तक नहीं छू सकते थे। थोड़ी–थोड़ी बात पर उन्हें अपमानित होना पड़ता था।

अछूत कहे जाने वाले लोगों के यहाँ कोई भी पुरोहित कोई कर्मकांड (शादी–पूजन आदि) करवाने नहीं जाता था। वे स्वयं अपने ढँग से कर लेते थे। मध्यमवर्गीय व्यक्ति के यहाँ जाते भी थे तो अपने लिए वे स्वयं भोजन बनाते थे। इस प्रकार उस समय भेदभाव बहुत था।

विवाहित महिलाएँ करवा चौथ, हरितालिका, वट सावित्री व्रत रखतीं थी। होली के पर्व में छुआछूत का रोग भग जाता था। पुरुष लोग साथ–साथ गाते–बजाते थे। हर जाति में

विवाह के ढँग अलग होते थे। छोटी जातियों में ऐसे अवसरों पर जातीय–गीत गाये जाते थे। पर्व सम्बन्धी, कृषि संबंधी गीत गाये जाने की परम्परा थी। लोगों का रहन–सहन बहुत साधारण था।

अभिलाषा :– सर! आपके जन्म के समय सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश कैसा था?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– अभिलाषा जी! मेरे जन्म के समय समाज में ऊँच–नीच का भेदभाव बहुत था। देश आजाद तो हो गया था परन्तु सामंती व्यवस्था पहले जैसी बनी हुयी थी। तालुकेदार छोटी जातियों से बेगार करवाते थे। मजदूरी के नाम पर जो दे दिया वह सेवकों को लेना पड़ता था। वे रिरियाते रहते थे। वे न अच्छा खा पाते थे और न अच्छा पहन पाते थे। उन्हें आये दिन बात–बात पर धौस सुननी पड़ती थी। अछूत लोग किसी को छू नहीं सकते थे। उनके कुएँ अलग होते थे। उनको बड़े लोगों की बातें माननी ही पड़ती थी। वे शोषण का शिकार बने रहते थे।

धर्म के नाम पर समाज में राम–कृष्ण को भगवान मानकर पूजन–अर्चन किया जाता था। रामचरितमानस का अखंड पाठ करवाना, सत्यनारायण व्रत रखना और कथा सुनना आम बात थी परन्तु इन्हें अछूत नहीं कर सकते थे। प्रसाद भी इन लोगों को दूर से दिया जाता था। गाँवों में नवरात्रों में पूजन–व्यवस्था चंदा लगाकर की जाती थी। ज्यादातर छोटे लोग पचास पैसे अथवा एक रुपया चदा देते थे। समाज में गुरू बनाने की परम्परा थी। छोटी जातियों के लोग ज्यादातर कबीरपंथी होते थे। वे निर्गुण की उपासना करते थे। चोरी–डकैतियाँ बहुत होती थीं। बाहुबल का बोलबाला था। कमजोरों के लिए न्याय मिलना बहुत कठिन था।

अभिलाषा :– सर! आप अवधी में कब से लिख रहे हैं और आपको लिखने, विशेष रूप से अवधी में लिखने की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुयी?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– मैं कक्षा चार–पाँच में पढ़ते समय से ही लिखने लगा था। उस समय लिखने की प्रेरणा भजन–कीर्तन गायकों से मिली। वे जवाबी म कीर्तन–भजन बनाकर गाते थे। देखा–देखी मैं टूटी–फूटी भाषा में लिखने लगा। इण्टरमीडिएट करने के बाद मैं रेगुलर नहीं पढ़ सका। लिखने पढ़ने का शौक था ही, इसलिए मैं किताबें खरीदकर पढ़ता था। कीर्तनकारों की देखादेखी मैंने भी कीर्तन की छोटी–छोटी पुस्तक–कीर्तन कुंज, कीर्तन पुंज, कीर्तन यूथ, कीर्तन बरूथ तथा कीर्तन अमृताकर भाग एक छपवायी और

बेंची। अध्यापक बनने के बाद रायबरेली के प्रसिद्ध कवि मधु खरे की प्रकाशित पुस्तक "ये मेरा बैसवारा" पढ़ने का सौभाग्य मिला। खरे जी ने पुस्तक में अपने प्राक्कथन में लिखा था कि बैसवारी में लिखने की परम आवश्यकता है। उसी से मैं प्रभावित हुआ। बैसवारी अवधी में लिखने लगा। जब मैं प्राथमिक विद्यालय वतिया, ब्लाक–सिंहपुर, जिला–रायबरेली (अब जिला अमेठी) में सेवारत था तब नरौली हैदरगढ़, जिला–बाराबंकी में अवध भारती समिति का गठन किया डॉ. राम बहादुर मिश्र ने। इस समिति का उद्देश्य लोकभाषा अवधी का प्रचार, प्रसार, संरक्षण एवं संवर्धन करना था। संयोगवश डॉ. राम बहादुर मिश्र जी से मेरी मुलाकात हुयी। मैं अवधी में लिखने लगा। इस तरह ये दो ही अवधी लेखन के मेरे प्रेरणास्रोत हैं।

अभिलाषा :– भूमंडलीकरण और उदारीकरण के दौर में आप अवधी को किस रूप में देखते हैं?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– भूमंडलीकरण और उदारीकरण के इस दौर में संसार की भाषाएँ, संस्कृतियाँ, रीति–रिवाज, रहन–सहन एक दूसरे से प्रभावित हो रहे हैं। ये अपने मूल स्थानों से उपेक्षा और बाहरी स्थानों के लिए नवीन होने के कारण वहाँ ग्राह्य हो रहे। हिन्दी खड़ी बोली का प्रचार–प्रसार इस समय सर्वाधिक है। इसका मानक रूप निर्धारित हो चुका है। वही लोग लिख–बोल रहे हैं फिर भी विभिन्न क्षेत्रों में कुछ अंतर दिखायी देता है। खड़ी बोली के प्रचलन के कारण अवधी का ह्रास कुछ अवश्य हुआ। ह्रास का कारण शिक्षा का अधिक प्रसार है। उच्च शिक्षित लोग खड़ी बोली एवं अंग्रेजी बोलने में गर्वानुभूति करते हैं। अवधी को जानते–समझते हुए भी उसके प्रति उदासीनता बरतते हैं। चिंतकों–विचारकों ने इसी बात का अनुभव कर अवधी को पुनर्स्थापित करने का कार्य प्रारम्भ किया। वर्तमान समय में अवधी का गद्य लेखन अनवरत विकास की ओर उन्मुख है। गद्य–पद्य दोनों रूपों में अवधी विस्तार ले रही है। हिन्दी प्रेमियों को अवधी का प्रचार पुनः करना चाहिए। प्रचार से ही व्यापकता में वृद्धि होती है। इसमें मनीषी लोग संलग्न हैं। मुझे विश्वास है कि अवधी विकास के नये आयामों को स्पर्श करेगी।

अभिलाषा :– जब खड़ी बोली हिन्दी के मानकीकरण की माँग उठ रही हो तब आप हिन्दी की उपबोलियों की सांदर्भिकता को कैसे सिद्ध करेंगे, विशेष रूप से अवधी के लिए?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– अभिलाषा जी! हिन्दी का मानकीकरण तो बहुत पहले ही हो चुका था। अब हर जगह लगभग एक ही तरह से हिन्दी लिखी–बोली जाती है।

मानकीकरण का शुभारम्भ बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया था जिसे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने पूर्णता प्रदान की थी। प्रायः देखा जाता है कि कुछ लोग आज भी मानकीकरण के नियम का पालन नहीं करते हैं। वे अशुद्ध प्रयोग करते हैं। इसका कारण अज्ञानता हो सकती है।

अवधी साहित्य में रामचरितमानस, पदमावत, हनुमान चालीसा विश्वप्रसिद्ध हैं। उन्हें बड़े आदरभाव से पढ़ा जाता है। इसी के साथ वतमान में अवधी गद्य कृतियों के प्रकाशन से लोगों में उत्साह बढ़ा है। मुझे लगता है कि अवधी की सांदभिर्कता बनी ही रहेगी।

अभिलाषा :– भोजपुरी अवधी से कहीं अधिक विस्तृत है और उसका साहित्य भी समृद्ध है। अपना कुछ विचार प्रकट करें?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– भोजपुरी अवधी से अधिक विकसित (समृद्ध) नहीं है। यह कुछ लोगों का भ्रम है। उन्हें अवधी की सम्यक समझ नहीं है। ऐसे लोग अवधी को ही भोजपुरी माना करते हैं। हिन्दी की सभी बोलियों में कुछ न कुछ साम्य है। भोजपुरी में बनी अनेक फिल्मों के कारण उसका समृद्ध होना मानना नितांत गलत है। अवधी का साहित्य अत्यंत समृद्ध है। इसकी तुलना में अन्य बोली का साहित्य कमतर ही है। अवधी में फिल्मों के निर्माण का कार्य प्रगति की ओर है। इस दिशा में भी वह अपना विशिष्ट स्थान बना लेगी।

अभिलाषा :– अभी तक अवधी संविधान की आठवी अनुसूची में अपना स्थान नहीं बना पायी है। इसके लिए साहित्यकारों को क्या करना चाहिए?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– संविधान की आठवीं अनुसूची में अवधी को स्थान दिलाने को अवधी मनीषी गलत मानते हैं। जो बोली उक्त सूची में सम्मिलित हो चुकी है वे हिन्दी को कमजोर कर रही है। बोलियाँ ही हिन्दी का सुदृढ़ आधार है। हिन्दी का मानक रूप बोलियों के बल पर ही बना है। हिन्दी और उनकी बोलियाँ एक–दूसरे की पूरक है। अवधी आदि सभी हिन्दी की बोलियाँ यदि आठवीं अनुसूची में सम्मिलित जो जायेंगी तो हिन्दी का सर्वनाश हो जायेगा। मेरा तो मानना है कि जो बोलियाँ अनुसूची में सम्मिलित हैं उन्हें भी निरस्त किया जाना चाहिए जिससे हिन्दी सशक्त बनी रहे।

अभिलाषा :– अवधी में पद्य साहित्य की अपेक्षा गद्य कम लिखा गया है। इस संबंध में आप क्या कहेंगे?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– अवधी में पहले पद्य लेखन अधिक हुआ। गद्य लेखन का प्रारम्भ मोहिनी चमारिन, बंशीधर शुक्ल और रमई काका ने किया। इधर पचीस–तीस वर्ष से अवधी का गद्य लेखन पर्याप्त मात्रा में हुआ। उपन्यास, कहानी, लघुकथा, यात्रा वृतांत, संस्मरण के ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। यह क्रम अनवरत जारी रहेगा जिससे अवधी का उत्कर्ष होता ही रहेगा।

अभिलाषा :– अवधी में विमर्शों (दलित, स्त्री, युवा) आदि की वर्णनात्मक स्थिति बहुत कमजोर है। इसका क्या कारण है?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– अवधी साहित्य में भी विमर्शों की वर्णनात्मक स्थिति सुधर रही है। इधर के प्रकाशित ग्रंथों को पढ़ने से इस विषय की जानकारी ली जा सकती है। समीक्षकों का दायित्व है कि वे इन ग्रंथों को पढ़कर सच्चे मन से यानी भेदभाव छोड़कर समीक्षा करें। भेदभाव करना अवधी के लिए अन्याय होगा। कुछ साहित्यकार ही इसमें बाधक हैं।

अभिलाषा :– मंचीय कविता के रूप में आप अवधी का मूल्यांकन कैसे करेंगे?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– मंचीय कविता का प्रभाव श्रोता पर शीघ्र पड़ता है। अवध क्षेत्र में जितने भी नगर हैं, उनके अधिकांश निवासी गाँव से ही आकर बसे हैं। वे आपस में अवधी बोलते भी हैं। गाँवों के लोग तो पूर्ण रूप से समझते ही हैं। मंचीय काव्य पाठ थोड़े ही समय में श्रोता को ज्ञान बढ़ाने, मनोरंजन कराने एवं चिंतन करने की प्रेरणा देता है। इसलिए बोलियों पर काव्य पाठ होना अत्यन्त हितकर है। इससे कम पढ़े–लिखे तथा उच्च शिक्षित दोनों को समान रूप से लाभ होता है।

अभिलाषा :– हिन्दी की बोलियों को समाप्त कर देना चाहिए क्योंकि इनको बोलने वाले सीमित होते जा रहे हैं और शब्द सम्पदा घटती जा रही है इस पर आपका क्या विचार है?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– किसी के कह देने भर से बोलियाँ समाप्त नहीं हो जायेंगी। बोलियाँ समाज की जड़ों से जुड़ी हैं। विभिन्न संस्कारों, पर्वों में लोकगीत गाने की परम्परा है जिनमें मानवीय मूल्यों को स्थापित करने के गुण विद्यमान हैं। उच्च शिक्षित लोगों की उदासीनता के कारण ही बोली को न बोलना शब्द सम्पदा के ह्रास का कारण है। हिन्दी–प्रेमियों को इस बात पर जोर देकर लोगों को लोकभाषा सीखने एवं बोलने को प्रोत्साहित करना चाहिए। शब्दों के क्षरण को रोकने के लिए शब्दकोश बनाए जाने की

आवश्यकता है। अवधी भाषी क्षेत्र काफी बड़ा है। सभी लोग अवधी को अपना कर उसे विकसित करने का उपक्रम करें।

अभिलाषा :– अवधी के आधुनिक साहित्यकार कौन–कौन हैं जो आपकी दृष्टि में अच्छा काम कर रहे हैं। आप अपने को इनमें किस प्रकार से निर्धारित करेंगे?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– वर्तमान समय में अवधी के अनेक साहित्यकार हैं जो अवधी को समृद्ध करने में संलग्न हैं। अवधी को समृद्ध करने के लिए दो रास्ते हैं पहला यह कि प्राचीन लोक साहित्य का संरक्षण किया जाए और दूसरा यह कि नए मौलिक ग्रंथों का प्रणयन गद्य–पद्य दोनों विधाओं में हो। प्रसन्नता है कि दोनों तरीकों से यह कार्य हो रहा है। अवधी साहित्यकारों में श्रीमती विद्या विंदु सिंह, राम बहादुर मिश्र, विनयदास, ओम प्रकाश जयंत, रश्मिशील, अशोक अज्ञानी, इंद्रेश भदौरिया, दिनेश उन्नावी, आद्या प्रसाद सिंह प्रदीप, ज्ञानवती दीक्षित का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिन्होने सृजन किया है तथा लोक साहित्य का संकलन भी। और भी अनेक साहित्यकार हैं जो अवधी में लेखन कार्य कर रहे हैं। उनका प्रकाशन होने पर स्थिति और अधिक स्पष्ट होगी। रही बात अपने को निर्धारित करने की तो यह विषय मैं पाठकों एवं श्रोताओं पर छोड़ता हूँ।

अभिलाषा :– अंग्रेजी के युग में हिन्दी के भविष्य को लेकर आपकी क्या राय है?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– भारत में हिन्दी बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक है। अंग्रेजी तो अधिक पढ़े लोग ही बोलते हैं। प्रायः देखा जाता है कि जो पूर्णरूप से अंग्रेजी नहीं बोल सकते वे बीच–बीच में अंग्रेजी के शब्द बोलते रहते हैं। उन्हें अंग्रेजी का पूर्ण ज्ञाता नहीं कहा जा सकता। ऐसे लोग औरों का भी भला नहीं कर सकते। हिन्दी हमारी जड़ों से जुड़ी भाषा है। इसे सम्यक रूप से विकसित करने के लिए हमें संस्कृत भी पढ़ना होगा तभी इसे विशुद्ध रखा जा सकता है। हिन्दी भारत ही नहीं, विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में पढ़ायी जाती है। पढ़ने वाले भविष्य में उस पर काम करेंगे। हिन्दी का विकास होगा ऐसी मुझे आशा है।

अभिलाषा :– अवधी को लेकर आपकी क्या योजना है?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– मैं अवधी और खड़ी बोली हिन्दी को एक समान ही समझता हूँ क्योंकि दोनों एक–दूसरे की पूरक हैं। मैं दोनों में निश्चित रूप से लिखता हूँ। मेरी

अब तक प्रकाशित 26 पुस्तकों में बारह अवधी में तथा चौदह खड़ी में हैं। मैं भविष्य में भी इसी अनुपात में लिखते रहने की सोचता हूँ।

अभिलाषा :– अवधी के प्रचार–प्रसार के लिए क्या उपाय किए जाने चाहिए?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– अवधी के प्रचार–प्रसार के लिए आपस में बातें करना, रेडियो, दूरदर्शन, सिनेमा में फिल्मों का निर्माण, कक्षा–शिक्षण में अवधी का प्रयोग किया जाना चाहिए। साथ ही विश्वविद्यालय स्तर तक इसे पढ़ाने का कार्य किया जाये।

अभिलाषा :– लेखकों, कवियों का रुझान अवधी की तरफ बहुत कम है। इसके लिए किसे दोषी मानते हैं?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– लोगों की धारणा बन चुकी है कि अवधी गाँव के लोगों की गँवारू भाषा है। उसे बोलने पर लोग मुझे ग्रामीण स्तर का समझेंगे। ऐसी सोच सर्वथा अनुचित है। ऐसे ही लोग इसके लिए दोषी हैं।

अभिलाषा :– साहित्यकारों में गुटबंदी और खेमेबाजी है। क्या अवधी लेखकों में भी ऐसा है। खेमेबाजी का भाषा और बोली पर क्या प्रभाव पड़ता ह?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– आज समाज में अनेक प्रकार के भेद–भाव संव्याप्त हैं। उन्हीं भेदभावों के कारण साहित्य क्षेत्र में भी गुटबंदी है जो साहित्यिक विकास में घातक है। अवधी भी इससे अछूती नही हैं।

अभिलाषा :– समकालीनता और विधा की दृष्टि से अवधी का आप किस प्रकार मूल्यांकन करेंगे?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– हिन्दी की तरह अवधी में भी हर विधा में सृजन हो रहा है। हर कालखंड में जैसी सामाजिक व्यवस्था होती है, उसी के अनुरूप साहित्य सृजन होता है। इसीलिए साहित्य समाज का दर्पण कहा गया है। आज समाज सामान्य, पिछड़ा, अनुसूचित एवं अल्प संख्यक आदि वर्गों में विभाजित है। सभी वर्गों के रचनाकार अपने संवर्ग का हित सोचते हैं और उसी के अनुरूप लिखते हैं। विचारों में विरोधाभास बना रहता है जो रचनाओं में दिखता है। मानवीय मूल्यों के संवंर्धन के लिए सकीर्ण भावना को त्यागना होगा तभी सत्साहित्य का सृजन संभव होगा। बुरे को बुरा और अच्छे को अच्छा कहने का साहस जुटाना होगा। साथ ही सभी विधाओं में सृजन करना होगा। अच्छे लोग इस दिशा में अग्रसर हैं।

अभिलाषा :– अवधी के पाठकों के लिए आपका का क्या संदेश है?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– अवधी हिन्दी की प्रमुख बोली है। इसमें लिखे साहित्य को भी सभी हिन्दी प्रेमियों को पढ़ना चाहिए। यदि पाठकों की संख्या में वृद्धि होगी तो लेखकों का भी मनोबल बढ़ेगा। वे लेखन में और अधिक तेजी लाएँगे। अवधी साहित्यकोष समृद्ध होगा।

अभिलाषा :– सर, आप तो अवधी के रचनाकार हैं फिर आपको हाइकु लिखने की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई ?

आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' :– जापानी भाषा के काव्य छन्द हाइकु को हिन्दी साहित्यकारों ने पसन्द किया और हिन्दी में हाइकु लिखने लग। इसी क्रम में मैंने भी अवधी में हाइकु लेखन शुरू किया, परिणामस्वरूप अवधी का प्रथम हाइकु काव्य संग्रह 'नीकि दिन अइहैं' प्रकाशित हुआ।